महाशक्तिशाली सिद्ध
शाबर मंत्र
सैकड़ों अचूक एवं
सिद्ध शाबर मंत्रों का
अनमोल संग्रह

महाशक्तिशाली

सिद्ध शाबर मंत्र

भारतवर्ष में अनेक चमत्कारी विद्यायें पाई जाती हैं। इन्हीं चमत्कारी विद्याओं में एक विद्या है—सिद्ध शाबर मंत्र। शाबर मंत्रों की भाषा अत्यन्त सरल होती है। शाबर मंत्र अपने आप में एक शक्ति हैं, एक ताकत हैं, जो शास्त्रीय मंत्रों की कमी को अत्यन्त सफलतापूर्वक दूर करती हैं।

सिद्ध शाबर मन्त्र कभी निष्फल नहीं जाते। इनके प्रयोग के लिये दीक्षा या गुरु की कोई आवश्यकता नहीं होती। आप विद्वान हों, तांत्रिक हों या साधारण व्यक्ति शाबर मन्त्र के प्रभाव सभी को मिलेंगे।

प्रस्तुत पुस्तक में सैकड़ों सिद्ध शाबर मंत्र दिये गये हैं, जिन्हें अपने 'इच्छित कार्य' हेतु प्रयोग कर आप अपनी समस्त मनोकामनायें पूर्ण कर सकते हैं।

महाशक्तिशाली

सिद्ध शाबर मंत्र

प्रस्तुति

एम. आई. राजस्वी

4537, दाईवाड़ा, नई सड़क, दिल्ली-110 006

प्रकाशकः

पवन पॉकेट बुक्स

4537, दाईवाड़ा, नई सड़क

दिल्ली-110 006

दूरभाष : 23918311

ई-मेल : gold_pub@lycos.com

मूल्यः

पचास रुपये (50.00)

मुद्रक :

शुभम ऑफसेट प्रिन्टर्स

मानसरोवर पार्क,

शाहदरा, दिल्ली-110032

अनुक्रमणिका

1

शाबर मंत्र और श्रीनवनाथ चरित

शाबर मंत्रों की रचना सर्वप्रथम 'साबरी' नामक ऋषि ने की थी; किंतु उनके द्वारा रचित शाबर मंत्र बहुत ही अल्प संख्या में थे। साथ ही वह किसी कारणवश इस तीव्र प्रभावकारी मंत्र-विद्या का प्रचार-प्रसार भी न कर पाए। उनके पश्चात् नवनाथों ने इस महान लोकोपकारी मंत्र-विद्या में जन-कल्याण की अपूर्व भावना का आभास किया, तब उन्होंने ही इस विद्या को जन-साधारण के बीच लोकप्रियता दिलाई। शाबर मंत्रों की अभूतपूर्व लोकप्रियता को देखते हुए बाद में इनके उद्‌भव का स्रोत नवनाथों को ही मान लिया गया।

नवनाथों में युगप्रवर्तक प्रथम नाथ श्री कविनारायण के अवतार अयोनिज भगवान मत्स्येंद्रनाथ (मछेंद्रनाथ) हैं। इनके बाद गोरखनाथ (गोरक्षनाथ), जलंधरनाथ, कणीफानाथ, चर्पटीनाथ, नागनाथ, भर्तृहरिनाथ, रेवणनाथ और गहिनीनाथ ने अपने तप तथा ज्ञान से नाथ सम्प्रदाय को समृद्ध किया।

नवनाथ वास्तव में नव-नारायण के अवतार थे। भगवान् विष्णु के आदेश पर कलियुग के प्रारम्भ में नव-नारायण ने ही नवनाथों के रूप में पृथ्वी पर अवतार लिया था। मत्स्येंद्रनाथ ने श्री कविनारायण के अवतार के रूप में, गोरखनाथ ने हरिनारायण के अवतार के रूप में, जलंधरनाथ ने अंतरिक्ष नारायण, कणीफानाथ ने प्रबुद्धनारायण, चर्पटीनाथ ने पिप्पलायन नारायण, नागनाथ ने अविर्होत्र नारायण, भर्तृहरिनाथ ने द्रुमिलनारायण, रेवणनाथ ने चमसनारायण तथा गहिनीनाथ करभजन नारायण के अवतार के रूप में पृथ्वी पर अवतरित हुए।

मत्स्येंद्रनाथ मत्स्य के उदर से, गोरखनाथ गोबर के ढेर से, जलंधरनाथ होमाग्निकुंड से, कणीफानाथ हाथी के कान से, भर्तृहरिनाथ भिक्षा-पात्र से, चर्पटीनाथ कुश के पौधे से, नागनाथ नागकन्या द्वारा दिए गए अंडे से, रेवणनाथ रेवा नदी के जल से और गहिनीनाथ मिट्टी के पुतले में गोरखनाथ द्वारा मृतसंजीवनी मंत्र का जाप करने से पृथ्वीलोक में अवतरित हुए।

नवनाथों के अलावा इनके शिष्यों ने भी नाथ सम्प्रदाय की परम्परा को आगे बढ़ाया। इनके शिष्यों में चौरंगीनाथ, गोपीचंद्रनाथ, धर्मनाथ, मीननाथ, ज्ञाननाथ

(संत ज्ञानेश्वर), माणिकनाथ, धुरंधरनाथ, अड़बंगनाथ, निवृत्तिनाथ और निरंजननाथ आदि ने इस लोक में काफी मान-सम्मान व ख्याति प्राप्त की।

नाथ सम्प्रदाय के संतों ने न केवल शाबर मंत्रों के द्वारा लोक का कल्याण किया, अपितु इस महान मंत्र विद्या को जन-जन तक फैलाकर इसका प्रचार-प्रसार भी किया। इन शाबर मंत्रों की भाषा अत्यंत सरल, सुबोध और जन-सामान्य द्वारा प्रयुक्त की जाने वाली थी। इसमें स्थानीय टूटे-फूटे शब्दों का बाहुल्य था। इस भाषा और शब्दावली को जन-साधारण बड़ी सरलता से ग्रहण कर लेता था। यही कारण था कि शाबर मंत्रों का प्रारम्भ होने के बाद धीरे-धीरे उत्तरोत्तर इनका विकास होता चला गया।

शाबर मंत्रों की सिद्धि में शास्त्रीय-पौराणिक मंत्रों की साधना-सिद्धि के समान जटिल और कर्मकांडी विशेष विधि-विधान नहीं है। ये सिद्ध शाबर मंत्र विनियोग, न्यास, हृदयन्यास, षडंगन्यासादि तथा कुल्लुका आदि से पूर्णरूपेण युक्त होते हैं।

शाबर मंत्र शास्त्रीय मंत्रों की भांति साधनागत दोषों त्रस्त, गर्वित, निर्जित, मत्त, कीलित आदि तथा अन्य दोषों दु:ख, उपेक्षा, खंडित, अवमानित, असंवृत, हीनवीर्य, कुंठित, क्लिष्ट, रुग्ण, आविल, स्वापंग, अपूर्णरूपता, अबधिप्राप्ति, अंगहीनता और अजय आदि से भी मुक्त होते हैं।

शाबर मंत्रों में मुख्यत: एक दोष अवश्य माना जाता है और वह है मंत्र की गोपनीयता। शाबर मंत्रों का साधक अपने सिद्ध मंत्र की गोपनीयता गुरु के अलावा किसी अन्य के सम्मुख स्वप्न-दशा में भी भंग नहीं करता। यदि शाबर मंत्र का साधक अपने द्वारा सिद्ध किए हुए मंत्र का स्वयं उपयोग न करना चाहे और वह उस मंत्र को किसी सत्पात्र को उपदेशित करना चाहे तो ऐसी स्थिति में वह ऐसा कर सकता है; किंतु यह स्थिति फिर भी गोपनीयता भंग करने की श्रेणी में नहीं आती। ऐसा करने के पश्चात् शाबर मंत्र के मूल साधक के लिए उक्त मंत्र का उपयोग पूर्ण रूप से समाप्त हो जाता है।

प्राय: शाबर मंत्रों को निर्धारित जप-तप के द्वारा सिद्ध करना पड़ता है; किन्तु कुछ शाबर मंत्र ऐसे भी होते हैं जिन्हें अलग से सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं पड़ती, वे स्वत: ही सिद्ध होते हैं। इस प्रकार के शाबर मंत्रों को केवल कंठस्थ करके 'भभूति' बनाकर देने अथवा 'झाड़ा' लगाने से पीड़ित व्यक्ति को लाभ मिल जाता है। यद्यपि ऐसे सिद्ध शाबर मंत्र मौलिक रूप से ही 'सिद्ध' होते हैं, तथापि उनका यदा-कदा जप करने से उनका स्फुरण बढ़ जाता है और वे और अधिक ऊर्जावान हो जाते हैं।

संसार की कोई भी साधना-सिद्धि बिना गुरु के मार्गदर्शन के द्वारा संभव नहीं है। गुरु ही हर प्रकार के भय, भ्रम और भटकाव को दूर कर सकने में समर्थ होता है। यह आवश्यक नहीं है कि शास्त्रों में गुरु की जो विशेषताएं बताई गई हैं, वे सभी शाबर-गुरु में हों। शाबर मंत्रों का सिद्ध गुरु ब्राह्मण, संन्यासी कर्मकांडों (पूजा-अनुष्ठान आदि) में निष्णात हो, यह भी आवश्यक नहीं है। शाबर सिद्ध गुरु निरक्षर भी हो सकता है; किंतु फिर भी उसमें गुरुत्व-भार वहन करने की दक्षता—क्षमता अवश्य होनी चाहिए।

साधना-सिद्धि के लिए साधक को गुरु के बाद सबसे अधिक आवश्यकता श्रद्धा और समर्पण भाव की होती है। बिना श्रद्धा के समर्पण का भाव उत्पन्न नहीं होता। श्रद्धा के द्वारा ही गुरु, शिष्य और मंत्र-देवता के मध्य तादात्म्य स्थापित होता है।

शाबर मंत्र सिद्धि में पवित्रता का ध्यान रखना भी आवश्यक है। पवित्रता के संदर्भ में तन की पवित्रता और मन की पवित्रता के साथ ही स्थान और वातावरण की पवित्रता का ध्यान रखना भी आवश्यक है। तन की पवित्रता के लिए स्नान और आचमन आदि किए जाते हैं।

मंत्र सिद्धि हेतु जाप के समय यदि साधक का शरीर अपवित्र होगा तो सिद्धि प्राप्त होने के स्थान पर हानि की प्रबल संभावना हो जाती है।

शाबर मंत्रों की सिद्धि के लिए किसी विशेष प्रकार के आसन का कोई निर्देश नहीं दिया गया है। शाबर साधना सुखासन में बैठकर भी सम्पन्न की जा सकती है। वैसे वीरासन प्रायः अधिक उपयुक्त रहता है। इस आसन में परी, बेताल और हनुमान आदि की मंत्र सिद्धि यथोचित ढंग से की जाती है।

शाबर मंत्रों की सिद्धि में जप का विशेष महत्त्व है। जप तीन प्रकार के होते हैं जिन्हें वाचिक, उपांसु और मानसिक जप के नाम से पुकारा जाता है। वाचिक जप में जपकर्त्ता के मुख से मंत्र का उच्चारण स्पष्ट रूप से इतनी ऊंची आवाज में किया जाता है जिसे स्पष्ट सुना जा सके। उपांसु जप में जपकर्त्ता के होंठ स्पष्ट हिलते हैं और मुख के अंदर जिह्वा क्रियाशील रहती है। मुख से फुसफुसाहट की ध्वनि निकलती है। मानसिक जप के दौरान जपकर्त्ता के मुख से किसी भी प्रकार की ध्वनि बाहर नहीं निकलती।

शाबर मंत्रों के जप में प्रायः 'उपांसु जप' का प्रयोग होता है। इन मंत्रों की साधना करते समय नियम और मुहूर्त्त आदि का विशेष महत्त्व नहीं है; किंतु शाबर मंत्र सिद्धि का सबसे उचित समय शारदीय और बासंती नवरात्र हैं। नवरात्रों के अलावा होली, दीपावली, दशहरा और चंद्रग्रहण तथा सूर्यग्रहण भी शाबर मंत्रों की सिद्धि के लिए उपयुक्त रहते हैं।

यद्यपि शाबर मंत्रों के जाप और सिद्धि हेतु किसी दिशा विशेष का कोई प्रावधान नहीं है, तथापि दिशा-ध्यान रखा जाए तो वह अधिक उपयुक्त कहा गया है। यह दिशा-ध्यान तंत्र शास्त्र के अनुरूप ही किया जाए तो अधिक उपयुक्त रहता है। तंत्रशास्त्र में विभिन्न सिद्धियां प्राप्त करने के लिए दिशा का प्रावधान निम्न प्रकार से किया गया है—

सिद्धियां	दिशा
❑ वशीकरण	पूर्व दिशा
❑ अभिचार कर्म	दक्षिण दिशा
❑ धन प्राप्ति प्रयोग	पश्चिम दिशा
❑ शांति, पुष्टि, आयुष्यप्रद एवं रक्षा आदि प्रयोग	उत्तर दिशा

विशेष रूप से शाबर मंत्र साधना काशी नगरी की ओर मुख करके की जाती है। एक मत के अनुसार आशुतोष भगवान् भोले शंकर ने काशी में मंत्रों को शक्ति प्रदान की थी।

❑❑

2

शाबर सिद्धि में सावधानियां

सिद्धि-साधना चाहे वह किसी भी प्रकार की क्यों न हो, उसमें अपेक्षित सफलता पाने के कुछ आवश्यक सावधानियों पर भी ध्यान देना पड़ता है, अन्यथा साधक को समय, श्रम और शक्ति का व्यर्थ ही ह्रास झेलना पड़ता है। सावधानियां दो प्रकार की होती हैं—साधनागत और लोकगत।

साधना आरम्भ करने से पूर्व साधक को चाहिए कि वह स्थिर मन और बुद्धि से यह संकल्प करे कि उसे कौन-सी साधना करनी है। प्राय: उत्साह और उत्तेजना की अधिकता में साधक अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए अनावश्यक मंत्र-साधना की ओर उन्मुख हो जाता है अथवा ऐसी तीव्र प्रभावशाली सिद्धि के लिए प्रयासरत हो उठता है जिसकी पूर्णता में वह पूरी तरह सफल नहीं हो सकता। ऐसी दशा में उसे विफलता तो मिलती ही है, साथ ही उसको शारीरिक एवं मानसिक हानि पहुंचने की भी प्रबल संभावना हो जाती है, अतएव किसी भी प्रकार की सिद्धि प्राप्ति से पूर्व उसकी गुण-विवेचना पर ध्यान देना अत्यंत आवश्यक है।

मंत्र-साधना के मध्य साधक विकलता से सिद्धि प्राप्त करने के लिए आतुर न हो। उसे पूरी तरह संयम, साहस और धैर्य के साथ वांछित फल प्राप्त होने तक साधना में तल्लीन रहना चाहिए। साधना करते समय ही नहीं, बाद में भी गोपनीयता का पूरा ध्यान रखना चाहिए।

साधना आरम्भ करने से पूर्व ही साधक को अपनी आत्म सुरक्षा के सुदृढ़ प्रबंध कर लेने चाहिए। इन सुदृढ़ प्रबंधों में आत्मरक्षा के मंत्र की स्थापना तथा 'शाबरी मंत्र' की सिद्धि महत्त्वपूर्ण है।

आत्मरक्षा का मंत्र—शाबरी साधना में चाहे उग्र मंत्र की साधना करनी हो या सौम्य मंत्र की, आत्मरक्षा के मंत्र के साधक को कम-से-कम सात बार या इक्कीस बार जप कर लेना चाहिए। आत्मरक्षा का यह मंत्र साधनागत विघ्न-बाधाओं का तो निवारण करता ही है, साथ ही अनेक प्रकार से साधक की रक्षा भी करता है।

आत्मरक्षा के मंत्र का जाप करने से पूर्व साधक को अपने चारों ओर आत्मरक्षा का एक यंत्र स्थापित कर लेना चाहिए। यंत्र का स्वरूप अगले पृष्ठ पर दिया गया है—
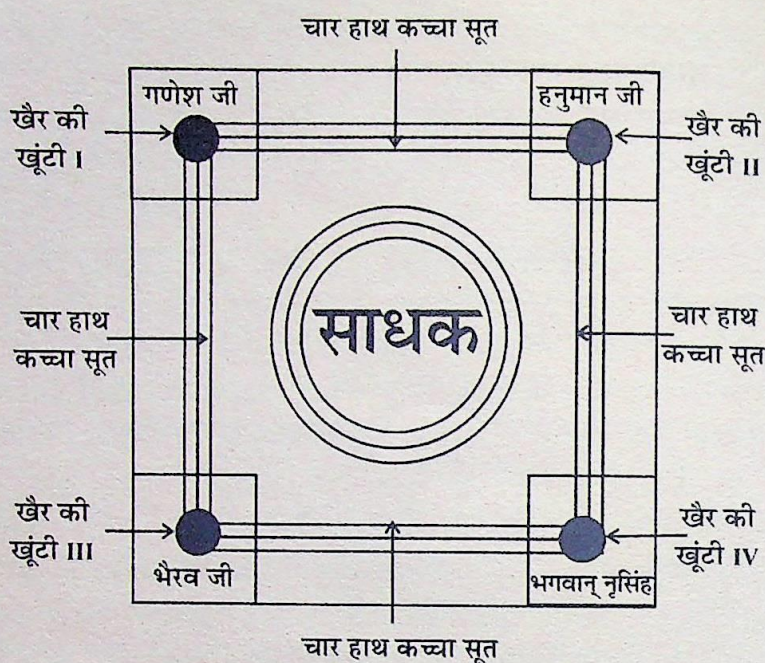
साधक को जहां पर भी मंत्र का जप करना हो, वहां पर सवा बालिश्त की खादिर (खैर) की चार खूंटियां चार-चार हाथ की दूरी पर एक वर्गाकार में गाड़ देनी चाहिए। पहली खूंटी से आखिरी खूंटी तक कच्चे सूत के धागे को तीन बार लपेट ले। फिर इस वर्ग के मध्य में बैठकर साधक को जप आरम्भ करना चाहिए।

बलिदान तथा अन्य पूजन-सामग्री आदि सभी आवश्यक वस्तुएं साधक को अपने पास ही रख लेनी चाहिएं।

इस यंत्र की प्रथम चौकी पर श्री गणेशजी, दूसरी पर श्री हनुमानजी, तीसरी पर श्री भैरवजी और चौथी चौकी पर भगवान् नृसिंह की भाव-स्थापना करनी चाहिए। प्रत्येक चौकी पर इन इष्टों की भाव स्थापना करते हुए आत्मरक्षा मंत्र का प्रत्येक बार सात-सात की संख्या में जप करना चाहिए।

आत्मरक्षा मंत्र

ओम नमो आदेश गुरु को!
अजरी बांधू बजरी बांधू बांधू दसई किवाड़,
आन पड़ी हनुमान की रक्षा राम की कार।
पहली चौकी गज गणपति की दूजी विकट वीर हनुमान,
तीजी चौकी भुमिया भैरव चौथी नरसिंह की आन।
जो इन्हई चौकी को लांघे,

तुरतहि धूल भसम हो जावे।
दुश्मन-बैरी जो कोई करे,
उलट वाही पे उल्टा पड़े।
मंत्र सांचा पिंड कांचा,
फुरो मंत्र गोरख वाचा।

इस मंत्र की अंतिम दो पंक्तियों 'मंत्र सांचा पिंड कांचा, फुरो मंत्र गोरख वाचा' के स्थान पर 'मेरी रक्षा गुरु गोरख करें, सत्यनाम आदेश गुरु को' के उच्चारण का भी काफी मात्रा में लाभ मिलता है। साधक अपनी सुविधा के अनुसार इन दोनों में से किसी एक का जप कर सकता है।

इस आत्मरक्षा मंत्र को नवरात्रों में प्रतिदिन इक्कीस अथवा इक्यावन बार अथवा एक माला साधक को जप करके सिद्ध कर लेना चाहिए। इस मंत्र का जप करते समय साधक को गणपति, हनुमान, भैरव और नृसिंह को सिंदूर भोगादि भी चढ़ाने चाहिएं। मंत्र सिद्धि के बाद (नवरात्र पूरे होने के बाद दसवीं को) बालक आदि को भोजन कराना चाहिए। इससे मंत्र जाग्रत हो जाता है।

यह मंत्र सिद्ध होने के बाद आत्मरक्षा का कार्य तो सम्पन्न करता ही है, साथ ही इससे किसी अभिचारग्रस्त व्यक्ति को भी झाड़ा आदि लगाया जा सकता है।

शाबरी मंत्र

शाबर मंत्र साधना का आरम्भ यदि किसी शुक्ल पक्ष के मंगलवार अथवा शुक्रवार से किया जाए तो अधिक फलप्रद होता है। साधना आरम्भ करने से पूर्व यह संकल्प करना चाहिए—'हे माता! मैं आज से शाबर मंत्र का जप शुरू करता हूं...मेरी आधि-व्याधि, दुःख-दारिद्रय से रक्षा करना और मुझे शीघ्र दर्शन देना।'

इस संकल्प के पश्चात 21 दिन का अनुष्ठान अवश्य करें और नित्य 21 माला का जप करें। इसके बाद पूर्वाभिमुख होकर नित्य एक माला का जप करते रहना चाहिए।

शाबर मंत्र साधना के अनुष्ठान में सफलता के लिए 'शाबरी यंत्र' को सिद्ध करना अति आवश्यक है। 'शाबरी यंत्र' का स्वरूप आगे दिया जा रहा है—

शाबरी यंत्र की सिद्धि के लिए अपने सामने लकड़ी की एक चौकी रखें। उस चौकी पर एक साफ-स्वच्छ पीला रेशमी वस्त्र बिछाएं। रेशमी वस्त्र पर तीन या पांच मुट्ठी चावल रखें। चावल के सामने सर्वसिद्धिदायक 'शाबर यंत्र' रखें। तत्पश्चात् यंत्र पर चंदन और रोली आदि लगाएं। यंत्र के सम्मुख दीप प्रज्वलित करके गुलाब, अगरबत्ती और धूपादि से सुगंध निवेदित करें। यंत्र पर पुष्प और

बिल्व पत्रादि अर्पित करें। तत्पश्चात् शाबर यंत्र के सम्मुख करबद्ध होकर निम्न मंत्र का जप करें—

'ॐ ह्रांक ह्रींक क्लींक ह्रोंक व्ययक हे:'
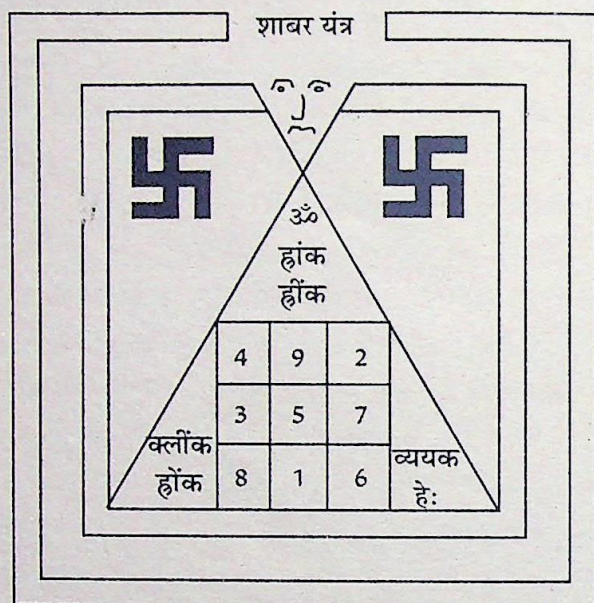
इस मंत्र का जप करने के बाद दो माला निम्नलिखित मंत्र की जपें—**'ॐ नमो शाबरी शक्ति! मम अनिष्ट निवारय मम सर्वकार्य सिद्धं सिद्धं कुरु कुरु स्वाहा।'**

इस प्रकार जप करने के बाद 'शाबरी यंत्र' को प्रणाम करके उसे चांदी के खोल में बंद करके अपने पास रखना चाहिए। सिद्ध शाबरी यंत्र जहां भी स्थापित होगा, वहां की सभी अला-बला और उपद्रव नष्ट हो जाते हैं। दुःख-दारिद्रय का नाश होता है और घर-परिवार में सुख-समृद्धि का वास होता है।

मंत्र साधना में आत्मरक्षा के लिए एक इस्लामी सम्मत मंत्र भी है, जो साधना की पूर्णतया के लिए कारगर सिद्ध होता है। यदि साधक पूर्ण आस्था और निष्ठा के साथ इस मंत्र का जप करता है तो यह उसके लिए सहायक की अच्छी भूमिका निभाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'यहि सार-सार जिन्न देव परी ज़बर कूं फार एक खाई दूसरी को फार अग्नि पसार गिर्द व गिर्द मलायम असवार दा हो दस्तर खे जिब्राइल वाया दस्तर खेमिकायल पीठ खेल रहे ऑफिस पेट रखे इज्राइल दस्त चप हसन दस्त रास्त हुसैन पेशवा मुहम्मद गिर्द व गिर्द अली लाइलाइ का कोट इल्लिल्लाह की खाई हज़रत अली की चौकी बैठी मुहम्मद रसूलिल्लाह की दुहाई।

इस मंत्र का जप करते हुए पानी की धार से अपने चारों ओर एक रेखा (कार) स्थापित कर लें। इस मंत्र का सात बार जप करते हुए इसी प्रकार सात बार अपने इर्द-गिर्द पानी की धार से कार स्थापित करनी चाहिए।

आत्मरक्षा के इस इस्लामी सम्मत मंत्र को नवरात्र, सूर्यग्रहण, चंद्र ग्रहण, दीपावली, होली आदि के अतिरिक्त मुसलमानों के पवित्र मास रमजान में भी सिद्ध किया जा सकता है। शाबर मंत्र विद्या में रुचि रखने वाले मुस्लिम साधकों को पवित्र रमजान के दिनों में ही इस मंत्र को जप करके सिद्ध कर लेना चाहिए।

मंत्र-जप करते समय यदि आपके पास कोई सहायक नहीं है तो इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि जपकाल में बीच में ही दीपक न बुझ जाए। दीपक का तैलीय द्रव्य यथोचित मात्रा में पहले ही रखना चाहिए। जपकाल में अपने आसन से उठते समय ध्यान रखना चाहिए कि आसन-त्याग मंत्र देवता से आज्ञा लेकर ही करें और यदि अत्यंत आवश्यक न हो तो आसन का त्याग न करें।

जपकाल में यदि साधक एकाएक अस्वस्थ हो जाए और उसे आसन पर बैठना दुष्कर लगने लगे तो वह मंत्र देवता से प्रार्थना करके आसन से उठ जाए। इसके बाद साधक को इस बात पर गंभीरतापूर्वक विचार करना चाहिए कि उसकी अस्वस्थता शारीरिक है अथवा साधना में हुई किसी प्रकार की त्रुटि का परिणाम है। इस संबंध में अपने गुरु अथवा किसी अन्य मर्मज्ञ से परामर्श लेकर उपयुक्त कदम उठाने चाहिएं।

जपकाल के दौरान साधक को यदि ऐसा लगे कि साधना-स्थल पर विघ्नकारी अनिष्ट शक्तियों का प्रवेश हो रहा है तो वह शांत मन से अभय होकर स्वयं उनके शमन-दमन का प्रयास करें। उचित तो यह होता है कि साधक अपनी साधना किसी योग्य सहायक अथवा गुरु की उपस्थिति में ही शुरू करें।

साधक की साधना से प्रसन्न होकर जब मंत्र-देवता प्रकट हो जाएं तो उन्हें श्रद्धा भाव से आसनादि पर प्रतिष्ठित करें और उनसे सविनय अपना मनोरथ पूर्ण करने की अभ्यर्थना करें। इस काल में साधक को सौम्य, शांत और प्रसन्न रहना चाहिए। उसे संयम और साहस से काम लेना चाहिए। ऐसे समय में किसी भी प्रकार की उत्तेजना अथवा भय साधक के लिए अत्यंत अनिष्टकारी सिद्ध हो सकता है।

कभी-कभी साधक को मंत्र देवता के स्वरूप में किसी अनिष्ट आत्मा के दर्शन हो जाते हैं। ऐसी दशा में साधक को सावधान रहना चाहिए। यदि वह अनिष्ट आत्मा कोई लालच आदि देकर साधक को साधना से विरत करने अथवा अन्य किसी प्रकार का अनैतिक-अनुचित कार्य कराने की बात कहे तो साधक को विनम्रता के साथ उसकी बात मानने से इनकार कर देना चाहिए। इसके अलावा स्वयं मंत्र देवता भी कभी परीक्षा के तौर पर साधक को किसी अनैतिक बात की ओर प्रवृत्त करने का प्रयास करते हैं, तब साधक को चाहिए कि मंत्र-देवता की

ऐसी बात भी अस्वीकृत करने में ही भलाई होती है। साधक को मनोवांछित फल प्राप्त करने तक एकाग्र होकर साधना में रत रहना चाहिए, तभी उसे मनोनुकूल सिद्धि प्राप्त होती है।

पिशाचिनी साधना, जिंद अथवा परी साधना आदि करते समय जब अंततः साधक को अपने अभीष्ट के दर्शन होते हैं तो उन्हें कदापि भी सदा-सदा के लिए अपने पास रहने के लिए आमंत्रित न करें। इस प्रकार की जीवात्माओं का स्वभाव यह होता है कि ये जिस स्थान पर रहती हैं, उसे प्रायः नष्ट-भ्रष्ट और तबाह कर डालती हैं। इस प्रकार की जीवात्माएं जनशून्य क्षेत्र में ही निवास करती हैं। यदि उन्हें आबाद स्थानों के पास रहने की आज्ञा दे दी जाए तो वे उन्हें भी तबाह कर डालती हैं, अतएव इस प्रकार के मंत्र-देवता के प्रकट होने पर साधक को अपनी कामना कुछ इस प्रकार प्रकट करनी चाहिए।

'हे मंत्र देवता! जब मैं आपका आह्वान करूं...आपका स्मरण करूं, आप तभी मेरे सम्मुख उपस्थित हों और मेरा कार्य सिद्ध करें। शेष समय आप अपने लोक में ही निवास करने की कृपा करें।'

जप पूर्ण होने के बाद पूजन सामग्री को कुंभ पात्र आदि में रखकर या तो उचित स्थान पर गाड़ देना चाहिए या फिर नदी आदि में विसर्जित कर देना चाहिए। जप के पश्चात् यदि मंत्र का हवन आवश्यक है तो उसे भी करना चाहिए। यदि साधक देवी-मंत्र को सिद्ध करता है तो उसे कन्या को भोजन कराना चाहिए और यदि मंत्र-देवता को सिद्ध करना है तो बटुक या ब्राह्मण को यथोचित दक्षिणा आदि देते हुए भोजन कराना चाहिए।

सिद्ध साधक को अपनी सुख-सुविधा को तिलांजलि देकर लोक के कल्याण के लिए सदा तत्पर रहना चाहिए और अपने कार्य के प्रतिफल के रूप में धन-धान्य प्राप्त करने की इच्छा नहीं करनी चाहिए। लोक-लालच के वशीभूत होकर जो साधक अपनी सुख-सुविधा के कारण लोकोपकार से विमुख हो जाते हैं अथवा अपनी सिद्धि का धन-सम्पदा या पुरस्कार के बदले में मोल-तोल करने का प्रयास करते हैं, वे अधोगामी होते हैं और धीरे-धीरे अपनी सिद्धियों को खो बैठते हैं।

तंत्र शास्त्र के अनुरूप ही शाबर विद्या के मंत्रों को भी छः भागों में विभाजित किया गया है। इन भागों में शांति-पुष्टि कर्म, वशीकरण, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन और मारण आदि कर्म प्रमुख हैं। इसी वर्गीकरण के अनुसार आगे के अध्यायों में एक-एक कर्म का विस्तृत वर्णन करने का प्रयास किया गया है।

□□

3

शांति-पुष्टि कर्म और शाबर मंत्र

शांति-पुष्टि कर्म के इस अध्याय में गृहशांति के प्रयोग दिये गये हैं। यह गृहशांति नवग्रहों वाली शांति से भिन्न है। इसमें गृह के अंदर विभिन्न प्रकार के दैवीय कारणों से उत्पन्न होने वाली आपत्तियों-विपत्तियों के लिए शाबर मंत्रों को दिया गया है।

गृह के शांत-सुखद वातावरण को कलुषित और अशांत करने के बहुत से कारण होते हैं। उनमें से चार कारणों को प्रमुखता से देखा जा सकता है। गृह अशांति के चार प्रमुख कारण भौतिक, दैविक, अभिचारिक और पितृ-प्रेत दोष हैं।

व्यक्ति के दुराग्रह, स्वभाव की कटुता और हठधर्मिता से उत्पन्न विवादास्पद परिस्थितियों से होने वाली अशांति तथा अनावश्यक रूप से वाद-विवाद के प्रकरण खड़े कर देने में गृह की शांति भंग हो जाती है। जब व्यक्ति स्वयं को दूसरों की अपेक्षा उच्च, श्रेष्ठ और ज्ञानी मानकर दूसरों को उपेक्षा और लघुता की दृष्टि से देखता है, तब भी जीवन के किसी-न-किसी मोड़ पर व्यक्ति के अहम् को ठेस लगती है और यही ठेस अंतत: उसकी और फिर सम्पूर्ण गृह-परिवार की अशांति में बदल जाती है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि गृह अशांति के भौतिक कारण व्यक्ति द्वारा स्वयं ही उत्पन्न किए हुए होते हैं।

गृह-शांति को प्रभावित करने में इस जन्म और पूर्व जन्म के पाप-कर्म अधिक प्रभावी होते हैं और इन्हीं को गृह-अशांति के लिए दैविक कारण माना जाता है। काफी लग्न, श्रम और योग्यता के बाद भी किसी व्यक्ति को उसके क्षेत्र में निरंतर असफलता मिलते जाने को दैविक कारण के अलावा और भला कहा भी क्या जा सकता है। दुरैव की दिशा में कभी-कभी आनुष्ठानिक व्यवस्थाएं भी निष्फल ही सिद्ध होती हैं; किंतु ऐसी विषम परिस्थिति में शाबर सिद्धि बड़ी प्रभावी होती है।

अभिचारिक कर्मों द्वारा जब किसी के गृह की शांति को अशांति में बदल दिया जाता है तो उस व्यक्ति और उसके परिवार की स्थिति विक्षिप्तों के समान हो जाती है। यह स्थिति तब तक बनी रहती है, जब तक कि अभिचार कर्मों के प्रतिकार स्वरूप कुछ उपाय न किए जाएं। ऐसे उपायों का शाबर मंत्रों में महत्वपूर्ण स्थान है।

पितृात्माएं सबसे अधिक अपना प्रभाव संतति और व्यवसाय पर डालती हैं। पितृात्माओं के रुष्ट हो जाने पर बिना कोई कारण सामने आए आय के स्रोत अवरुद्ध होते प्रतीत होने लगते हैं और बने-बनाए कार्य भी बिगड़ते दिखाई देते हैं। व्यक्ति करना और कहना तो कुछ चाहता है, जबकि स्वत: होता कुछ और कहा कुछ और ही जाता है। ऐसे व्यक्ति की रातों की नींद और दिन का चैन उड़ जाता है।

पितृात्माओं के समान ही प्रेत भी वायवीय प्राणी होते हैं। उनके पास भौतिक देह नहीं होती। यही कारण है कि वे किसी भी प्रकार की कामना और वासना आदि से वंचित होते हैं। जब उन्हें अपनी अतृप्त कामना या वासना की पूर्ति करनी होती है तो वे किसी माध्यम (स्त्री-पुरुष, बालक आदि) के द्वारा ऐसा करते हैं।

प्रेतों में परकाया प्रवेश की सामर्थ्य होती है। वे प्राय: इस प्रकार के लोगों को अपना माध्यम बनाते हैं, जो दुराचारी, अपवित्र, अभक्षी और दुष्ट प्रकृति के हों। प्रेत इस प्रकार के स्त्री-पुरुषों को भी अपना शिकार बना लेते हैं, जिनसे कभी उनकी शत्रुता रही हो अथवा जिनके कारण उन्हें मृत्यु का ग्रास बनना पड़ा हो।

किसी भी व्यक्ति की प्रेतग्रस्त स्थिति दो प्रकार की होती है। पहली स्थिति में प्रेतग्रस्त होने पर व्यक्ति प्रेत के आवेश से कांपने लगता है और उसका स्वर-भंग होकर बदल जाता है। उस व्यक्ति की आंखें लाल होने लगती हैं और वह अपने सामान्य बल-सामर्थ्य की अपेक्षा कई गुना अधिक शक्तिशाली प्रतीत होने लगता है। प्रेत आवेशित व्यक्ति यदि कुछ खाने-पीने की वस्तुओं को ग्रहण करता है तो वह वास्तव में उस व्यक्ति द्वारा नहीं, बल्कि उस प्रेत द्वारा ग्रहण की जाती हैं।

दूसरी स्थिति में प्रेतग्रस्त होने पर व्यक्ति के ऊपर प्रेत का आवेश स्पष्ट रूप दृष्टिगोचर नहीं होता, बल्कि ऐसा व्यक्ति कुछ विचित्र प्रकार के कार्य करने लगता है। कभी-कभी प्रेत-पीड़ा में व्यक्ति पर न तो किसी प्रकार का आवेश ही दृष्टिगत होता है और न ही उसके कार्यों में किसी प्रकार की विचित्रता प्रकट होती है। प्रेतग्रस्त दशा की इस स्थिति का आभास एकाएक ही उस व्यक्ति अथवा उसके परिवार पर आने वाले अकल्पित संकटों और परिस्थितियों से होता है।

प्राय: प्रेतात्माएं चार प्रमुख कारणों से व्यक्ति की ओर आकृष्ट होती हैं। इन कारणों में पहला कारण तो यह है कि स्वयं प्रेत अपनी वासनापूर्ति के कारण स्त्री-पुरुष की ओर आकर्षित होते हैं। दूसरा कारण किसी व्यक्ति द्वारा प्रेत के जीवनकाल से जुड़े प्रतिशोध को माना जाता है। तीसरा कारण व्यक्ति का अपवित्र वातावरण में रहना अथवा अपवित्रता को ग्रहण करना है। प्राय: प्रेतात्माएं अपवित्रता को पसंद करती हैं; अत: वे स्वभावत: इस प्रकार के व्यक्ति को अपना शिकार बना लेती हैं। चौथा कारण किसी ओझा-तांत्रिक के द्वारा प्रेतात्मा को आहूत करके किसी व्यक्ति विशेष को शिकार बनाने के लिए प्रेरित करना होता है।

इस अध्याय में विभिन्न प्रकार के शांति-पुष्टि कर्म हेतु कुछ विशेष शाबर मंत्रों को प्रस्तुत किया गया है। इन मंत्रों की नियमानुसार सिद्धि कर लेने पर ये अपना यथोचित प्रभाव प्रकट करने लगते हैं।

गृह शांति हेतु विशिष्ट शाबर मंत्र

ओम नमो आदेश गुरु को!
घर बांधू घर-कोने बांधू और बांधू सब द्वारा,
जगह-जमीन को संकट बांधू बांधू मैं चौबारा।
फिर बांधू मैली मुशाण को और कीलूं पिछवाड़ा,
आगे-पीछे डाकन कीलूं आंगन और पनाड़ा।
कोप करत कुलदेव्री कीलूं पितरों का पतराड़ा।
कीलूं भूत भवन की भंगन,
कीलूं कील कील नरसिंग।
जय बोलूं ओम नमो नरसिंहा भगवान् करो सहाई,
या घर को रोग-शोक, दुःख-दलिद्दर, भूत-परेत,
शाकिनी-डाकिनी, मैली मशाण नजर-टोना,
न भगाओ-तो लाख-लाख आन खाओ।
मेरी भगति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र सांचा।
ईश्वर उवाचा ओम नमो गुरु को।

यह विशिष्ट शाबर मंत्र होलिका दहन की रात्रि में ही सिद्ध किया जाता है। इस रात्रि में एक एकांत कमरे में गो-घृत का दीप प्रज्वलित करके एक चौकी पर रखा जाए। उस चौकी पर नया लाल अथवा गुलाबी रंग का रेशमी कपड़ा बिछा दिया जाए। चौकी के बीचों-बीच पुओं का ढेर स्थापित करके उसमें ईश्वरीय रूप-भाव की आस्था करें। फिर उसका हल्दी, गुड़ और धूपादि से पूजन करें। तत्पश्चात् उपरोक्त मंत्र की एक माला का जप करके मंत्र को सिद्ध कर लें और पुओं के ढेर को किसी तालाब अथवा नदी में विसर्जित कर दें।

जब गृह शांति के लिए इस मंत्र की आवश्यकता हो तो रात्रिकाल में नागफनी को कील लें। बाधा-पीड़ित गृह के किसी साफ-स्वच्छ कमरे में एक नए गुलाबी रंग के कपड़े को काष्ठ की एक चौकी पर बिछा दें। चौकी पर सात अन्न की ढेरियां और चौकी के चारों कोनों पर सात-सात पूड़ी रख दें। प्रत्येक पूड़ी के ढेर पर हलवे की कुछ मात्रा रखें। चौकी पर पंचमेवा, फूल और प्रसाद भी रखें। चौकी के नीचे गेहूं या चावल के छोटे-से ढेर पर एक दीपक जलाकर रखें। धूप-अगरबत्ती से वातावरण को सुगंधित बनाते हुए नौ कीलें तथा नौ नींबुओं पर इक्यावन बार सिद्ध किए गए मंत्र का जप करें। तत्पश्चात् नौ कीलों को नौ नींबुओं में गाढ़ दें।

इन कीलित नींबुओं में से चार नींबुओं को गृह के चारों कोनों में गाड़ दें। एक कीलित नींबू गृह के प्रवेश द्वार पर, एक जल रखने के स्थान पर, एक गृह के आगे, एक पीछे और एक नींबू पतनाले के नीचे गाड़ देना चाहिए। इन कीलित नींबुओं को गाढ़ते समय बराबर मंत्र जाप करते रहना चाहिए।

यह सम्पूर्ण उपाय करने के उपरांत चौकी तथा चौकी के नीचे रखे सभी उन पदार्थों को, जो इस उपाय में प्रयुक्त किए गए थे, उन्हें किसी एकांत स्थान पर रख आएं। उपरोक्त प्रक्रिया करने से गृह बाधा से मुक्ति प्राप्त हो जाती है। यदि एक बार के प्रयोग से सफलता न मिले तो इसे एक बार पुन: करें।

यह प्रयोग शुक्ल पक्ष की अष्टमी अथवा चतुर्दशी को करने पर विशेष लाभ मिलता है। इस प्रयोग के अगले दिन गृह स्वामी प्रात: यथाशक्ति ब्राह्मण को भोजन, गाय को चारा-पानी तथा दान-पुण्य करें।

सुख-शांति हेतु मंत्र

इस मंत्र का जप किसी भी शुक्रवार को रात्रि में करना चाहिए। साधक को पीली अभिमंत्रित माला से ही इस मंत्र का जप करना चाहिए और साधक पीले आसन पर बैठे तथा पीले ही वस्त्र धारण करे। इस रात्रि में जपकर्ता यथासंभव अधिक-से-अधिक जितना जप करे, उतना ही फलदायी है।

मंत्र इस प्रकार है—

बलवान बलवते बाबा हनुमान,
वीर हनुमान वीर हनुमान।
आन करो यह कारज मोरो।
आन हरो सब पीरा मोरो।
आन हरो तुम इंद्र का कोठा,
आन धरो तुम ब्रज का कोठा।
दुहाई मछेंद्रनाथ की,
दुहाई गोरखनाथ की!

उपद्रव निवारण हेतु मंत्र

यह मंत्र गृह में अनायास होने वाले उपद्रवों की शांति के लिए बड़ा ही प्रभावकारी है। गृह में होने वाले पितृ-प्रेत अथवा किसी भी अन्य प्रकार के उपद्रव, भय, कलह और अकल्पित घटने वाली घटनाओं के शमन हेतु अचूक अस्त्र है।

इस मंत्र का जप मृगचर्म पर बैठकर किया जाता है। जप करते समय खीर की 108 आहुतियां दी जाती हैं और प्रत्येक आहुति देते समय इस मंत्र का जप किया जाता है। इस प्रयोग से गृह के सभी उपद्रवों से शीघ्र ही मुक्ति मिल जाती है।

मंत्र इस प्रकार है—

ओम नमो आदेश गुरु को!
धरती में बैठ्या लोहे का पिंड,
राख लगाता गुरु गोरखनाथ।
आवन्ता जावन्ता धावन्ता हांक देत धार-धार मार-मार।
शब्द सांचा फुरो वाचा।

प्रेत बाधा के निराकरण हेतु मंत्र

यह मंत्र महानिशा में एकाधिक माला का विधिवत् जप करने से सिद्ध हो जाता है। सिद्ध मंत्र का जप करते हुए चाकू अथवा किसी धारदार हथियार से प्रेतग्रस्त व्यक्ति को झाड़ा जाता है। मंत्र जप करते हुए झाड़ा देते समय चाकू से जमीन पर सात रेखाएं खींची जाती हैं। पहले तीन रेखाएं आड़ी फिर उन्हें काटती हुई तीन रेखाएं लम्बवत् खींची जाती हैं। इसके बाद अंत में सातवीं रेखा सबसे नीचे, पहली रेखाओं के समानांतर खींचकर झाड़ दी जाती हैं।

झाड़न रेखाएं जमीन पर इस प्रकार खींची जाती हैं।

6. 5. 4.

प्रथम रेखा 1.

2.

3.
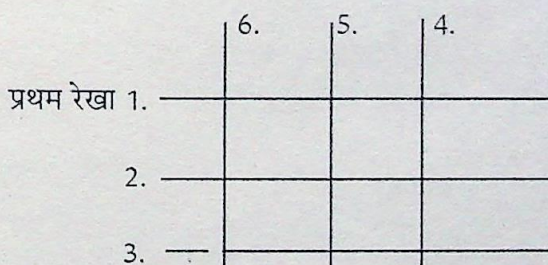
अंतिम रेखा 7.

प्रेतग्रस्त व्यक्ति को झाड़ने के बाद उसके बैठने के स्थान से उसे उठाकर एक कदम पीछे हटाकर बैठा दें। मंत्र इस प्रकार है—

'ओम नमो आदेश गुरु को!
डाकिनी-सीहारी किसने मारी,
जती हनुमान ने मारी।
कहां जाए दुबकी किन देखी,
जती हनुमान ने देखी।
सातवें पाताल गई, सातवें पाताल से कौन पकड़ लाया?
जती हनुमान पकड़ लाया।
एक ताल दे एक कोठा तोड़ा,

दो ताल दे दो कोठा तोड़ा।
तीन ताल दे तीसरा कोठा तोड़ा,
चाल ताल दे चौथा कोठा तोड़ा।
पांच ताल दे पांचवां कोठा तोड़ा,
छः ताल दे छठा कोठा तोड़ा।
सात ताल दे सातवां कोठा खोलकर देखे तो कौन खड़ी है?
डाकिनी-सीहारी भूत-प्रेत चले,
जती हनुमान से रे झाड़ सूं चले।
ओम नमो आदेश गुरु को!
गुरु की शक्ति मेरी भक्ति।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।'

इस मंत्र को नवरात्रों में भोजपत्र पर लिखकर ताबीज के रूप में भी धारण किया जा सकता है। यह ताबीज प्रेतग्रस्त व्यक्ति को बांधने से पहले हनुमानजी पर प्रसाद, नारियल आदि समर्पित करके ताबीज पर धूप आदि कर लेनी चाहिए।

भूत-प्रेत बाधा निवारण मंत्र-1

भूत-प्रेत बाधा से ग्रस्त व्यक्ति के उपचार के लिए कच्ची हल्दी की गांठ लेकर उसे पीड़ित व्यक्ति के सिर से पैर तक फिराएं और ऐसा करतें हुए निम्न मंत्र का जप करें –

'हल्दी-बाण बाण को लिया हाथ उठाय,
हल्दी-बाण से नीलगिरी पहाड़ थर्राय।
यह सब देख बोलत गोरखनाथ,
डाइन-योगिनी, भूत-प्रेत, मुंड काटो तान।'

भूत-प्रेत बाधा निवारण मंत्र-2

इस मंत्र का शनिवार से जप आरम्भ करके सात दिन तक 144 बार जप करें। साफ-सुथरे कमरे में अथवा कहीं एकांत स्थान पर बैठकर एक दीपक जलाएं। उसके सामने गुग्गुल की धूनी देकर फूल तथा बताशे चढ़ाएं। इस प्रकार जप द्वारा इस मंत्र को सिद्ध कर लें। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं,
नमो भूतनायक समस्त भुवनं
भूतानि साधय साध हू हू हू।'

इस मंत्र का जप करते हुए मोर-पंख से भूत-प्रेत बाधा से पीड़ित व्यक्ति को झाड़ा दें। बाधा का तुरंत निवारण होगा।

भूत-प्रेत बाधा निवारण-3

इस मंत्र को भी 'भूत-प्रेत बाधा निवारण-2' की भांति पहले सिद्ध कर लें और फिर मोर-पंख की सहायता से बाधाग्रस्त व्यक्ति को झाड़ा लगाएं। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो नारसिंहाय हिरण्यकशिपु वक्ष विदारणाय त्रिभुवन व्यापकाय भूत-प्रेत पिशाच शाकिनी डाकिनी कीलोन्मूलनाय स्यंषाद भव समस्त दोषान् हन हन सर सर चल चल कम कम मथ मथ हुं फट् हुं फट् ठः ठः महारुद्र जाण्यिति स्वाहाः।'

भूत-प्रेत बाधा निवारण-4

इस मंत्र का जप करते हुए उपलों की राख को अभिमंत्रित करके भस्म से फूंक मारकर मार्जन करें। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ ह्रीं श्रीं फट् स्वाहा,
परबत हंस परबत स्वामी।
आत्मरक्षा सदा भवेत्,
नौ नाथ चौरासी सिद्धियों की दुहाई फिरे।'

जब भूत-प्रेत बाधा से ग्रस्त व्यक्ति पर आवेश समाप्त हो जाए तो अभिमंत्रित भस्मी को किसी ताबीज में रखकर उसके गले में वह ताबीज डाल देना चाहिए।

भूत-प्रेत बाधा निवारण-5

इस मंत्र को पढ़ते हुए भूत-प्रेत बाधा से ग्रस्त व्यक्ति को सात बार मोरपंखी से झाड़ा देने से पीड़ित व्यक्ति की बाधा का निवारण होता है। मंत्र इस प्रकार है—

'बांधो भूत जहां तू उपजो छाड़ो गिरे पर्वत चढ़ाइ सर्ग दुहनेली पृथिवी तुजभि झिलिमिलाहि हुंकारे हनुवंत पचारह भीमा जारि जारि जारि भस्म करे ज़ो चांपे सींड।'

इस मंत्र को सूर्य ग्रहण, चंद्र ग्रहण या दीपावली की महानिशा में पहले सिद्ध कर लेना चाहिए। सिद्धि के समय पूजा, प्रसाद, फूल, धूप-दीप और नैवेद्य का ध्यान रखा जाना चाहिए।

भूत-प्रेत बाधा निवारण-6

इस मंत्र को भी पहले सूर्य ग्रहण, चंद्र ग्रहण अथवा दीपावली की महानिशा में सिद्ध कर लेना चाहिए। इसके बाद मोरपंखी से सात बार बाधाग्रस्त व्यक्ति को झाड़ा देना चाहिए। इस मंत्र को पढ़कर जल पर फूंकने और उस जल को पीड़ित व्यक्ति को पिलाने से भी अपेक्षित लाभ मिलता है। मंत्र इस प्रकार है--

'ओम नमो आदेश गुरु को!
ओम अपर के या कट मेष खम्ब प्रति प्रहलाद राखे पाताल राखे पांव देवी जंघा राखे काली का मस्तक राखे महादेव जो कोई या पिंड प्राण को छोड़े छोड़े तो देव-दानव, भूत-प्रेत, डाकिनी-शाकिनी, गंडा, ताप, तिजारी जूड़ी एक पहरू दो पहरू सांझ को सवेरे को किया को कराया को उलट वाही के पिंड परे इस पिंड की रक्षा भी नरसिंह जी करे। शबद सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

भूत-प्रेत बाधा निवारण मंत्र-7

इस मंत्र को सूर्य ग्रहण, चंद्र ग्रहण या दीपावली की महानिशा में सिद्ध करना चाहिए। फिर इस सिद्ध मंत्र से मोर-पंख द्वारा भूत-प्रेत बाधा से ग्रस्त व्यक्ति को सात बार झाड़ने से लाभ मिलता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ओम नमो आदेश गुरु को!
गिरहबाज नटनी का जाया,
चलती बेर कबूतर खाया।
पीए दारू खाए जो मांस,
रोग-दोष को लावे फांस।
कहां-कहां से लावेगा, गुदगुद में सबरावेगा।
बोटी-बोटी में से लावेगा, नौ नाड़ी बहत्तर कोठा में लावेगा।
मार-मार बंदी कर लावेगा,
न लावेगा तो अपनी माता की सेज पर पग धरेगा।
मेरा भाई मेरा देखा दिखलाय तो,
भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

इस मंत्र से अभिमंत्रित किया हुआ जल बाधाग्रस्त व्यक्ति को पिलाने से भी अपेक्षित लाभ मिलता है।

भूत-प्रेत बाधा निवारण मंत्र-8

इस मंत्र को मंत्र संख्या-7 की भांति पहले सिद्ध कर लें। इसके बाद दस पिंड उड़द या उबले चावल से बनाकर श्मशान में रख आएं। प्रत्येक पिंड के साथ ही गुड़ की डली भी रखनी चाहिए। पिंड के सम्मुख मशान का नामोच्चारण करते हुए शराब की कुछ धार भी छोड़नी आवश्यक है। प्रत्येक पिंड के सामने उसका नामोच्चारण (सफेद मशान, यमदंड मशान...सिलसिलिया मशान आदि) करते हुए मदिरा अर्पित करनी चाहिए। मंत्र इस प्रकार है—

'सफेदा मशान गुरु गोरखनाथ की आन।
यमदंड मशान काला भैंरू की आन।
सूकिया मशान लूनिया चमारी की आन।
फुलिया मशान गोरे भैंरूं की आन।
हल्दिया मशान ककोड़े भैंरू की आन।
पीलिया मशान दिल्ली की जोगनी की आन।
कमेदिया मशान कालका की आन।
कीकड़िया मशान रामचंद्र की आन।
मिचमिचिया मशान शिवशंकर की आन।
सिलसिलिया मशान वीर मुहम्मदा पीर की आन।'

भूत-प्रेत बाधा निवारण मंत्र-9

सर्वप्रथम इस मंत्र की सिद्धि जरूरी है। मंत्र सिद्धि के लिए लगातार सात रविवार को संध्या के समय किसी एकांत में पीपल के वृक्ष के पास जाएं। पीपल के पास जाकर बंगाल के सुप्रसिद्ध शाबर सिद्ध मनसाराम सेवड़ा का स्मरण करते हुए मांस-मदिरा का नैवेद्य अर्पित करें और साथ ही इत्र का फाहा रखकर तेल का दीपक जला दें। उसके पास ही छार-छरीला की धूप जलाकर भांग और गांजे से भरी सुलगी हुई चिलम भी चढ़ा दें। इसके बाद वहीं पर एकाग्रचित्त होकर निम्न मंत्र का जप करें—

'ओम नमो आदेश गुरु को।
घोर घोर इन घोर काजी की किताब घोर,
मुल्ला की बांग घोर रैगर को कुंड घोर।
धोबी को कुंड घोर पीपल का पान घोर,
देव की दीवाल घोर आपकी घोर।
बिखेरता चल पट की घोर बैठाता चल,
वज्र का किवाड़ तोड़ता चल सार का किवाड़ तोड़ता चल।
कुन कुन सो बंद करता चल पट को घोर बैठता चल।
भूत को पलीत को देव को दानव को,
दुष्ट को मुष्ट को चोट को फेंट को।
घरेले को उलमे को बुलमे को हिड़के को,
भिड़के को ओपरी को पराई को डंकिनी को।
स्यारी को भूचरी को खेचरी को कलुए को,
ऊन की मथवाय को तिजारी को माथा की मथवाय को।
मंगरा की पीडा को पेट की पीड़ा को,

सांस की कांस को मरे को मुशाण को।
कुण कुण-सा मुशाण कचिया मुशाण।
भुकिया मुशाण कीटिया मुशाण।
चीड़ी चोपटा का मुशाण नुह्या मुशाण,
इन्हीं को बंद कर एड़ी की एड़ी बंद करि।
पीड़ा की पीड़ा बंद करि जांघ की जाड़ी बंद करि,
कट्या की कड़ी बंद करि पेट की पीड़ा बंद करि।
छाती को शूल बंद करि सिर की सीस बंद करि।
चोटी की चोटि बंद करि नौ नाड़ी बहत्तर कोठा,
रोम रोम में घर पिंड में दखल कर।
देश बंगाला का मनसाराम सेवड़ा।
मेरा कारज सिद्ध न करे तो गुरु उस्ताद से लाजे,
शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

इस मंत्र की सिद्धि-पूजन आदि करने से पूर्व अपने आसन के चारों ओर आत्मरक्षा मंत्र द्वारा सुरक्षा के प्रबंध कर लेने चाहिए। यदि किसी एकांत स्थान पर पीपल का वृक्ष न मिले तो किसी बाहरी एकांत स्थान पर भोगादि क्रियाएं सम्पन्न करके अपने घर के एकांत कमरे में भी मंत्र सिद्धि जप किया जा सकता है।

इस मंत्र के सिद्ध हो जाने पर प्रेतबाधा के अलावा अन्य शारीरिक पीड़ाओं यथा सिरदर्द, कटिदर्द, पेटदर्द और जोड़ों का दर्द आदि का निवारण भी किया जा सकता है। पीड़ित व्यक्ति को इस सिद्ध मंत्र से झाड़ने पर अपेक्षित लाभ की प्राप्ति होती है।

भूत-प्रेत प्रताड़ना यंत्र

भूत-प्रेत बड़े तेज-तर्रार होते हैं। जब इनके ऊपर किसी मांत्रिक का तनिक भी दबाव पड़ता है तो ये तुरंत माध्यम को छोड़ भाग उठते हैं और वह दबाव कम होते ही तुरंत फिर माध्यम को धर दबोचते हैं। ऐसी दशा में जब किसी व्यक्ति पर प्रेत का साया होता है और मांत्रिक उसे यंत्रणा देना चाहता है तो चालाक प्रेत व्यक्ति को छोड़ देता है और वह यंत्रणा प्रेत के बजाय व्यक्ति को ही भोगनी पड़ती है। अतएव प्रेतबाधा से ग्रस्त व्यक्ति को यंत्रणा देने से पूर्व इस बात को अच्छी तरह ध्यान में रखना चाहिए।

यहां पर दो भूत-प्रेत प्रताड़ना के यंत्र दिए जा रहे हैं। इन यंत्रों को एक कोरे कागज पर बनाकर उसे लोहबान की धूनी दें। फिर उन्हें प्रेतग्रस्त व्यक्ति को दिखाकर उसके सामने ही ओखली में डालकर इन यंत्रों को खूब मूसल से कूटें। मूसल की चोटें प्रेत के सिर पर पड़ती हैं और वह असहनीय यंत्रणा भोगता है।

भूत-प्रेत को यंत्रणा देने के लिए निम्न दोनों यंत्रों में से किसी भी एक का प्रयोग किया जा सकता है।

प्रेत प्रताड़ना यंत्र-1
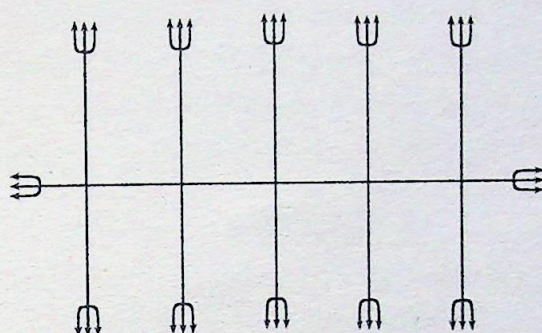
प्रेत प्रताड़ना यंत्र-2

द	मू	सि	ज	त्र	न	0	0
अ	च	जा	पै	स्यै	0	0	0

भूत-प्रेत बुलवाने का मंत्र-1

सर्वप्रथम इस मंत्र को सूर्य ग्रहण, चंद्र ग्रहण, होली या दीपावली की रात्रि में 1000 की संख्या में जप करके सिद्ध कर लेना चाहिए। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो भगवंते भूतेश्वराय किल किल तर वाय,
रुद्र दृष्ट्राकराल वक्त्राय, तिनयन भीषणाय,
धनर्धांगत पिशंग ललाट नेत्राय
तीव्र कोपानलायामित तेजसे पाश शूल खड्ग डमरुक
धनुर्बाण मुद्गर भूपदंड त्रास मुद्रा वेग दश दोर्दंड
मण्डिताय, कपिल जटाजूट कूटार्द्ध चंद्र धारिणे भस्मि
राग रंजित विग्रहाय, उग्र फणपति घटाटोप मंडित कंठ देशाय
जय जय भूत डामरस आत्मरूप दर्शे-दर्शे निरते निरते
सर सर चल चल पाशेन बंध बंध हुंकारेन त्रासय त्रासय
वज्रदंडेन हन हन निशिति खंडेन छिंध छिंध शूलाग्रे
भिंध भिंध मुद्गरेण चूर्णय चूर्णय सर्व ग्रहाणां आवेशय आवेशय।'

प्रयोग के समय गाय का घी, गुग्गुल, सर्प की केंचुली और नीम की पत्ती मिलाकर मंत्र पढ़ते हुए धूप दें। इसके बाद साबुत उड़द पर मंत्र पढ़कर रोगी को

मारें तो भूत-प्रेत अपने बारे में सब कुछ बताने पर विवश हो जाता है। इसके पश्चात् मांत्रिक कोई भी सिद्ध किया हुआ भूत-प्रेत निवारण मंत्र का जप करके बाधाग्रस्त व्यक्ति को भूत-प्रेत आदि से मुक्त करा सकता है।

भूत-प्रेत बुलवाने का मंत्र-2

इस मंत्र से 31 बार हिना, इत्र और चमेली के चार अधखिले फूलों को अभिमंत्रित करें। फिर इन्हें सात बार भूत-प्रेत बाधा से ग्रस्त व्यक्ति को सुंघाएं। अभिमंत्रित करते हुए फूलों को उस पीड़ित व्यक्ति के चेहरे के आस-पास ही रखें। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो हनुमंत वीर वज्रधारी,
डाकिनी शाकिनी घेर मारी।
गंगा जमना हमारा बाण बोले,
बकरे नहीं तो राजा रामचंद्र लक्ष्मण कुमार
गोरखनाथ की आन।
शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

इस प्रयोग के करने से भूत-प्रेत आदि स्वयं ही व्यक्ति के मुख से बोलने लगते हैं और अपने बारे में सब कुछ बता देते हैं। इसके बाद मांत्रिक भूत-प्रेत निवारण मंत्र द्वारा पीड़ित व्यक्ति को मुक्ति दिला सकता है।

भूत-प्रेत बुलवाने का मंत्र-3

सबसे पहले इस मंत्र को होली, दीपावली अथवा सूर्य ग्रहण, चंद्र ग्रहण में 1000 की संख्या में जप करके सिद्ध कर लें। इसके बाद इस मंत्र द्वारा काली मिर्चों को अभिमंत्रित करके भूत-प्रेत से ग्रस्त व्यक्ति को खिलाएं। ऐसा करने पर बाधाग्रस्त व्यक्ति पर आने वाला भूत-प्रेत आदि का साया अपने बारे में सब कुछ बताने लगता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ओम नमो आदेश गुरु को।
नारी जाया नाहरसिंह, अंजनी जाया हनुमंत,
वाने जारी बीज भवंता, वा तोड़ी गढ़ लंका
तेरी पाखरि कौन भरे, नाहरसिंह बलवंत वन में
फिरे अकेलड़ा भंवर खिलाएं केस बारो भाटी मध की पीवे
बारा बकरा वाय न धाये तो नाहरसिंह तू दौड़
मसाण जाय सात पांच ने मार खाय सात पांच ने
चख खाई देखूं नाहरसिंह वीर तेरे मंत्र की शक्ति

हाड़ हाड़ में सूं चाम चाम में सूं, नख नख में सूं,

रोम रोम में सूं बाट बाट में सूं अमुकी के नौ नारी बहत्तर
कोठा में सो खेद को पकड़ आणि हाजिर ना करे तो माता
नाहरी का चूंघा दूध हराम करे, राजा रामचंद्र की पौड़ी फाट
भै पड़े शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।'

इस शाबरी मंत्र में 'अमुकी' के स्थान पर भूत-प्रेत से पीड़ित व्यक्ति का नाम उच्चारित करना चाहिए। इस मंत्र के द्वारा पीड़ित व्यक्ति के मुख से बोलने वाले भूत-प्रेत को बाद में 'भूत-प्रेत निवारण मंत्र' द्वारा निष्कासित कर दिया जाता है।

भूत-प्रेत नाशक मंत्र-1

इस मंत्र की सिद्धि रविवार के दिन की जाती है। रविवार को एक एकांत स्थान पर सिरस के पत्ते और फूल में घुग्घू, कुत्ता और बिल्ली की विष्ठा, ऊंट के रोम, गोबर, गंधक, सफेद घुंघची और कड़ुवा तेल डालकर धूप देते हुए जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमः श्मशान वासिने भूतादीनां पलायनं कुरु कुरु स्वाहा।'

इस मंत्र के द्वारा भूत, प्रेत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी, राक्षस, बेताल, देव, दानव और खेचरी जैसी हर प्रकार की बाधाएं दूर हो जाती हैं।

भूत-प्रेत नाशक मंत्र-2

इस मंत्र द्वारा भूत-प्रेत और राक्षस से ग्रस्त व्यक्ति को झाड़ा देने से हर प्रकार की बाधाएं दूर हो जाती हैं। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ ठं ठां ठिं ठीं ठुं ठूं ठें ठैं ठों ठौं ठं ठः अमुक हूं।'

इस मंत्र में अमुक के स्थान पर बाधाग्रस्त व्यक्ति का नाम उच्चारित करना चाहिए।

भूत-प्रेत नाशक मंत्र-3

इस मंत्र का जाप करते हुए भूत-प्रेत बाधा से ग्रस्त व्यक्ति को यदि तेल की मालिश की जाए तो पीड़ित व्यक्ति से भूत-प्रेत आदि की समस्त बाधाएं दूर हो जाती हैं। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो काली कपाली दही दही स्वाहा।'

इस मंत्र का 108 बार जप करने से सभी बाधाएं दूर हो जाती हैं।

भूत-प्रेत नाशक मंत्र-4

सर्वप्रथम इस मंत्र को सिद्ध कर लेना चाहिए। मंत्र सिद्धि के लिए ~ निवार के दिन से आरम्भ करके 21 दिन तक महावीर हनुमान का विधि-विधानपूर्वक

पूजन करके नित्य 121 बार मंत्र का जप करना चाहिए। इस प्रकार यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ओम नमो आदेश गुरु को।
हनुमंत वीर बजरंगी वज्रधार,
'डाकिनी-शाकिनी, भूत-प्रेत, जिंद, खईस को ठोक ठोक मार।
मार, नहीं मारे तो निरंजन निराकार की दुहाई।'

मंत्र सिद्ध हो जाने पर किसी चौराहे की कंकड़ी या उड़द के दानों पर मंत्र पढ़कर बाधाग्रस्त व्यक्ति पर इनका प्रहार करें। इससे पीड़ित व्यक्ति के ऊपर से भूत-प्रेत आदि का साया दूर हो जाता है।

भूत-प्रेत, डायन, गलनाल आदि का झाड़ा

यदि इस शाबर मंत्र को पढ़ते हुए भूत-प्रेत, डायन और गलनाल से पीड़ित व्यक्ति को झाड़ दिया जाए तो उन्हें अपेक्षित सफलता मिलती है। यह मंत्र इस प्रकार है—

'जैसे कैलोमाकार्य सरूपे करि करिवो न करो वली
तते राम लक्ष्मण सीतेया कार कोटि कोटि आज्ञा।'

भूत-प्रेत आदि को कैद करने का मंत्र

इस मंत्र से अभिमंत्रित उड़द के दानों को भूत-प्रेत से ग्रस्त व्यक्ति के ऊपर डालने से भूत-प्रेतादि कैद में हो जाते हैं। मंत्र इस प्रकार है—

'बंध बंध शिव बंध शिव बंध।'

डाकिनी-शाकिनी निवारण मंत्र-1

सर्वप्रथम इस मंत्र को जपकर सिद्ध कर लें। इसके बाद उल्टी चक्की का पिसा हुआ सतनजा, जो बाधाग्रस्त व्यक्ति की माता द्वारा पीसा गया हो, से एक पुतला बनाएं। एक और पुतला पीड़ित व्यक्ति की माता के लहंगे की लान का बनाएं। इसे तिलों के सवा पाव तेल में भिगोएं। फिर इसे तकुए में पिरोकर पीड़ित व्यक्ति के ऊपर से सात बार उतारकर जला दें। इसके बाद सिर की ओर से तीन बार मंत्रोच्चारण करते हुए उड़द तथा पानी के छींटे पुतले पर मारते जाएं। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो हनुमानजी आया कांई कांई लाया
डाकिनी, शाकिनी आन आन कुरु कुरु स्वाहा।'

इस प्रयोग को करते हुए सवा पाव उड़द तथा उचित मात्रा में पानी अपने पास रखें। इसके बाद सतनजा के पुतले को पानी से भरी एक थाली में खड़ा कर

लें। इस पुतले को डाकिनी-शाकिनी मानते हुए इस पर दूसरे जलते हुए पुतले का तेल डालें। इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखें कि पानी की थाली में खड़ा हुआ सतनजे का पुतला पानी से बाहर न आ निकले। इस पुतले पर ज्यों-ज्यों तेल की बूंदें पड़ती जाएंगी, त्यों-त्यों डाकिनी-शाकिनी पीड़ित व्यक्ति के शरीर से बाहर निकलती जाएगी। इस प्रकार पीड़ित व्यक्ति का रोग दूर हो जाएगा।

यह मंत्र-प्रयोग करते समय ध्यानपूर्वक अपनी सुरक्षा का उपाय कर लेना चाहिए। आत्मरक्षा का घेरा बनाकर ही यह प्रयोग करें, अन्यथा मांत्रिक को हानि पहुंचने की संभावना रहती है।

डायन-चुड़ैल आदि के निवारण का मंत्र

इस मंत्र द्वारा पीड़ित व्यक्ति को झाड़ा देने पर डायन-चुड़ैल जैसी बलाएं भगवान् शंकर की कृपा से दूर हो जाती हैं। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ रुनुं झुनुं इमृत मारातं देवी ओरम्पर तारा वीर मान्यो
वीर तोन्यो हांक-डांक महिमथन करणजोग भोग जोग धर
छत्तीस नक्षत्र धर सर्पपति वासुकि धर सप्त ब्रह्माडे पति
ब्रह्मो के छायाधौ देवीधौ देवताधौ डाइनिधौ गुरुराणींधौ भूतधौ
प्रेतधौ धर-धर मां चंडी बीन करुवालषण्डी धौर्यवागुटिनां य
दाददलीं इमान को चलन्ते केके जाते आर रे वीर भैरवी का
मरूप कामचण्डी घर-घर वाकी महाकाव्य करे मडरूमारौ कुकी
घर वारण धौरवलीते ते कामरू कामचण्डी इटमाया प्रसरणि
कोटि-कोटि आज्ञादेवी रामचण्डी बीजे चलिषण्डी चौपिगे ऐरल
देवी वसिलाकि मांडि चण्डिचंद्र चमेमिले सूर्यटरिल ऐरलदेवी हराह-
रांपरि सुखिला कोटरे जीवो परांद्रिवाहंते खप्पर दाहिने हाथे छुरि
ऐरलादेवी अवरतारि डाइनि बांधो चुरइलि बांधूं गुनी बांधूं
मीरा बांधूं मसानी बांधूं गुनिया नासुनी आवे गरजि आबु लावे
राण्डे माला डांडे जीवतांडै हसै खेलै भारिवन झारोवलिते
ते ते कामरू कामचण्डि कोटिश आज्ञा।'

भूत-प्रेत बाधा निवारण के कुछ विशेष उपाय

❑ रविवार को सहदेई की जड़, आठ काली मिर्च और आठ तुलसी के पत्तों को किसी कपड़े में लपेटकर एक काले धागे के द्वारा भूत-प्रेत बाधा से ग्रस्त व्यक्ति के गले में बांध दें। यह उपाय करने से बाधाग्रस्त व्यक्ति की पीड़ा का निवारण हो जाता है।

❑ अपने घर-परिवार का वातावरण सत्य, सदाचार और ईश भक्ति का

बनाएं। ऐसे वातावरण में भूत-प्रेत बाधा अपना प्रकोप नहीं दिखा सकती।

❑ भूत-प्रेत बाधा से ग्रस्त व्यक्ति को नीम के पत्ते, हींग, वच, सरसों और सर्प की केंचुली की धूनी देने पर बाधा का निवारण हो जाता है।

❑ रविवार को श्वेतार्क की मूल एक दिन पूर्व अभिमंत्रित करके विधि-विधानपूर्वक ग्रहण करें। उसे अपने पास रखने पर भी भूत-प्रेत बाधा अपना प्रकोप नहीं दिखा पाती।

❑ रविवार को काले धतूरे की जड़ को विधि-विधानपूर्वक ग्रहण करें। यदि भूत-प्रेत बाधा से ग्रस्त व्यक्ति स्त्री हो तो उसकी वाम बांह तथा पुरुष हो तो उसकी दाहिनी बांह में इसे बांध दें। इससे भी भूत-प्रेत बाधा का निवारण हो जाता है।

पितृदोष निवारण मंत्र-1

पितृपक्ष (यह पक्ष आश्विन कृष्ण की प्रतिपदा से अमावस्या तक प्रतिवर्ष 15 दिन तक रहता है और इसे कनागत भी कहा जाता है) में यह प्रयोग किया जाता है। प्रतिप्रदा से एक दिन पूर्व यानि पूर्णिमा को चूने के पांच अथवा सात कंकड़ ले आएं। चूने के ये कंकड़ बेर से अधिक बड़े न हों। इन कंकड़ों को साफ-स्वच्छ लकड़ी के एक पटड़े पर स्थापित कर दिया जाए। इन कंकड़ों को पहले सामान्य शुद्ध जल से स्नान कराएं और निम्न मंत्र का उच्चारण करें—

'सतगुरु गोरख भाखे बानी,
देव पितर हम देवत पानी।
सत गवाही सूरज करे,
पूनम चंदा मावस सरे।
पितर हो शुकर मनावें,
गंगा मैया सुरग पठावें।
कौन-कौन से पितर सुरग गए परसन्न भए,
बाल बिरमचारी निपुतरी नाग पितर गिरस्त ब्याए ढयाए।
रंडुआ-मडुआ छोटे-बड़े खोटे-खरे,
ऊंचे-नीचे आगले-पीछले पितर परसन्न भए।
बिरामन छतरी परसन्न भए।
वनिक चंडाल परसन्न भए।
सबन को सुरग पठावे,
लोना जोगन विमान चढ़ावे।
जाओ-जाओ पितरदेव सुरग सुख भोगो,
हमें न सताओ, जो सताओ तो हनुमान का घोटा खाओ।

मेरी भक्ति गुरु की शक्ति,
मंत्र सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

इस मंत्र को उच्चारित करते हुए सामान्य साफ जल से कंकड़ों को स्नान कराने के बाद फिर कच्चे दूध में इसी प्रकार मंत्रोच्चारण करते हुए इन्हें स्नान कराएं। इसके बाद मंत्रोच्चारण करते हुए ही गंगाजल से इन कंकड़ों को स्नान कराएं। तत्पश्चात् धूप-दीप और चावलों की खीर पितरों को अर्पित करें। अब इस मंत्र की एक माला का जप करें। यदि एक माला का जप संभव न हो तो कम-से-कम 51 मंत्रों का जप अवश्य करें।

ध्यान रखें कि पितरों को श्वेत रंग अत्यंत प्रिय होता है। अतएव पूजा में श्वेत रंग के सुगंधित पुष्पों में चमेली और मोगरा आदि का प्रयोग करें। साधक को चाहिए कि वह स्वयं भी श्वेत रंग के वस्त्र धारण करे और श्वेत रंग का ही आसन प्रयोग करे, साथ ही पितरों की स्थापना भी श्वेत रंग के रेशमी वस्त्र पड़े आसन पर ही करे।

यदि चूने के श्वेत कंकड़ उपलब्ध न हो सकें तो उनके स्थान पर चांदी से बने नाग को प्रयोग में लाया जा सकता है; किंतु यह तभी उपयुक्त रहता है, जबकि कुल का कोई पितृ पुरुष नाग रूप में दिखाई देता रहा हो। नि:संतान धनपति पितृ प्राय: नागयोनि में ही प्रवेश कर जाते हैं। चूने के श्वेत कंकड़ों के उपलब्ध न होने की स्थिति में चांदी के पत्तर पर सात अथवा पांच पितर देवों की पुतली आकृति उत्कीर्ण कराने से भी काम चल जाता है। पितरों का तर्पण करते समय उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करते रहना चाहिए।

इस प्रयोग के अलावा पितृपक्ष में एक अन्य विधानानुसार भी प्रयोग किया जा सकता है। नित्य प्रति चावलों के चार पिंड बनाकर पितृपक्ष की अर्द्धरात्रि में नित्य प्रति किसी एकांत स्थान में ये पिंड रख आएं। ऐसा करते समय निरन्तर मंत्रोच्चारण करते रहें। इससे भी पितृदोष का निवारण हो जाता है।

नाग अथवा पितृ प्रतिमा को गंगा में स्नान कराने तथा वहीं पर तर्पणादि पिंडकर्म कराने पर भी पितृ शांति मिल जाती है।

पितृ शांति के प्रयोगों को दूसरों के निमित्त भी किया जा सकता है; किंतु ये प्रयोग यजमान के घर पर ही करने होते हैं। मांत्रिक को मंत्र की सिद्धि पितृपक्ष में ही करनी चाहिए और मांत्रिक को यह प्रयोग यजमान के घर पर अमावस्या को करना चाहिए।

पितृदोष निवारण मंत्र-2

इस मंत्र की सिद्धि हेतु जप करने से पूर्व साधक को आत्मरक्षा मंत्र के द्वारा अपनी सुरक्षा सुनिश्चित कर लेनी चाहिए। इस मंत्र की सिद्धि में साधक को कभी-कभी सिंह की दहाड़ अथवा गर्जना सुनाई देती प्रतीत होती है; अत: साधक को

साहस और संयम के साथ मंत्र जप करना चाहिए और किसी भी प्रकार की भय-बाधा से विचलित नहीं होना चाहिए।

इस मंत्र की सिद्धि किसी भी मास की अमावस्या को दस माला जपने से हो जाती है। मंत्रसिद्धि के समय पूजन-प्रसाद और धूप-दीप का प्रयोग अवश्य करें। धूप में गुग्गुल का प्रयोग करना चाहिए और प्रसाद में नारियल, सिंदूर तथा पीली मिठाई होनी चाहिए। इस प्रयोग में भगवान् नृसिंह और हनुमानजी के निमित्त पूजन होता है, अतएव भगवान् नृसिंह और हनुमानजी को यज्ञोपवीत अर्पित करना चाहिए तथा प्रयोग एकांत स्थान में ही करना चाहिए। मंत्र इस प्रकार है—

'पितर परम पर्वता विराजे,
हम कर जोड़े खड़े सकारे।
होम धूप की होय अग्यारी,
पितरदेव दरबार तुम्हारी।
पितर मनावे हार द्वार में बरकत बरषे,
बार-बार मैं फलां मनुज के पितर मनाऊं।
सातों सातहि सिर ही झुकाऊं,
जो न माने मेरी बात,
नरसिंह को झुकाऊं माथ।
वीर नरसिंह दहाड़ता आवे,
मूंछे-पूंछ कोप हिलावे।
हन-हन हुम करे हुंकार,
प्रेत-पितर पीड़ा फटकार।
कोड़ा मारे श्री हनुमान,
सिद्ध होंय सब पूरन काज।
दुहाई-दुहाई राजा रामचंदर महाराज की।'

यह मंत्र सिद्ध हो जाने के बाद पितृदोष से ग्रस्त गृह में अमावस्या की अर्द्धरात्रि को दोष-निवारण का प्रयोग करना चाहिए। सबसे पहले एक चौकी पर श्वेत कपड़ा बिछाकर उस पर पितरों को स्थापित करें, फिर पूड़ी, पूए, उबले चावल के पिंड, उड़द से बना बाकला, पतला हलुवा (लप्सी) आदि पितरों को अर्पित करें। पूजन आदि से निवृत्त होने के बाद गृह स्वामी और उसकी पत्नी दोनों को पितरों से युक्त चौकी को अपने घर की अंत: सीमाओं में चारों ओर घुमाना चाहिए।

गृहस्वामी और गृहस्वामिनी के साथ ही मांत्रिक को भी मंत्रोच्चारण करते हुए उनके साथ-साथ चलना चाहिए और इसी के साथ मांत्रिक धरती को जल से अभिसिंचित करता हुआ चले। इस प्रकार घूमते रहने से चौकी का भार बढ़ता जाएगा; अतः पति-पत्नी को सावधानी के साथ चौकी को पकड़े रहना चाहिए।

यदि अधिक भार महसूस होने के कारण चौकी हाथ से छूट जाए तो पुन: शुरू से इस प्रक्रिया को करना चाहिए। जहां से चौकी लेकर चलें अंततः उसी स्थान पर घूम-फिरकर लौट आना चाहिए। इस स्थान पर नारियल का बलिदान कर घड़े के खप्पर में चौकी की समस्त सामग्री को भर लें। फिर गृह के मुख्य द्वार पर सात बार घड़े के खप्पर को उसारकर गृहस्वामी स्वयं उस खप्पर को लेकर किसी एकांत स्थान पर रख आएं अथवा दफना आएं। एकांत से लौटते समय पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहिए। अंत में पितरों की शांति की कामना करते हुए ब्राह्मण-भोज, तर्पण और दान-पुण्य आदि करना चाहिए।

पितृदोष से बचाव के विभिन्न उपाय

किसी भी दोष का शमन अथवा निवारण करने से अधिक अच्छा यह होता है कि उस दोष से बचा जाए। दोष से बचने के उपायों में सबसे अधिक कारगर यह होता है कि दोष होने की स्थिति की अच्छी जानकारी हो। पितृदोष अथवा पितृ प्रकोप क्यों होता है, इसके मुख्य कारण निम्नलिखित हैं—

❑ कुल में दुराचारण के कारण नैतिक मूल्यों का ह्रास होना।

❑ पितरों का विधि-विधानपूर्वक श्राद्ध-तर्पण आदि न होना।

❑ जाने अथवा अनजाने में पितरों का अपमान होना।

❑ पितरों को विस्मृत कर देना।

❑ कुल की परम्परा के अनुसार कुलदेवता, कुलदेवी या परम्परागत किसी अन्य लोकमान्य देवता का पूजन न करना।

❑ धर्म के विरुद्ध आचरण करना।

❑ नाग अथवा गाय आदि की हत्या करना या कराना।

❑ कुल में भ्रूण हत्या होना अथवा कुलवधू का चरित्र भ्रष्ट होना।

❑ कुल में जारज संतान का उत्पन्न होना।

❑ ब्राह्मण स्त्री (अथवा कुमारी) से रति-कर्म करना।

❑ कुमारी (किसी भी धर्म की) लड़की से बलात्कार करना।

❑ वेश्यागमन करना।

❑ शूद्रादि वर्ग की स्त्रियों से काम-वासना से प्रेरित होकर विवाह संबंध स्थापित करना।

❑ तिथि अमावस्या को सम्भोग क्रिया करना।

❑ देव स्थान अथवा तीर्थ स्थान में अपकर्म करना।

❑ नदी अथवा कुएं आदि में मल-मूत्र विसर्जित करना अथवा नग्न होकर स्नान करना।

यदि व्यक्ति इन दोषों से मुक्त रहे तो वह पितृदोष के प्रकोप से बचा रहता है।

❑❑

4

वशीकरण और शाबर मंत्र

वशीकरण से तात्पर्य किसी व्यक्ति अथवा प्राणी को अपने वश में करने से है। अपने वश में किए गए प्राणी से अपनी इच्छा के अनुसार कार्य कराया जा सकता है। शास्त्रीय मंत्रों के समान ही शाबर मंत्रों में भी वशीकरण के विभिन्न मंत्र दिए गए हैं। मुख्यत: वशीकरण मंत्रों को चार भागों में विभक्त किया गया है, जो निम्न प्रकार से है—

लोक देवता-देवी वशीकरण

इस प्रकरण में शाबर मंत्रों के द्वारा लोक देवता अथवा देवी का वशीकरण किया जाता है। इन लोक देवताओं में मुख्यत: गणेश, हनुमान, भैरव आदि तथा हरदौल, हीरामन, कारस, जिंद और वीर को वशीभूत करने के उद्धरण मिलते हैं। यद्यपि इन देवताओं की मंत्रोपासना पूर्ण भक्ति भाव से की जाती है, तब ये प्रकट भी हो जाते हैं, तथापि इनके प्रकट होने पर साधक इन्हें वचनबद्ध करके अपने वशीभूत कर लेता है। यह वशीकरण ही है। इसी प्रकार लोकदेवियों आसमानी, कंकाली, चामड़ माता, बीजासन और खुलखुली आदि की सिद्धि हेतु भी शाबर मंत्र हैं।

उपदेव वशीकरण

उपदेवों में बेताल, जिन्दपीर, भैंरू, ठाकुर देव आदि की गणना की जाती है। प्राय: लोग जिंद और जिन्न के भेद को नहीं समझ पाते और दोनों को एक ही समझने लगते हैं। यह लोगों की बहुत बड़ी भूल है। मूलत: जिन्न और जिंद अलग-अलग ही होते हैं। जिन्न प्राय: दुष्प्रवृत्ति के और उच्छृंखल होते हैं, जबकि जिंद सात्विक होते हैं। ये वनांचल में स्थित हनुमान मंदिर अथवा प्राचीन भग्न दुर्गों में निवास करते हैं। श्रुति के अनुसार घोड़े पर सवार सशस्त्र मुद्रा ही इनका स्वरूप है। ये राजसी स्वभाव के होते हैं—जरा-सी बात पर प्रसन्न होना तथा जरा-सी बात पर क्रोधित होना।

यदि जिंद किसी से प्रसन्न हो जाएं तो उसे सुख-समृद्धि से परिपूर्ण कर देते हैं। ये उसे भगवद्भक्ति की, लोकोपकार, पुण्यकर्म और तीर्थाटन की ओर जाने के लिए भी प्रेरित करते हैं।

दूसरी ओर जिन्न भी जिंद की तरह ही शक्तिशाली होते हैं। श्रुति के अनुसार जिन्नों का भरा-पूरा परिवार होता है। उनके परिवार में पिता, पुत्र, पुत्री, पत्नी और मां-बहन इत्यादि सभी होते हैं। जिंदों के समान ही जिन्न भी सुगंधप्रिय होते हैं। प्राय: जिन्न सुंदर-युवा स्त्रियों पर शीघ्र ही आसक्त हो जाते हैं।

पुरुष वशीकरण

किसी भी व्यक्ति को अनायास ही अपनी ओर आकर्षित कर लेने और उसे अपने वशीभूत कर मनचाहे कार्य करने की क्षमता शाबर मंत्रों में निहित है। शाबर मंत्रों का साधक सहज ही राजा, धनपति, अधिकारी, नौकर, पति, प्रेमी, शत्रु और जनसभा तक को अपने वशीभूत करने की क्षमता रखता है।

स्त्री वशीकरण

स्त्री वशीकरण का अनेक संदर्भों में बड़ा ही उपयोगी परिणाम सामने आया है। यदि किसी की बिगड़ती हुई गृहस्थी को बचाने अथवा प्राणों पर संकट के गहराते बादलों को छांटने में स्त्री वशीकरण किया जाए तो वह धर्म-सम्मत है, नैतिक है; किंतु यदि इसके विपरीत आचरण करते हुए शाबरी मंत्रों का उपयोग स्त्री वशीकरण में किया जाए तो वह पूर्णतया अनैतिक ही नहीं, समाज और मानवता के भी प्रतिकूल है; अत: इस प्रकार के अनैतिक कर्मों की पूर्ति हेतु स्त्री वशीकरण करना अनुचित है।

इस अध्याय में वशीकरण से संबंधित विभिन्न प्रकार के शाबर मंत्र दिए गए हैं। पाठक उनसे लाभ उठाकर मनोनुकूल लाभ उठा सकते हैं।

हनुमान वीर सिद्धि मंत्र

पहले दिन एक डाली वाले आक के पौधे की तलाश करें। फिर किसी शुभ दिन उस पौधे के पास पहुंचकर उसका कच्ची हल्दी, नारियल, गुलाब की अगरबत्ती, कुमकुम और देशी कपूर आदि से पूजन करें। इसके बाद हाथ में जल लेकर निम्न मंत्र का जप करते हुए जल को पौधे की जड़ में अर्पित कर दें।

इसी प्रकार मंत्रोच्चारण करते हुए 31 बार जल हाथ में लेकर आक के पौधे की जड़ में अर्पित करें—

मंत्र इस प्रकार है—

'गण गणा कमरी गणा,
पायामधीं सोन्या सुवर्णाच्या बहाणा।
वहाण अग्नि निघाली,
ओय्यावर होता कोल्हासर देत।

जागती ज्योति जागत रहो।
खेत देव दैत चले रे हनुमान,
बीर सिध्याशी गुरु धू।'

इसके बाद गुरु मंत्र का जप करें। यह प्रयोग 31 दिन तक इसी प्रकार लगातार करें। प्रयोग के तीसरे दिन ही हनुमान वीर जाग्रत होने लगता है। इकत्तीसवें दिन जब हनुमान वीर साक्षात् प्रकट जाएं तो मंत्रोच्चारण रोककर उनसे सदा सहायता पाने का वचन ले लें। साधक की भक्ति और मंत्र की शक्ति से प्रभावित होकर हनुमान वीर साधक को आशीर्वाद दे देंगे।

इसी दिन आक के पौधे को मीठा भोजन अर्पित करके उसे जड़ सहित उखाड़कर ले आएं। इस पौधे की जड़ का ताबीज बनाकर अपने गले में धारण कर लें और जब कभी भी हनुमान वीर की आवश्यकता हो, उनका स्मरण करते हुए मंत्रोच्चारण करें। हनुमान वीर तुरंत प्रकट होकर साधक के कार्य सिद्ध करेंगे।

नाथ-सम्प्रदाय के नाथों, सिद्धों और योगियों के लिए सिद्ध गोरख चालीसा का भी बड़ा महत्त्व है। गुरु गोरखनाथ को शाबर तंत्र में अपने गुरु मछेंद्रनाथ से भी बड़ा स्थान प्राप्त है। गुरु गोरखनाथ की कृपा और आशीर्वाद से बहुत से मंत्र बड़ी ही सहजता और सरलता से सिद्ध हो जाते हैं। यही नहीं, बल्कि बड़ी-बड़ी सिद्धियां और वशीकरण भी गुरुजी की कृपा से सहज ही प्राप्त हो जाती हैं। यहां पर गुरु की कृपा प्राप्त करने के लिए श्री सिद्ध गोरख चालीसा का भावपूर्ण उल्लेख किया गया है। इस चालीसा का भक्ति-भाव से जप करते हुए और श्री गोरखनाथ का स्मरण करते हुए अनेक वशीकरण सिद्धियों की सहज ही प्राप्ति हो सकती है।

श्री सिद्ध गोरख चालीसा

॥ दोहा ॥

गणपति गिरजा पुत्र को सुमिरूं बारम्बार।
हाथ जोड़ विनती करूं शारदा नाम आधार॥

॥ चौपाई ॥

जय जय गोरखनाथ अविनासी।
कृपा करो गुरुदेव प्रकाशी॥
जय जय जय गोरख गुण ज्ञानी।
इच्छा रूप योगी वरदानी॥
अलख निरंजन तुम्हरो नामा।
सदा करो भक्तन हित कामा॥
नाम तुम्हारा जो कोई गावें।
जन्म जन्म के दुःख मिट जावें॥

जो कोई गोरख नाम सुनावे।
भूत पिशाच निकट नहिं आवे॥
ज्ञान तुम्हारा योग से पावे।
रूप तुम्हारा लख्या न जावे॥
निराकार तुम हो निर्वाणी।
महिमा तुम्हारी वेद न जानी॥
घट घट के तुम अंतर्यामी।
सिद्ध चौरासी करे प्रणामी॥
भस्म अंग गल नाग विराजे।
जटा शीश अति सुंदर साजे॥
तुम बिन देव और नहिं दूजा।
देव मुनिजन करते पूजा॥
चिदानन्द संतन हितकारी।
मंगलकरण अमंगल हारी॥
पूर्ण ब्रह्म सकल घट वासी।
गोरखनाथ सकल प्रकाशी॥
गोरख गोरख जो कोई ध्यावे।
ब्रह्म रूप के दर्शन पावे॥
शंकर रूप धर डमरू बाजे॥
कानन कुंडल सुंदर साजे॥
नित्यानन्द है नाम तुम्हारा।
असुर मार भक्तन रखवारा॥
अति विशाल है रूप तुम्हारा।
सुर नर मुनिजन पावे न पारा॥
दीन बंधु दीनन हितकारी।
हरो पाप हम शरण तुम्हारी॥
योग मुक्ति में हो प्रकाशा।
सदा करो संतन तन वासा॥
प्रातःकाल ले नाम तुम्हारा।
सिद्धि बढ़े अरु योग प्रचारा॥
हठ हठ हठ गोरक्ष हठीले।
मार मार बैरी के कीले॥
चल चल चल गोरख विकराला।
दुश्मन मार करो बेहाला॥

जय जय जय गोरख अविनाशी।
अपने जन की हरो चौरासी॥
अचल अगम है गोरख योगी।
सिद्धि देवो हरो रस भोगी॥
काटो मार्ग यम को तुम आय।
तुम बिन मेरा कौन सहाय॥
अजर अमर है तुम्हरी देहा।
सनकादिक सब जोरहि नेहा॥
काटिन रवि सम तेज तुम्हारा।
है प्रसिद्ध जगत उजियारा॥
योगी लखे तुम्हरी माया।
पार ब्रह्म से ध्यान लगाया।
ध्यान तुम्हारा जो कोई लावे।
अष्टसिद्धि नवनिधि घर पावे।।
शिव गोरख है नाम तुम्हारा।
पापी दुष्ट अधम को तारा॥
अगम अगोचर निर्भय नाथा।
सदा रहो संतन के साथा॥
शंकर रूप अवतार तुम्हारा।
गोपीचंद भरतरी को तारा॥
सुन लीजो प्रभु अरज हमारी।
कृपा सिंधु योगी ब्रह्मचारी॥
पूर्ण आस दास की कीजे।
सेवक जान ज्ञान को दीजे॥
पतित पावन अधम अधारा।
तिनके हेतु तुम लेत अवतारा॥
अलख निरंजन नाम तुम्हारा।
अगम पंथ जिन योग प्रचारा॥
जय जय जय गोरख भगवाना।
सदा करो भक्तन कल्याना॥
जय जय गोरख अविनाशी।
सेवा करे सिद्ध चौरासी॥
जो ये पढ़हि गोरख चालीसा।
होय सिद्ध साक्षी जगदीशा॥

हाथ जोड़कर ध्यान लगावे।
और श्रद्धा से भेंट चढ़ावे॥
बारह पाठ पढ़े नित जाई।
मनोकामना पूर्ण होई॥

॥ दोहा ॥

सुने सुनावे प्रेम वश, पूजे अपने हाथ।
मन इच्छा सब कामना, पूरी करें गोरखनाथ॥
अगम अगोचर नाथ तुम, पारब्रह्म अवतार।
कानन कुंडल सिर जटा, अंग विभूति अपार॥
सिद्ध पुरुष योगेश्वरो, दो मुझको उपदेश।
हर समय सेवा करूं, सुबह शाम आदेश॥

॥ इति श्री सिद्ध गोरख चालीसा ॥

विभिन्न देवी-देवताओं और विशिष्टजनों को शाबर मंत्रों की सिद्धि के बल पर वशीभूत करके उनसे मनोवांछित कार्य कराए जा सकते हैं। ऐसे कुछ शाबर मंत्रों को यहां इस अध्याय में प्रस्तुत किया गया। सिद्ध शाबर मंत्रों की चमत्कारी शक्ति वास्तव में आश्चर्यजनक होती है; किंतु फिर भी साधक को इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि वह किसी भी देवी-देवता अथवा सदाचारी प्राणी से उसके नियम-संयम और आचरण के विरुद्ध कार्य लेने का अपराध न करे, अन्यथा साधक को हानि भी उठानी पड़ सकती है। जैसे महावीर हनुमान के सम्मुख श्रीराम के विरुद्ध अमर्यादित वचन बोलने अथवा कार्य करने का साहस न करे और किसी सती-साध्वी स्त्री से उसके पति परमेश्वर की अहित-साधना अथवा अमर्यादित आचरण करने का प्रयास न करे। ध्यान रहे कि दिव्य शक्तियां भी परोपकार और लोक-सेवा हेतु सदा कटिबद्ध रहती हैं...आवश्यकता केवल उनको संभालने वाले की है।

रुद्र देवता का मंत्र

इस मंत्र का जप करते हुए धतूरा, कुमकुम और घृत तीनों के मिश्रण से दस हजार की संख्या में होम किया जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो भगवते रुद्राय हुं फट स्वाहा।'

यदि इससे सफलता प्राप्त न हो तो एक लाख की संख्या में होम करना चाहिए, रुद्र देवता अवश्य प्रसन्न होकर दर्शन देंगे।

भगवती देवी मंत्र

इस मंत्र का जप सात दिन तक निरंतर किया जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो भगवती रक्त पीठं नमः।'

इस मंत्र का प्रतिदिन एक हजार की संख्या में लाल कपड़े पर जप किया जाता है। जप संख्या पूरी हो जाने के बाद उस कपड़े को अपने हृदय से लगाने पर भगवती देवी की प्रसन्नता सहज ही प्राप्त हो जाती है और समस्त मनोकामनाएं पूर्ण हो जाती हैं।

सरस्वती देवी मंत्र

किसी शुभ मुहूर्त्त से आरम्भ करके इस मंत्र का दस हजार की संख्या में जप करना चाहिए। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः।'

इस प्रकार मंत्र सिद्ध हो जाता है। इसके बाद गाय के एक सेर घी को बकरी के चार सेर दूध में डालकर उसमें एक-एक टंक सहजना की जड़, सेंधा नमक, वच, घावड़ा के फूल और लोध मिलाकर हल्की आंच पर पकाएं। जब दूध और दवाएं जल जाएं और घी शेष रह जाए, तब उसे आंच से नीचे उतार लें। अब इसे सिद्ध मंत्र से अभिमंत्रित करके प्रतिदिन एक तोला घी का सेवन करें। यदि उक्त विधि से घी तैयार न कर सकें तो मालकांगनी के तेल को इस मंत्र से अभिमंत्रित करके स्वल्प मात्रा में सेवन करने से सरस्वती देवी की कृपा बनी रहती है।

इस मंत्र को नित्य-प्रति एक हजार की संख्या में जप करते रहने से भी विद्या-बुद्धि की देवी सरस्वती की कृपा बनी रहती है।

महालक्ष्मी मंत्र

भगवती महालक्ष्मी के षोडश नाम से युक्त इस स्तुति मंत्र का नित्य पाठ करने से अनायास ही देवी महालक्ष्मी की कृपा प्राप्त हो जाती है। मंत्र इस प्रकार है—

'श्री गणेशाय नमः। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्मी पद्मा वत्यै नमः। महालक्ष्मी महाकाली महादेवी महेश्वरी। महामूर्ति महामाया महाधर्मेश्वरी अर्हं। मुक्ता माला धरा माया महामेधा महोदरी। महाजननी जगत्माता महामुद्योतिनी अर्हं।'

कर्ण पिशाचिनी मंत्र

इस मंत्र को सिद्ध करने के लिए साधक को सवा लाख की संख्या में मंत्र का जप करना होता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ हं हन हन स्वाहा।'

मंत्र सिद्ध होने पर कर्ण पिशाचिनी साधक के कानों में सभी प्रश्नों के यथोचित उत्तर देती है। इस प्रकार सहज ही साधक की साधना के आयाम बढ़ते चले जाते हैं।

धन-प्रदायक वशीकरण मंत्र

नित्य प्रात: किसी भी व्यक्ति से कोई भी बातचीत न करें। बिस्तर से उठकर दैनिक कार्यों से निवृत्त होकर इस मंत्र का 108 बार जप करें। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो भगवती पद्म पद्मावती। ॐ ह्रीं श्रीं ॐ पूर्वाय दक्षिणाय पश्चिमाय उत्तराय आण पूरय सर्वजन वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।'

108 बार इस मंत्र का जप करने पर अपने गृह के चारों कोनों पर दस-दस बार मंत्र पढ़कर फूंक मारें। ऐसा करने से चारों दिशाओं से धन-लाभ होने लगता है।

सर्वजन वशीकरण मंत्र-1

सर्वप्रथम इस मंत्र को सिद्धि योग अथवा ग्रहण पर्व में दस हजार की संख्या में जप करके सिद्ध कर लें। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ चामुण्डे जय जय वश्यकरि जय जय सर्व सत्वान्नमः स्वाहा।'

मंत्र सिद्ध करने के बाद किसी रविवार या मंगलवार को इस मंत्र से 108 बार किसी पुष्प को अभिमंत्रित करें। अभिमंत्रित किया हुआ पुष्प जिस किसी भी व्यक्ति को सूंघने के लिए दिया जाएगा, वह साधक के वश में हो जाएगा।

सर्वजन वशीकरण मंत्र-2

साधक अपनी राशि के रत्न की अंगूठी प्राप्त करें। पीले वस्त्र धारण करके दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके और अंगूठी को अपने सामने रखकर पीले आसन पर बैठ जाएं। अब अंगूठी पर अपना ध्यान एकाग्र करते हुए इस मंत्र की तीन मालाएं जपें। मंत्र इस प्रकार है—

'मोह कम मोह कम कहां से आया,
यह किसका संदेशा लाया।
किसको रोली किसको चंदन,
किसको फूल बतासा अंजन।
काल को भेरूं जोगनि छोडूं।
काल को मोडूं मुख को जोडूं।
सत्य वचन आदेश गुरु गोरखनाथ का।'

इस प्रयोग में महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि पूरे जपकाल के दौरान अंगूठी पर

ध्यान एकाग्र करके रखें। यह प्रयोग पांच दिन तक इसी प्रकार करें। इस प्रयोग के बाद इस अंगूठी को बाएं हाथ की किसी भी उंगली में पहन लें और ऐसा करने के एक माह के बाद किसी कागज पर काजल से उस स्त्री अथवा पुरुष का नाम लिखें जिसे आपको वशीभूत करना है। फिर इस कागज पर उस मुद्रिका को स्थापित करके मंत्र का जप करें। ऐसा करने पर इच्छित व्यक्ति साधक के वशीभूत हो जाएगा और उसके मनोनुकूल कार्य करने लगेगा।

सर्वजन वशीकरण मंत्र-3

सिद्धि योग, ग्रहण पर्व अथवा किसी अन्य शुभ मुहूर्त्त में इस मंत्र का 2000 की संख्या में जप करें। ऐसा करने पर यह मंत्र सिद्ध हो जाएगा। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ पिंगलायै नमः।'

दोनों पंखों सहित भौंरे तथा तोते के मांस को एकत्र करके उसमें अपनी अनामिका उंगली का रक्त तथा कान का मैल मिलाकर अच्छी तरह मिश्रण बना लें। इस मिश्रण को सिद्ध किए गए मंत्र से सात बार अभिमंत्रित करें। इस अभिमंत्रित मिश्रण को जब किसी भी व्यक्ति को खिला देंगे तो वह उसके वशीभूत हो जाएगा।

इस प्रयोग में एक बात का विशेष रूप से ध्यान रखें कि यह मिश्रण विषैला होता है; अतएव बहुत कम मात्रा में ही इसे किसी को खाने के लिए दें, अन्यथा अधिक मात्रा में इसे खाने पर व्यक्ति की मृत्यु तक होने की संभावना रहती है।

सर्वजन वशीकरण मंत्र-4

यह वशीकरण का प्रबल शक्तिशाली मंत्र है। इसकी प्रचंड शक्ति का अनुमान इसी बात से भली प्रकार लगाया जा सकता है कि इसके जप करने से पृथ्वीलोक के ही नहीं, पाताल और स्वर्गलोक तक के प्राणी भी साधक के वशीभूत हो जाते हैं। यह मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ क्लं क्लौं ह्रीं नमः।'

इस मंत्र के ग्रहणकाल में एक हजार जप करने पर पाताल लोक के प्राणी वशीभूत हो जाते हैं। यदि इस मंत्र का जप दस हजार की संख्या में किया जाए तो देवता वशीभूत हो जाते हैं और एक लाख की संख्या में मंत्र-जप करने पर तीनों लोकों के प्राणी वशीभूत हो जाते हैं।

सर्वजन वशीकरण मंत्र-5

इस मंत्र का ग्रहणकाल अथवा शुभ मुहूर्त्त में दस हजार की संख्या में जप करने से यह सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो भगवति चामुण्डे महाहृदय कंपिनि स्वाहा।'

एक पान के बीड़े को इस सिद्ध मंत्र द्वारा अभिमंत्रित करके जिस किसी भी स्त्री-पुरुष को खिला दिया जाए, वह साधक के वशीभूत हो जाता है।

सर्वजन वशीकरण मंत्र-6

इस मंत्र का ग्रहणकाल अथवा किसी शुभ मुहूर्त्त में दस हजार की संख्या में जप करने पर यह सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो भगवते ईशानाय सोमभद्राय वशमानय स्वाहा।'

देबदाली का रस निकालकर उसे सुखा लें, फिर उसे चूर्ण करके किसी कन्या अथवा युवा स्त्री द्वारा उसकी छोटी-छोटी गोलियां बनवाएं। इनमें से एक गोली को इस मंत्र द्वारा अभिमंत्रित करके जिस स्त्री-पुरुष को भी खिला दिया जाए, वह साधक के वशीभूत होकर उसके मनोनुकूल कार्य करने लगेगा।

सर्वजन वशीकरण मंत्र-7

यह मंत्र किसी ग्रहणकाल अथवा शुभ मुहूर्त्त में दस हजार की संख्या में जप करने से सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमः कामाय सर्वजन प्रियाय सर्वजन सम्मोहनाय ज्वल ज्वल प्रज्वालय प्रज्वालय सर्वजस्य हृदयं मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।'

मंत्र सिद्ध हो जाने के बाद इस मंत्र का 108 बार जप करके किसी इच्छित स्त्री-पुरुष के पास पहुंचने पर वह साधक के वशीभूत हो जाता है।

सर्वजन वशीकरण मंत्र-8

इस मंत्र का किसी सिद्धियोग में 108 बार जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय त्रिलोचनाय त्रिपुरवाहनाय 'अमुकं' मम वश्य कुरु कुरु स्वाहा।'

इस मंत्र में प्रयुक्त हुए 'अमुक' शब्द के स्थान पर साध्य स्त्री अथवा पुरुष के नाम का उच्चारण करें। इस सिद्ध मंत्र से एक सुपारी को 108 बार अभिमंत्रित करके उसे साध्य स्त्री अथवा पुरुष को खिला देने पर वह साधक के वशीभूत हो जाते हैं।

सर्वजन वशीकरण मंत्र-9

सबसे पहले किसी रविवार को गुग्गुल, धूप-दीप के साथ इस मंत्र का 21 बार जप करें। इससे यह मंत्र सिद्ध हो जाएगा। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो रुद्राय कपिलाय,
भैरवाय त्रिलोक नाथाय।
ॐ ह्रीं फट स्वाहा।'

यह मंत्र सिद्ध हो जाने पर एक अखंडित लौंग को 108 बार इस सिद्ध मंत्र से अभिमंत्रित करें। जिस व्यक्ति को भी यह अभिमंत्रित लौंग खिलाई जाएगी, वह साधक के वशीभूत हो जाएगा।

सर्वजन वशीकरण मंत्र-10

इस मंत्र का ग्रहणकाल में दस हजार की संख्या में जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं कालिके सर्वान् मम वश्यं कुरु कुरु
सर्वान् कामान् मे साधय साधय।'

यह मंत्र सिद्ध करने के बाद प्रातःकाल इस मंत्र का 21 बार उच्चारण करते हुए जिस स्त्री अथवा पुरुष का नाम लेकर अपने मुख को जल से धोया जाए, वह साधक के वशीभूत हो जाता है। इसके अलावा यदि सिद्ध मंत्र से जल को अभिमंत्रित करके किसी स्त्री अथवा पुरुष को वह जल पिलाया जाए तो वह साधक के वशीभूत हो जाता है।

सर्वजन वशीकरण मंत्र-11

यदि किसी ग्रहणकाल अथवा शुभ मुहूर्त्त में धूप-दीप, नैवेद्य आदि रखकर पहले भगवान् श्रीरामचंद्रजी का ध्यान करते हुए इस मंत्र का 21 दिन तक नित्य 121 की संख्या में जप किया जाए तो यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो आदेश गुरु को!
राजा मोहूं, प्रजा मोहूं, बाह्मण, वाणियां,
हनुमंत रूप में जगत मोहूं तो रामचंद्र पर माणिया।
गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

गांव (शहर) के चौराहे से एक चुटकी-भर धूल-मिट्टी उठा लाएं। उसे सात बार सिद्ध मंत्र से अभिमंत्रित करके अपने माथे पर उसकी बिंदी लगाएं। जो भी स्त्री-पुरुष साधक के मस्तक पर दृष्टिपात करेगा, वही उसके वशीभूत हो जाएगा।

सर्वजन वशीकरण मंत्र-12

इस मंत्र का दीपावली की रात्रि में धूप-दीप देकर और मिष्ठान आदि रखकर 144 बार जप करें। इससे यह मंत्र सिद्ध हो जाएगा। मंत्र इस प्रकार है—

'कामरूदेस कामाख्या देवी तहां बसे इस्माइल जोगी,
इस्माइल जोगी ने दीन्हा बीड़ा।

पहला बीड़ा आतो जाती,
दूजा बीड़ा दिखावे छाती।
तीजा बीड़ा अंग लिपटाय,
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा दुहाई गुरु गोरखनाथ की।'

बिना तराशे हुए तीन पान के पत्तों का मसालेदार बीड़ा बनाएं। इस बीड़े को सिद्ध मंत्र से 7 बार अभिमंत्रित कर लें। यह बीड़ा जिस स्त्री अथवा पुरुष को खिलाया जाएगा, वह वशीभूत हो जाएगा।

सर्वजन वंशीकरण मंत्र-14

इस मंत्र का शनिवार से आरम्भ करके 21 दिन तक नित्य 144 बार जप करें। जपकाल में लोबान की धूप दें और दीप प्रज्वलित करें, साथ ही मदिरा का भोग चढ़ाएं। इस प्रकार मंत्र सिद्ध हो जाएगा। मंत्र इस प्रकार है—

**'कामरूदेस कामाख्या देवी,
तहां बसे इस्माइल जोगी।
इस्माइल जोगी ने लगाई फुलवारी,
फूल बीने लोना चमारी।
जो इस फूल की सूंघे बास,
तिसका जीव हमारे पास।
घर छोड़े घर-आंगन छोड़े,
लोक कुटम की लज्या छोड़े।
दुहाई लोना चमारी की,
दुहाई धनन्तर की छूं।'**

सिद्ध किए गए इस मंत्र द्वारा किसी फूल को सात बार अभिमंत्रित करके जिस स्त्री अथवा पुरुष को यह फूल सुंघा दिया जाए, वह साधक के वशीभूत हो जाता है।

सर्वजन वशीकरण मंत्र-15

इस मंत्र की प्रतिदिन नवरात्रों में एक माला का जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

**'पर मोहूं परजा भी मोहूं,
राजा और नरनारी गुरु गोरखनाथा का कंधा मोहूं।
ज्वाला की अग्यारी राजा की पटरानी मोहूं
और मोहूं दरबारी**

सकल जगत में मंत्र फूंकूं मोहूं दुनिया सारी।
जग जंगम मोहित न होवे तो आवत काली महतारी,
हांक देत नयना जब काढ़े कांपे दुनिया सारी।
जती सती की आन वीर हनुमान की दुहाई,
मंत्र सांचा ओम ओम ओम।'

रात्रिकाल में मां काली की सामान्य पूजा-अर्चना करनी चाहिए और दिन में हनुमानजी पर पांच अगरबत्तियां तथा सायंकाल में हनुमानजी के श्री विग्रह के सम्मुख उड़द के आटे का चौमुखी दीपक प्रज्वलित करना चाहिए। यह प्रयोग नौ दिन निरंतर करते रहना चाहिए। दसवें दिन कन्या भोज और कम-से-कम एक ब्राह्मण को भोजन कराना चाहिए। मंत्र सिद्धि के पश्चात् किसी भी स्त्री अथवा पुरुष की ओर मुख करके मन-ही-मन मंत्रोच्चारण करके फूंक देने से वह स्त्री या पुरुष वशीभूत हो जाता है।

सर्वजन वशीकरण मंत्र-16

ग्रहण काल में इस मंत्र की सिद्धि की जाती है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो उर्वसी सुपारी,
कामनिगारी राजा परजा खरी पियारी।
मंत्र पढ़ि लगाऊं तोहि,
हिया कलेजा लावे तोहि।
जीवता चाटै पगतली मूवा संग मशान,
तो वश्य न होय तो यही हनुमंत की आन।
शब्द सांचा पिंड कांचा,
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

चंद्र ग्रहण के समय पान में प्रयोग होने वाली सुपारी ग्रहण आरम्भ होने से लेकर अंत तक अभिमंत्रित की जाए। यह सुपारी स्त्री वशीकरण में काम आती है। इसी प्रकार की क्रिया यदि सूर्य ग्रहण में की जाए तो वह सुपारी पुरुष वशीकरण में काम आती है। सुपारी पर प्रत्येक बार मंत्र पढ़ने के बाद उसे सीने (हृदय) से लगाना आवश्यक है। इस प्रकार यह सुपारी सिद्ध होने पर यदि इसे किसी स्त्री अथवा पुरुष को खिलाई जाए तो वह साधक के वशीभूत हो जाता है। सुपारी के दाने निकालकर अथवा पान में डालकर भी खिलाए जा सकते हैं।

मंत्र तथा सुपारी सिद्धि के बाद साधक को स्नान-दान आदि करना चाहिए और हनुमानजी पर भोग, रोट, सिंदूर, चोला, ध्वजा आदि से पूजन करते हुए मंत्र सिद्धि की प्रार्थना करनी चाहिए।

सर्वजन वशीकरण मंत्र-17

सात शनिवार और रविवार को 101 बार इस मंत्र का जप करें और दीप प्रज्वलित करके गुग्गुल की धूनी दें। इसके बाद पुष्प तथा मिष्ठान प्रज्वलित दीपक के सम्मुख रखें। इस प्रकार करने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'हाथ पसारूं मुख मलूं, काची मछली खाऊं,
आठ पहर चौंसठ घड़ी, जगमोह घर जाऊं।'

यदि पान का बीड़ा इस सिद्ध मंत्र से अभिमंत्रित करके किसी स्त्री अथवा पुरुष को खिला दे तो वह वशीभूत होकर साधक के मनोनुकूल कार्य करने लगता है।

यदि साधक अपने हाथ की हथेलियों पर सात बार यह मंत्र पढ़कर अपनी हथेलियों को मुंह पर फेरकर किसी स्त्री अथवा पुरुष के सम्मुख जाए तो वह साधक के वशीभूत हो जाता है। इस प्रयोग को करने पर पूरी सभा तक भी वशीभूत हो जाती है।

सर्वजन वशीकरण मंत्र-18

ग्रहणकाल अथवा किसी शुभ मुहूर्त्त में इस मंत्र का आरम्भ करके 21 दिन तक 121 की संख्या में जप करें। इस प्रकार यह मंत्र सिद्ध हो जाएगा। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो काला कलुवा काली रात,
तिसकी पुतली मांजी रात।
काला कलुवा घाट बाट सोती को जगालाव,
बैठी को उठा लाव।
खड़ी को चला लाव,
वेगी घर या लाव।
मोहनी जोहनी चल राजा की ठांव,
अमुकी के तन में चटपटी लगाव।
जीया ले तोड़ जो कोई खाय हमारी इलायची,
कभी न छोड़े हमारा साथ।
घर को तजे बाहर को तजे,
घर के साईं को तजे।
हमें तज और कने जाय तो छाती फाट तुरंत मर जाप,
सत्य गुरु आदेश गुरु की शक्ति मेरी भक्ति।
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा,

ईश्वर महादेव की वाचा।
वाया से टरे तो कुंभी नरक में पड़े।'

यह मंत्र सिद्ध हो जाने के बाद किसी अखंडित इलायची पर 4 बार मंत्र पढ़कर उस पर फूंक मारें। यह अभिमंत्रित इलायची साधक जिस किसी भी स्त्री अथवा पुरुष को खिला दें तो वह साधक के वशीभूत हो, उसके मनोनुकूल कार्य करने लगता है।

सर्वजन वशीकरण मंत्र-19

एक बताशे में चार लौंग पीसकर रखें और उसे गुग्गुल की धूनी देने के बाद अपने होंठ के नीचे दबा लें। फिर पानी में गोता लगाएं। पानी में गोता लगाते समय सात बार इस मंत्र का जप करें। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ जल की जोगनी, पाताल का नाग,
जिस पै भैजूं तिसके लाग।
सोते सुख न बैठे सुख,
फिर फिर देखे मेरा मुख।
मेरी बांधी छूटे,
तो बाबा नाहरसिंह की जटा टूटे।'

अब पानी में से निकलकर मुंह में से बताशा निकालें और बताशे में से लौंग का चूर्ण निकालकर उसे गुग्गुल की धूनी दें। अभिमंत्रित किए गए लौंग के इस चूर्ण को साधक जिस स्त्री अथवा पुरुष को पान में या किसी भी प्रकार से खिला देगा, वह उसके वशीभूत हो जाएगा।

प्रशासनिक अधिकारी वशीकरण मंत्र-1

शनिवार के दिन धूप, दीप और नेवैद्य आदि रखकर देवी पार्वती का ध्यान करें। शनिवार से आरम्भ करके 21 दिन तक नित्य 121 बार इस मंत्र का जप करके सिद्ध कर लें। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो आदेश गुरु को।
जल बांधूं, जलहर बांधूं,
आणी बांधूं बार-बार बांधूं,
शिवपूत प्रचंड बांधूं।
रूठा राजा कांई करसी,
आसण छोड़ मन्ने बैसण देसी।
आसण टीको चंदन ललाट।
टीको काढ़ि सिंह वर्ण कहाऊं और करूं सइया तले में बंध्यान,

गोरा पार्वती बध्याने, मैं बंध्याया।
गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति,
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

यह मंत्र सिद्ध कर लेने के बाद कुमकुम, चंदन तथा गोरोचन को गाय के दुग्ध में मिलाकर इस मंत्र से अभिमंत्रित कर लें। फिर इसी अभिमंत्रित मिश्रण का अपने मस्तक पर तिलक लगाकर जब किसी प्रशासनिक अधिकारी के पास जाएंगे, तो वह वशीभूत हो जाएगा।

प्रशासनिक अधिकारी वशीकरण मंत्र-2

रविवार को अपामार्ग के पुष्प लाएं और इन्हें इस मंत्र से 21 बार अभिमंत्रित करें। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो भास्कराय त्रिलोकात्मने अमुक महीपते मे वश्य कुरु कुरु स्वाहा।'

इस मंत्र में जिस स्थान पर 'अमुक' शब्द आया है, वहां पर उस प्रशासनिक अधिकारी का नाम उच्चारित करें, जिसे वशीभूत करना है।

अभिमंत्रित अपामार्ग के पुष्पों को साधक जिस प्रशासनिक अधिकारी का नाम लेकर अभिमंत्रित करेगा और उसे खिला देगा, वह साधक के वशीभूत हो जाएगा।

प्रशासनिक अधिकारी वशीकरण मंत्र-3

सर्वप्रथम इस मंत्र को किसी सिद्धि पर्व अथवा ग्रहणकाल में एक हजार की संख्या में जप करके सिद्ध कर लें। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ ह्रीं रक्ते चामुंडे अमुकस्य मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।'

यह मंत्र सिद्ध कर लेने के बाद कुमकुम, चंदन और गोरोचन को गाय के दुग्ध में मिलाकर एक मिश्रण तैयार कर लें। इस मिश्रण को सिद्ध किए गए मंत्र से अभिमंत्रित करके इसका अपने मस्तक पर तिलक लगाएं। जब साधक ऐसा करके किसी प्रशासनिक अधिकारी के सामने जाएगा तो वह अधिकारी उसके वशीभूत होकर मनोनुकूल कार्य करने के लिए बाध्य हो जाएगा।

प्रशासनिक अधिकारी वशीकरण मंत्र-4

सर्वप्रथम चौदह रविवार को भगवान् नृसिंह का विधि-विधान से पूजन-अर्चन करके इस मंत्र का 121 बार जप करें। मंत्र इस प्रकार है—

'हथेली तो हनुमंत बसे भैंरू बसे कपार,
नाहरसिंह की मोहनी मोहो सब संसार।
मोहन रे मोहन्ता वीर,

सब वीरन में तेरा सीर।
सबकी दृष्टि बांधि दे मोहि,
तेल सिंदूर चढ़ाऊं तोहि।
तेल सिंदूर कहां से आया,
कैलास पर्वत से आया।
कौन लाया? अंजनी का हनुमंत।
गौरी का गणेश! काला गोरा तोतला तीनों बसे कपाल,
विन्दा तेल से दूर का दुश्मन गया पाताल।
दुहाई कामिया सिंदूर की, हमें देख शीतल हो जाय।
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।
सत्यनाम आदेश गुरु का।'

इसके पश्चात् लगातार सात रविवार तक दीपक, तेल, लोबान और लड्डू रखकर 121 बार इस मंत्र का जप करें। इस प्रकार यह मंत्र सिद्ध हो जाएगा।

इस सिद्ध किए गए मंत्र से सात बार सिंदूर को अभिमंत्रित करें और उस अभिमंत्रित सिंदूर का टीका अपने मस्तक पर लगाएं। इस सिंदूर का टीका लगाकर जब साधक किसी प्रशासनिक अधिकारी के सामने पहुंचेगा तो यदि वह किसी कारणवश क्रोधित अथवा नाराज भी होगा तो प्रसन्न हो जाएगा। यहां तक कि साधक के वशीभूत भी हो जाएगा।

प्रशासनिक अधिकारी वशीकरण मंत्र-5

इस मंत्र को किसी सिद्धिपर्व अथवा ग्रहणकाल में जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ ह्रीं मोहिनी स्वाहा।'

इस मंत्र के सिद्ध हो जाने पर इसके द्वारा जल, फल, फूल अथवा किसी वस्त्र आदि को 108 बार अभिमंत्रित करें। फिर उस अभिमंत्रित जल, फल, फूल अथवा वस्त्र आदि को जब किसी प्रशासनिक अधिकारी के हाथ में दिया जाएगा तो वह साधक के वशीभूत हो जाएगा।

भूत-प्रेत वशीकरण मंत्र

मूल नक्षत्र से आरम्भ करके निरंतर चालीस दिन तक शौच से बचे हुए जल को बबूल के पेड़ की जड़ में डालें और जल डालते हुए 108 बार इस मंत्र का जप करें। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ श्रीं वं वं भूं भूतेश्वरी मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।'

इस प्रकार चालीस दिन तक मंत्र जप करने के बाद इकतालीसवें दिन भूत-

प्रेत सम्मुख प्रकट होकर जल मांगेगा। उस समय भूत-प्रेत से तीन वचन लेकर उसे जलपान कराएं। वचन लेते समय उससे कहें कि जब भी कभी आवश्यकता पड़ेगी तो वह तुरंत याद करते हुए प्रकट हो जाने का वचन दे। इस प्रकार वचन ले लेने के बाद भूत-प्रेत अपना वचन निभाते हैं। इन्हें जब तक इसी विधि के अनुसार जलपान कराया जाता रहेगा, ये भी निरंतर साधक की सेवा करते रहेंगे। जिस दिन भूत-प्रेत को जलपान कराना बंद कर दिया जाएगा, उसी दिन भूत-प्रेत की सेवा भी बंद हो जाएगी।

बेताल-प्रेतराज वशीकरण मंत्र

यह मंत्र ग्रहणकाल में बहुत जल्दी सिद्ध हो जाता है। किसी एकांत स्थान अथवा घर के एकांत कोने में साधक अपने सामने सवा-सवा हाथ के लाल और सफेद कपड़े बिछा लें। इन कपड़ों पर भाव रूप से बेताल और प्रेतराज की भाव-स्थिति करनी चाहिए। लाल कपड़े पर बेताल और श्वेत कपड़े पर प्रेतराज की भाव-स्थिति करनी चाहिए। श्वेत कपड़े पर पंचमेवा, इत्र, चमेली या मोगरा के फूल अर्पित करें। लाल कपड़े पर दाल भात, पंचमेवा या मछली का मांस भोग स्वरूप अर्पित करें। लाल कपड़े पर सिंदूर और सफेद कपड़े पर चमेली का तेल भी रखें। इस सामग्री के साथ मंत्र जप करें। इस प्रकार जप करते रहने से मंत्र सिद्धि हो जाएगी।

मंत्र इस प्रकार है—

'दाल-भात मच्छी को भोग लगाऊं,
बेतालराज को जगाऊं प्रेतराज को मनाऊं।
जालिम हाकिम को मार-मार घसीट-घसीट,
फछीट फछीट फलाने के वशीभूत कर।
न करे तो काल भैंरों की आन पड़े,
मशानिया भैंरों जब ललकारे आग लगे जटा फटे।
सूरज चंदा टूटे फलाने हाकिम की चुटिया पकड़ के,
कारज न कराए तो ताल बेताल न कहाए।
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति ओउम फुरो मंत्र सांचा,
गुरु गोरखनाथ ने वाचा।'

इस मंत्र को सिद्ध करने हेतु प्रयुक्त हुए सिंदूर और चमेली के तेल को मिश्रित कर लें। इस मिश्रण का मस्तक पर तिलक लगाकर साधक जिस स्त्री अथवा पुरुष के सामने पहुंचेगा, वह उसके वशीभूत हो जाएगा।

मंत्र सिद्धि के पश्चात होली और दीपावली की रात्रि में पुनः मंत्र पाठ करके

शक्ति संचय कर लेना चाहिए। जब बेताल या प्रेतराज आए तो भयभीत नहीं होना चाहिए, बल्कि यथा भोग सामग्री अर्पित करते हुए उसका स्वागत करना चाहिए। इसके साथ ही उससे स्मरण करने पर आने और कार्य सिद्ध करने के वचन ले लेने चाहिएं।

साधना में प्रयुक्त सामग्री को कहीं एकांत अथवा श्मशान भूमि में रख आना चाहिए और गाय को चारा, काले कुत्ते को पूए देकर यथासंभव दान-पुण्य भी करना चाहिए।

नारी वशीकरण मंत्र-1

शनिवार के दिन जिस नारी को अपने वशीभूत करना हो, उसके सिर के बाल और उसके बाएं पैर के नीचे की धूल से एक छोटी-सी पुतली का निर्माण करें। फिर उसे नीले कपड़े में लपेट दें तथा उसके योनि स्थल में अपना वीर्य भर दें। इसके बाद उसकी भग में सिंदूर लगाकर उस पुतली को 21 बार इस मंत्र से अभिमंत्रित करें। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो कामाख्या देवी अमुकी मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।'

इस मंत्र में प्रयुक्त हुए अमुकी शब्द के स्थान पर उस नारी के नाम का उच्चारण करें जिसे अपने वशीभूत करना है। इसके बाद इस अभिमंत्रित पुतली को उस नारी के घर के द्वार के बाईं ओर गाढ़ दें। वह नारी जब भी कभी उस पुतली वाले स्थान को लांघेगी, तभी वह साधक के वशीभूत हो जाएगी।

नारी वशीकरण मंत्र-2

यह मंत्र किसी भी ग्रहणकाल में दस हजार बार जप करने पर सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ कामिनी रंजनि स्वाहा।'

यह मंत्र सिद्ध हो जाने के बाद रविवार, गुरुवार और मंगलवार को इन तीन दिनों में जिस नारी की हथेली पर लिखा जाएगा, वह साधक के वशीभूत हो जाएगी।

यदि यह सिद्ध मंत्र अलक्त (अलता) द्वारा किसी नारी की हथेली पर लिखा जाए तो वह साधक के वशीभूत हो जाएगी।

नारी वशीकरण मंत्र-3

किसी शुभ मुहूर्त्त अथवा ग्रहणकाल में दस हजार बार यह मंत्र जप करने पर सिद्धि को प्राप्त होता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ऐं भग भुग भगोदरि भगमाले योनि भगनिपतिनि सर्व भग

संकरी भगरूपे नित्य क्लैं भगस्वरूपे सर्व भगानि मम वश मानस वरदे रेते भग क्लिन्ने क्लान द्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भगविद्ये क्षुध क्षोभय सर्व सत्वाभगे श्वार ऐं क्ल ज व्लू मै व्लू या मलू हे हे क्लिन्ने सर्वाणि भगानि तस्मै स्वाहा।'**

मंत्र सिद्ध करने के पश्चात् जिस नारी को वशीभूत करना है, उसके निकट पहुंचकर और उसकी ओर मुख करके इस सिद्ध मंत्र का जप करने से वह नारी साधक के वशीभूत हो जाती है।

नारी वशीकरण मंत्र-4

किसी शुभ मुहूर्त्त, सिद्धयोग अथवा ग्रहणकाल में इस मंत्र को दस हजार बार जप करके सिद्ध कर लें। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ हुं स्वाहा।'

इस सिद्ध मंत्र से काली विष्णुक्रांता की जड़ को पान में रखकर अभिमंत्रित करें। इसे जिस स्त्री को खिला दिया जाएगा, वह साधक के वशीभूत हो जाएगी।

नारी वशीकरण मंत्र-5

इस मंत्र का किसी शुभ मुहूर्त्त अथवा ग्रहणकाल में दस हजार बार जप करने से यह सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमः क्षिप्रकामिनी अमुकी मे वश मानय स्वाहा।'

मंत्र में प्रयुक्त हुए शब्द अमुकी के स्थान पर उस स्त्री के नाम का उच्चारण करें, जिसे अपने वश में करना है। यह मंत्र सिद्ध करने के पश्चात किसी भी दिन प्रातःकाल पानी से भरा लोटा लेकर दंत धोवन करें। जो पानी लोटे में शेष रहे, उसे इस मंत्र द्वारा सात बार अभिमंत्रित करें और स्वयं ही उसे पी जाएं। यह क्रिया निरंतर सात दिन तक करें। ऐसा करने पर साध्य स्त्री साधक के वशीभूत हो जाएगी।

नारी वशीकरण मंत्र-6

इस मंत्र का किसी शुभ मुहूर्त्त अथवा ग्रहण काल में दस हजार बार जप करने पर यह सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ कुम्भनी स्वाहा।'

इस सिद्ध मंत्र द्वारा किसी सुगंधित पुष्प को 108 बार अभिमंत्रित करें। साधक इस अभिमंत्रित पुष्प को जिस किसी भी स्त्री को सुंघा देगा, वह उसके वशीभूत हो जाएगी।

नारी वशीकरण मंत्र-7

इस मंत्र का किसी शुभ मुहूर्त्त अथवा ग्रहणकाल में दस हजार बार जप करने से यह सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ भगवति भग भाग दायिनी अमुकी मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।'

मंत्र में प्रयुक्त हुए शब्द अमुकी के स्थान पर उस स्त्री के नाम का उच्चारण करें जिसे अपने वशीभूत करना है। यह मंत्र सिद्ध करने के पश्चात् अल्पमात्रा में नमक को इस मंत्र से 21 बार अभिमंत्रित करके भोजन अथवा अन्य भोज्य सामग्री में रखकर किसी स्त्री को खिला दिया जाए तो वह साधक के वशीभूत हो जाएगी।

नारी वशीकरण मंत्र-8

शनिवार के दिन जिस स्त्री की मृत्यु हुई हो, उसके पग-तल के अंगारे को लेकर एक कोरी हांडी में रखें और सात बार उसे इस मंत्र से अभिमंत्रित करें। मंत्र इस प्रकार है—

**'धूली धूली विकट चांदनी,
पट मारूं धूली फिरे दिवानी।
घर तजे, बाहर तजे, ठाड़ो भरतार तजे।
देवी दिवानी एक सठी कलुवा न तू
नाहरसिंह वीर अमुकी ने उठाय ल्याव।
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'**

इस मंत्र में प्रयुक्त हुए अमुकी शब्द के स्थान पर उस स्त्री के नाम का उच्चारण करें जिसे वशीभूत करना है। उस अभिमंत्रित हांडी को जिस किसी भी स्त्री के शरीर से स्पर्श करा दिया जाए, वह साधक के वशीभूत हो जाती है।

नारी वशीकरण मंत्र-9

इस मंत्र का किसी शुभ मुहूर्त्त अथवा ग्रहणकाल में दस हजार की संख्या में जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ पिशाच रुपिण्यै लिंग परिचुम्बयेत्। नामं विसिंचयेत्?'

यह मंत्र सिद्ध हो जाने के बाद इस मंत्र का उच्चारण करते हुए प्रातःकाल 22 बार अपने मुख का प्रक्षालन करके साध्य स्त्री का नाम लेकर याद करें तो वह स्त्री साधक के वशीभूत हो जाती है।

इस सिद्ध मंत्र से सात बार जल को अभिमंत्रित करते हुए यदि यह जल किसी स्त्री को पिला दिया जाए तो वह साधक के वशीभूत हो जाती है।

नारी वशीकरण मंत्र-10

इस मंत्र का रविवार के दिन दस हजार की संख्या में जप करने से यह सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ ठः ठः ठः ठः अमुकी मे वश मानय स्वाहा।
ह्लीं क्लीं श्रीं श्रीं क्लीं स्वाहा।'

इस मंत्र में 'अमुकी' शब्द के स्थान साध्य स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए। मंत्र सिद्ध हो जाने के बाद रविवार को जौ का सवा पाव आटा पीसकर उसे गूंथकर उसकी लोई बना लें। फिर उसे बेलकर उसकी एक रोटी बनाएं और उसे केवल एक ओर से इतना सेंक लें, ताकि वह दूसरी ओर से भी सिकी हुई लगे। जिस ओर से यह रोटी सिकी न हो, उस ओर पानी में सिंदूर घोलकर तर्जनी उंगली के द्वारा रोटी पर लगाएं। उसके ऊपर इस मंत्र को लिखें। इसके बाद गंध, फूल, सुपारी, जल, दीप, गोरे बटुकनाथ और दक्षिणा के साथ उस रोटी का पूजन करें। फिर इस रोटी के ऊपर मिष्ठान, दही और चीनी को इस प्रकार रखें कि रोटी ढंक जाए।

अब जिस स्त्री को वश में करना हो, उसका नाम लेते हुए 108 बार मंत्र का जप करें। फिर मंत्र जप करते हुए रोटी के टुकड़े-टुकड़े करके किसी काले कुत्ते को खिला दें। ऐसा करने से वह स्त्री साधक के वशीभूत हो जाएगी।

इस मंत्र के सम्पूर्ण जपकाल में ब्रह्मचर्य का पूर्ण रूप से पालन करना अनिवार्य है अन्यथा प्रयोग की सफलता संदिग्ध रहती है।

नारी वशीकरण मंत्र-11

इस मंत्र का जप किसी ग्रहणकाल में आरम्भ करके 7 दिन अथवा 21 दिन तक लगातार किया जाना चाहिए और प्रतिदिन एक हजार की संख्या में जप होना चाहिए। इस प्रकार यह मंत्र सिद्ध हो जाता हैं। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो नमः पिशानी रूप त्रिशूलं खंडं हस्ते सिंहारूढ़े
अमुकी के वशमागच्छमागच्छ कुरु कुरु स्वाहा।'

इस मंत्र में प्रयुक्त हुए 'अमुकी' शब्द के स्थान पर उस स्त्री के नाम का उच्चारण किया जाना चाहिए, जिसे वशीभूत करना है। यह मंत्र सिद्ध करने के पश्चात् इसे एक भोजपत्र पर लिखकर जिस स्त्री को वशीभूत करना होता है, उसका नाम लेकर भोजपत्र को धूप दी जाती है। ऐसा करने से साध्य स्त्री साधक के वशीभूत हो जाती है।

नारी वशीकरण मंत्र-12

इस मंत्र का ग्रहणकाल में दस हजार की संख्या में जप करने से यह सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ ह्रीं महामातंगीश्वरी चाण्डालिनी अमुकी पच्च पच दह दह मथ मथ स्वाहा।'

इस मंत्र में प्रयुक्त हुए शब्द 'अमुकी' के स्थान पर उस स्त्री के नाम का उच्चारण किया जाना चाहिए, जिसे वशीभूत करना हो। यह मंत्र सिद्ध करने के बाद रविवार को, जिस स्त्री को वशीभूत करना हो, उसका नाम लेकर दूध तथा शर्करा से होम किया जाए। होम के समय दस हजार की संख्या में मंत्र जप करना चाहिए। ऐसा करने पर साध्य स्त्री साधक के वशीभूत हो जाती है।

नारी वशीकरण मंत्र-13

इस मंत्र का ग्रहणकाल में दस हजार की संख्या में जप करने से यह सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो कट विकट घोर रूपिणी अमुक मे वशमानय स्वाहा।'

इस मंत्र में प्रयुक्त हुए शब्द 'अमुक' के स्थान पर उस स्त्री के नाम का उच्चारण किया जाना चाहिए, जिसे वशीभूत करना है। मंत्र सिद्ध हो जाने के बाद किसी भी रविवार के दिन जब भोजन करें तो उससे पूर्व 108 बार मंत्र को पढ़कर भोजन को अभिमंत्रित कर लें, फिर जिस स्त्री को वशीभूत करना है, उसका नाम लेते हुए भोजन करना आरम्भ करें। भोजन करते समय लगातार उस स्त्री का स्मरण बना रहे। ऐसा करने पर वह स्त्री साधक के वशीभूत हो जाती है।

नारी वशीकरण मंत्र-14

इस मंत्र का किसी ग्रहणकाल में दस हजार की संख्या में जप किया जाए तो यह सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ ह्रीं सः।'

मंत्र सिद्ध हो जाने के बाद जिस स्त्री को वश में करना है, उसके 'स्मर सदन' में अपने 'मदनांकुश' को डालकर यानि सहवास करने की स्थिति में रहते हुए दस हजार की संख्या में मंत्र जप किया जाए तो साध्य स्त्री सदैव के लिए साधक के वशीभूत हो जाती है।

नारी वशीकरण मंत्र-15

होली अथवा दीपावली की रात्रि में लाल अरंड के पेड़ को एक झटके से तोड़ लाएं और उसे जलाकर काजल पारें। इस काजल को इस मंत्र से 21 बार अभिमंत्रित करें। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो काला भैंरूं काली रात,
काला चाला आधी रात।
काला रे तू मेरा वीर,

परनारी ते राखे सीर।
वेगी जा छाती घर ल्याव,
सोतो हो तो जगाय लाव।
शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

इस मंत्र से अभिमंत्रित काजल यदि किसी भी प्रकार साध्य स्त्री की आंखों में लगा दिया जाए तो वह साधक के वशीभूत हो जाएगी।

वेश्या वशीकरण मंत्र

इस मंत्र का किसी ग्रहणकाल में दस हजार की संख्या में जप करने से यह सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ द्राविणी। ॐ हामिले स्वाहा।'

एक सात अंगुल की अपामार्ग की लकड़ी लें और उसे सिद्ध किए हुए मंत्र से सात बार अभिमंत्रित करें। इसके पश्चात् इस लकड़ी को वेश्या के घर में डाल दें तो वह साधक के वशीभूत हो जाएगी।

पति वशीकरण मंत्र-1

इस मंत्र का किसी ग्रहणकाल में 108 बार जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ काम मालिनी ठः ठः स्वाहा।'

इस मंत्र के सिद्ध हो जाने पर गोरोचन को मछली के पित्ते में मिश्रित करके, इस मिश्रण को सिद्ध मंत्र से सात बार अभिमंत्रित कर लें। फिर इस अभिमंत्रित मिश्रण का अपने मस्तक पर तिलक लगाने से पति, पत्नी के वशीभूत हो जाता है।

इसके अलावा कौडिन्य पक्षी की बीट, मांस, घी और अपने शरीर के मल को मिश्रित करके इस मंत्र से अभिमंत्रित करें, फिर इस अभिमंत्रित मिश्रण को गुप्तांग पर लेपन करके सहवास करने से पति, पत्नी के वशीभूत हो जाता है।

पति वशीकरण मंत्र-2

कामाख्या देवी का ध्यान करते हुए इस मंत्र की नवरात्रों में नित्य प्रति एक माला का जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'मात कामच्छा नजर घुमाई,
अमार मनुज को दूसर अऊरत से छोड़ाई।
कऊन कऊन से छोड़ाव,
वेश बण्डी से छोड़ाव।
छोनाल चोण्डाल से छोड़ाव,
ओकली बोकली से छोड़ाव।

ओलाय बोलाय से छोड़ाव,
नोटनी कोटनी से छोड़ाव।
जो न छोड़ाव तो वासी चोण्डाल की सेज पर जाव,
लूणा चमारी को हुकुम भयो,
अमार पुरुष अमार भग को भयो।
दोहाई दोहाई हज्जार दोहाई,
कामच्छा माई लूजा जोगणी को सबद सांचो।'

❑ साधक स्त्री रजोनिवृत्ति के अंतिम दिन मासिक स्राव से भरे कपास को निचोड़कर एक बूंद से भी कम रक्त को इस सिद्ध मंत्र से 21 बार अभिमंत्रित करे। इस अभिमंत्रित रक्त का गुप्त रूप से सहवास के समय पत्नी अपने पति के लिंग पर लेपन करे। इसके बाद सहवास करने से पति, पत्नी के वशीभूत हो जाता है।

❑ सहवास के समय यदि पत्नी इस सिद्ध मंत्र का मन-ही-मन जप करती रहे तो पति, पत्नी के वशीभूत हो जाता है।

❑ पत्नी अपने मासिक स्राव को सिद्ध मंत्र से अभिमंत्रित करके उससे किसी अखंडित पान पर यह मंत्र लिखे और सूर्योदय पर स्नानादि से निवृत्त होकर इस पान को अपने योनि क्षेत्र में बांध ले। सूर्यास्त के बाद इस पान को योनि क्षेत्र से अलग करके किसी ताबीज में भरकर पहन ले तो इससे पति, पत्नी के पूर्णतया अनुकूल हो जाता है।

❑ यदि कोई दुग्धवती स्त्री हो तो वह अपने बाएं स्तन से निकाले गए दूध को इस सिद्ध मंत्र से अभिमंत्रित करके उसका हल्दी, चंदन तथा देवदारू के मिश्रण के साथ एक लेप बनाए। इस लेप का वह स्त्री अपने योनि भाग पर लेपन करे और जब ऐसा करके वह स्त्री पति के साथ सहवास करेगी तो न केवल उसे रति क्रिया में अभूतपूर्व सुख मिलेगा, बल्कि पति भी उसके वशीभूत हो जाएगा।

पति वशीकरण मंत्र-3

इस मंत्र का किसी ग्रहणकाल अथवा शुभ मुहूर्त्त में 108 बार जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो महायक्षिणी पति मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।'

साधक स्त्री अपनी योनि में मासिक स्राव का रक्त, गोरोचन और केले के रस से एक मिश्रण बनाए। इस मिश्रण को स्त्री सिद्ध किए गए मंत्र से अभिमंत्रित करे और उसका अपने मस्तक पर तिलक लगाकर पति के पास जाए। अपनी पत्नी को इस स्थिति में देखकर वह उसके वशीभूत हो जाएगा।

पति-प्रेमी वशीकरण मंत्र

इस मंत्र की नवरात्रों में प्रतिदिन एक माला का जप करने से यह सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो भगवति उग्ररूपिणी
उज्जयिनी महाकालि उसत नर वशीकरण प्रदे,
क्लीं जीवराशि कू आजो मेरे पगतरे करो।
मेरे वश्य वश्य न करो तो आदि भैरव की आण,
रामचन्द्र की आण गुरु असादम।'

इस मंत्र में प्रयुक्त हुए शब्द 'उसत' के स्थान पर उस पुरुष प्रेमी-पति के नाम का उच्चारण करना चाहिए, जिसे वशीभूत करना हो।

❑ यह मंत्र सिद्ध करने के बाद इसकी एक माला का जप करके पान के एक बीड़े पर इसे अभिमंत्रित करें। अभिमंत्रित हुआ पान का यह बीड़ा जिस पति अथवा प्रेमी को खिलाया जाएगा, वह साधक स्त्री के वशीभूत हो जाएगा।

❑ साधक स्त्री शृंगारिक प्रसाधनों यथा क्रीम, पाउडर, लिपिस्टिक आदि को इस सिद्ध मंत्र की एक माला से अभिमंत्रित करे, फिर वह इन वस्तुओं से अपना शृंगार करके पति अथवा प्रेमी के सम्मुख जाए तो वह उसके वशीभूत हो जाएगा।

❑ कर्पूर, चंदन, हरड़, इलायची, मोथा, सहजन और पजस को एक समान मात्रा में लकर पानी के साथ पीस लें। अब इस मिश्रण को इस सिद्ध मंत्र की एक माला से अभिमंत्रित करें। यह मिश्रण (लेप) अत्यंत सुगंधित और सुवासित है। जब कोई स्त्री इस लेप का अपने शरीर पर लेपन करके पति अथवा प्रेमी के पास जाएगी तो वह उसके वशीभूत हो जाएगा।

❑ चंदन, नेत्रबाल, खस, अगर और तेजपात को समान मात्रा में लेकर पानी के साथ पीस लें। इस मिश्रण (लेप) को सिद्ध मंत्र की एक माला से अभिमंत्रित करें। साधक स्त्री जब इस मिश्रण का लेपन करके अपने पति अथवा प्रेमी के सम्मुख जाएगी तो वह उसके वशीभूत हो जाएगा।

❑ नीम के पंचांग (मूल, छाल, फल, फूल और पत्ते) को एक समान मात्रा में लगभग दो-दो तोला लेकर एक लीटर पानी में उबाल लें। उबलते हुए जब यह पानी एक पाव के बराबर रह जाए तो उसे आंच से उतारकर धीरे-धीरे ठंडा होने दें। अब इस क्वाथ को इस सिद्ध मंत्र की एक माला जपकर अभिमंत्रित करें और किसी पिचकारी द्वारा योनि के अंत:भाग को इस क्वाथ से अच्छी तरह प्रक्षालन करें। प्रात: इस प्रक्षालन के बाद पूरे योनि के बाह्य प्रदेश पर नीम की छाल को किसी पत्थर पर घिसकर लेप कर दें। रात्रि में सहवास से पूर्व नीम, हल्दी, गुग्गुल, घी और काला अगरू को समान मात्रा में लेकर धूप तैयार करें। इस धूप से योनि देवी को भली-भांति धूपित करें। चाहे योनि प्रदेश से किसी प्रकार की, कैसी भी तीव्र दुर्गंध क्यों न आती हो, वह बंद हो जाएगी। इस प्रयोग के करने से पति अथवा प्रेमी पूर्णतया साधक स्त्री के वशीभूत हो जाता है।

शत्रु वशीकरण मंत्र

यह मंत्र महावीर हनुमानजी से संबंधित है; अतः उन्हीं के वार मंगलवार से इस मंत्र की सिद्धि हेतु साधना आरम्भ करनी चाहिए। यह साधना यदि किसी एकांत में स्थित हनुमान मंदिर में की जाए तो अधिक फलदायी सिद्ध होती है।

इस मंत्र का किसी एकांत स्थल वाले हनुमान मंदिर में पवन पुत्र हनुमानजी का सिंदूर आदि से पूजन करके मंगलवार से लेकर सोमवार तक सात दिन लगातार एक माला का जप करना चाहिए। इस प्रकार से जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'पवन को पूत अंजनी को जाओ,
राजा रामचन्द्र को हुकुम भयो।
फलाने वैरी को कुनवा मेरो किंकर भयो।
हुकुम अदूली न करे तो
राधोराज को वचन पूरो न करे तो,
अंजनी माता के दूध को लजाए।
शबद सांचा फुरो मंत्र हुम स्वाहा।'

इस मंत्र में प्रयुक्त हुए शब्द 'फलाने' के स्थान पर साधक को अपने शत्रु का नाम उच्चारित करना चाहिए। यह मंत्र सिद्ध हो जाने के पश्चात मंगलवार को गुड़, चना और सवा किलो आटे का एक रोट बनाकर हनुमानजी को चढ़ाना चाहिए। पुजारी को एक थाली में आटा, दाल, घी, शक्कर, नमक, मिर्च और मसाले आदि के साथ यथाशक्ति दान-दक्षिणा देनी चाहिए।

इसके आठ दिन बाद जब साधक भोजन ग्रहण करे तो वह मन-ही-मन इस सिद्ध मंत्र का सात बार उच्चारण करते हुए भोजन केवल हनुमानजी का स्मरण करते हुए ग्रहण करे। शेष भोजन में मंत्रोच्चारण और हनुमानजी का स्मरण आवश्यक नहीं है। यह प्रयोग नित्य करने पर शत्रु साधक के वशीभूत हो जाता है।

यदि किसी कारणवश पहली बार में इस प्रयोग से अपेक्षित सफलता न प्राप्त हो तो साधक को हनुमानजी में श्रद्धा-भक्ति रखते हुए पुनः यह प्रयोग करना चाहिए और सिद्धि हेतु हनुमानजी से विनती करनी चाहिए। साधक को विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए कि वह भगवान श्रीराम में भी अगाध निष्ठा रखे क्योंकि भगवान् राम हनुमानजी के भी आराध्य हैं और जो साधक भगवान् राम में श्रद्धा नहीं रखता, हनुमानजी भी उनके कार्य सिद्ध नहीं करते।

□□

5

स्तम्भन और शाबर मंत्र

स्तम्भन से तात्पर्य यह है कि साधक के सामने जो प्राणी अथवा वस्तु गतिशील है और वह किसी भी रूप में साधक को हानि पहुंचाने या उसका अहित करने के लिए प्रयत्नशील है तो साधक शाबर मंत्रों की सहायता से उसकी गति को स्तम्भित (गतिशून्य) कर देता है। यहां तक कि प्राणी अथवा वस्तु की प्रहारक क्षमता भी कुछ निर्धारित काल के लिए पूरी तरह से विलुप्त हो जाती है और साधक निर्भय-निर्द्वंद्व होकर अपने पथ पर अग्रसर होता रहता है।

शाबर विद्या में स्तम्भन के विभिन्न मंत्र हैं। इनमें शत्रु स्तम्भन, हिंसक पशु स्तम्भन, विषैले जंतुओं का स्तम्भन, अग्नि स्तम्भन, वर्षा स्तम्भन और गर्भ स्तम्भन जैसे अनेक मंत्र शाबर विद्या में भरे पड़े हैं। कुछ विशिष्ट मंत्रों को ही इस अध्याय में प्रस्तुत किया जा रहा है।

शत्रु स्तम्भन मंत्र

यह मंत्र विधि-विधानपूर्वक चामुण्डा माई का नवरात्रों में पूजन करते हुए सिद्ध किया जाता है। आरती में कपूर, भोग में गुड़ और दही का मिश्रण अथवा मदिरा, उड़द के उबले दाने या मांस का प्रयोग करें। नवरात्रों के नौ दिनों में इस मंत्र की नित्य प्रति एक माला का जप करें। इस प्रकार यह मंत्र सिद्ध हो जाएगा। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो नमो नमो चामुण्डा माई,
कालिया भेंरुआ सूकिया समूकिया,
इन्हीं बैरि बला को बांध।
बांध याकूं मुख बांध चित्त बांध,
बुद्धी बांध हाथ बांध पांव बांध।
चीरा चिरमिरी बांध,
आंख नाक कांख अंग-अंग बांध।
जो न बांधे तो चमार को चमरोद
चण्डाली की कुण्डी में गिर।

लोना चमारी की अरज सौ-सौ महाकाल की आन।
अलख निरंजन फू-फू करे,
मेरो बैरी को बैर जरे
मंत्र सांचा पिंड कांचा गुरु की शक्ति।'

यह मंत्र सिद्ध करने के पश्चात् किसी शुभ मुहूर्त्त में नागरमोथा की जड़ को विधि-विधानपूर्वक ले आएं। नागरमोथा प्राय: नदियों में काफी मात्रा में मिलता है। इसकी जड़ बहुत सुगंधित होती है। नागरमोथा की जड़ पर चांदी का तार लपेटते हुए इस सिद्ध मंत्र का उच्चारण करते रहें और चांदी का तार इतना जड़ पर लपेटें कि वह तार से पूरी तरह आच्छादित हो जाए। ऐसा करने के बाद चांदीयुक्त नागरमोथा की जड़ को सामने रखकर अर्द्धरात्रि में सिद्ध मंत्र की एक माला का जप करें।

❑ इसके पश्चात साधक इस चांदीयुक्त नागरमोथा की अभिमंत्रित जड़ को मुख में रखकर जब अपने शत्रु के सम्मुख जाएगा तो शत्रु का मुख स्तम्भित हो जाएगा। उसके मुख से साधक के विरुद्ध आवाज तक न निकल सकेगी। यह प्रयोग न्यायालय आदि स्थानों के लिए अत्यंत लाभप्रद सिद्ध होता है।

❑ चांदीयुक्त इस अभिमंत्रित जड़ को साधक यदि अपनी दाहिनी भुजा में बांध ले तो शत्रु अपने आप में अत्यंत निर्बलता का अनुभव करने लगेगा।

❑ यदि साधक चांदीयुक्त इस अभिमंत्रित जड़ को चंदन के साथ घिसकर अपने मस्तक पर तिलक लगाए तो शत्रु के नेत्र उसे देखते ही पीड़ा से युक्त हो उठेंगे।

❑ शत्रु को सम्मुख देखकर साधक इस सिद्ध मंत्र का मन-ही-मन उच्चारण करते हुए दूर से ही शत्रु की ओर फूंक मार दे तो इससे शत्रु का मन और उसकी बुद्धि जड़ होने लगेंगे और शत्रु के मन से वैर-विरोध के भाव विस्मृत हो जाएंगे।

यदि साधक को किसी कारणवश नागरमोथा की जड़ न उपलब्ध हो सके तो इसके स्थान पर सफेद चौटली की जड़ का भी इसी भांति प्रयोग किया जा सकता है।

शत्रु की बुद्धि-स्तम्भन का मंत्र

इस मंत्र का होली, दीपावली अथवा ग्रहणकाल में दस हजार की संख्या में जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो भगवते शत्रूणां बुद्धि स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा।'

ऊंट की लीद को छाया में सुखा लें, फिर उसमें से एक रत्ती-भर पान में रखकर उसे सिद्ध मंत्र से 108 बार अभिमंत्रित करें। अब साधक यह पान जिस शत्रु-

को खिला देगा, उसकी बुद्धि स्तम्भित हो जाएगी। शत्रु की सोचने-समझने की क्षमता लुप्त हो जाने के कारण वह विक्षिप्त-सा हो जाएगा।

शत्रु के मुख स्तम्भन का मंत्र-1

सर्वप्रथम विधि-विधानपूर्वक हनुमान जी का पूजन करें, फिर एक हजार डली गुग्गुल की लें। प्रत्येक डली को इस मंत्र से अभिमंत्रित करते हुए उसे अग्नि के समर्पित कर दें। इस तरह से यह मंत्र सिद्ध हो जाएगा। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो या वली या वली उसका चश्मा कुलफ उसका
बाजू कुलफ दुश्मन को जेर कर हमको सेर।'

यह मंत्र सिद्ध हो जाने के पश्चात् किसी न्यायालय, सभा अथवा किसी ऐसे स्थान पर जहां कि शत्रु के मुख का स्तम्भन करना हो, इस सिद्ध मंत्र को सात या ग्यारह बार पढ़कर शत्रु की ओर मुख करके फूंक मार दें। तुरंत शत्रु का मुख स्तम्भित हो जाएगा। वह साधक के विरुद्ध किसी भी प्रकार की अनुचित बयानबाजी न कर सकेगा।

शत्रु के मुख-स्तम्भन का मंत्र-2

इस मंत्र की सिद्धि के लिए सर्वप्रथम कपूर के सात हजार टुकड़े लें। किसी शनिवार के दिन से आरम्भ करके सात दिन-रात तक घी का एक दीप जलाएं। नित्य-प्रति फूल-बताशे चढ़ाकर कपूर के एक हजार टुकड़ों को इस मंत्र से अभिमंत्रित करते हुए अग्नि को समर्पित करें। इससे यह मंत्र सिद्ध हो जाएगा। मंत्र इस प्रकार है—

'अलफ अलफ दुश्मन के मुंह में कुलफ मेरे हाथ
कुंजी रूपा रेत कर दुश्मन को जेर कर।'

❑ यदि साधक का किसी न्यायालय अथवा सभा में अपने शत्रु के साथ विवाद चल रहा हो तो वह सिद्ध किए मंत्र को 108 बार पढ़कर शत्रु से बात करे तथा उसकी ओर फूंक मारे। ऐसा करने से शत्रु का मुख स्तम्भित हो जाएगा और वह साधक के विरुद्ध किसी भी प्रकार की अनुचित बयानबाजी न कर सकेगा।

शत्रु के मुख-स्तम्भन का मंत्र-3

इस मंत्र का होली, दीपावली अथवा ग्रहणकाल में दस हजार की संख्या में जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ ह्रीं श्रीं खेतल वीर चौंसठ जोगनी प्रति हार मम
शत्रुन् अमुकस्य मुख बंधनं कुरु कुरु स्वाहा।'

इस मंत्र में प्रयुक्त हुए शब्द अमुकस्य के स्थान पर शत्रु के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

यह मंत्र सिद्ध हो जाने के पश्चात घी तथा शहद की एक हजार आहुतियां अग्नि को समर्पित करें। इसके पश्चात चार अंगुल की कील को इस सिद्ध मंत्र से अभिमंत्रित करके श्मशान में गाड़ दें। ध्यान रखें कि श्मशान में कील गाड़ते समय भी सिद्ध मंत्र का उच्चारण करते रहें। ऐसा करने से शत्रु का मुख स्तम्भित हो जाएगा और वह साधक के विरुद्ध किसी भी प्रकार की अनर्गल बयानबाजी न कर सकेगा।

बाघ को स्तम्भित करने का मंत्र-1

इस मंत्र द्वारा चार कंकड़ियों को तीन बार मंत्र पढ़कर अभिमंत्रित करें। मंत्र इस प्रकार है—

'बैठी बठा कहा चल्यौ पूर्व देश चल्यौ
आंख बांध्यौ तीनों कान बांध्यौ तीनों मुंह बांध्यौ
मुंह केत जिह्वा बांध्यौ अधौ डांड बांध्यौ
चारिउ गोड़ बांध्यौ तेरी पूंछि बांध्यौ
न बांध्यौ तो मेरी आन गुरु की आन
वज्र डांड बांध्यौ दोहाई महादेव-पार्वती की।'

इस मंत्र से अभिमंत्रित चारों कंकड़ियों को चारों दिशाओं में डालकर स्वयं उसके बीच में बैठ जाएं। ऐसा करने से बाघ पास भी नहीं फटकेगा। किसी जंगल आदि में बाघ से सामना हो जाने पर यह मंत्र बड़ा ही कारगर सिद्ध होता है।

बाघ को स्तम्भित करने का मंत्र-2

इस मंत्र का लगातार सात मंगलवार को 108 बार जप करने से यह सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'बघ बांधूं बघायन बांधूं,
बघ के सातो बच्चा बांधूं,
राह-घाट मैदान बांधूं,
दुहाई वासुदेव की,
दुहाई लोना चमारी की, छू।'

कहीं किसी भी स्थान पर बाघ के मिल जाने की स्थिति में इस सिद्ध मंत्र को तीन बार पढ़कर बाघ की ओर मुख करके फूंक मार देने से बाघ स्तम्भित हो जाता है। वह आक्रमण करने के बजाय अपना मार्ग बदलकर दूसरी ओर को चला जाता है।

बाघ को स्तम्भित करने का मंत्र-3

इस मंत्र का होली, दीपावली अथवा ग्रहणकाल में दस हजार की संख्या में जप करने से यह सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ सत्य माता शंकर पिता शंकर किला चारिउ दिशा, जहां-जहां मैं शंकर जाइ, तहां-तहां मेरी किंकर जाइ, जहां-जहां मेरी दीठि तहां-तहां मेरी मूठि, जहां-जहां मेरी नाद को शब्द सुनि आवे हो नरसिंह वीर माता बाघेश्वरी को दूध हराम कर कहौ कवन कवन किलोवान पुर्वान पुंगली और शार्दूल केशरि तेंदुआ सोनहार अधि आगाधिया अटिआर दूदिआर हरिआर काठिपठि पराधिता चलि घेरिये ते नहिन आरे अवनि किलौ नारसिंह वीर किलै कछु कवन कवन किलौगाइका जाया भद्र सिक भेड़ी का जाया घोड़ी का जाया छेरी का जाया दुइ यावचौ पावक घाउ लागइ शिव महादेव को जटा के घाव लागे पार्वती के वीर चूके, हांके हनुमंत बरावे भीमसेनी मंत्रे बांधे जो वाये सीम।'

मंत्र सिद्ध हो जाने के बाद यदि साधक किसी जंगल आदि की ओर जा रहा हो और उसे मार्ग में बाघ मिल जाए तो वह इस सिद्ध मंत्र का दस बार जाप करे। इसके बाद वह धरती पर फूंक मारकर वहां की मिट्टी को अपने पूरे शरीर पर मल ले अथवा स्वयं ही धरती पर लेटकर उस मिट्टी को अपने शरीर से स्पर्श कराए। ऐसा करने पर बाघ उसे देखते ही स्तम्भित हो जाएगा और साधक पर हमला करना भूल जाएगां।

सर्प-स्तम्भन का मंत्र-1

इस मंत्र का महाशिवरात्रि से दूसरी शिवरात्रि तक रात्रिकाल में ही लगभग चालीस-पैंतालीस मिनट तक जप करें। इस प्रकार जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'बजरी बजरी बजर किवाड़,
बजरा कीलूं आर-पार।
मरे सांप होई खाक।
मेरा कीला पत्थर कीलै,
पत्थर फूटे न कीला छूटै।
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति,
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।'

इस मंत्र के सिद्ध हो जाने पर उपलों की राख को सात बार इस सिद्ध मंत्र से अभिमंत्रित करें। फिर इस अभिमंत्रित राख को किसी सर्प के ऊपर डाल दें तो उसकी गति अवरुद्ध हो जाएगी, यानि इस अभिमंत्रित राख के अपने ऊपर पड़ते ही वह स्तम्भित हो जाएगा। प्रायः सर्प पकड़ने वाले सर्प को इसी प्रकार सिद्ध शाबर मंत्रों की सहायता से ही स्तम्भित करके पकड़ते हैं।

सर्प स्तम्भन का मंत्र-2

इस मंत्र को पढ़कर यदि तीन बार जोर-जोर से ताली बजाई जाए तो जहां तक ताली की आवाज पहुंचेगी, उस दायरे के सर्प स्तम्भित हो जाएंगे। यह मंत्र दो श्लोकों के रूप में है। ये श्लोक इस प्रकार हैं—

'सर्पायसर्प भद्रं ते दूर गच्छ महाविष।
जन्मेजयस्य यज्ञान्ते आस्तिक्यवचनं स्मर॥
आस्तिक्य वचनं स्मृत्वा यः सर्पो न निवृत्तेते।
सप्तधाभिद्यते मूर्ध्नि वृक्षात्पक्वफलं यथा॥'

इस मंत्र का उपयोग वहां पर अत्यधिक किया जाता है, जहां पर सर्पों के दंश का अधिक भय होता है। इस मंत्र की सहायता से आस-पास के सभी सर्पों को एक साथ स्तम्भित किया जा सकता है।

सर्प स्तम्भन का मंत्र-3

महाशिवरात्रि से दूसरी शिवरात्रि तक रात्रिकाल में लगभग चालीस-पैंतालीस मिनट तक इस मंत्र का जप करें। इस तरह जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ओम नमो सर्पा रे तू थूल मथूल,
मुख तेरा बना कमल का फूल।
तेरी भुआ दादी बिन तोहे गोद खिलाया,
सर्पा बांधू तेरा रतनकटोरा जामे तोकूं दूध पिलाया।
बीज कीलनि बीज पाग,
मेरा कीला करे जू घाव,
तो तेरी डाढ़ भस्म हो जाए।
गुरु गोरख भी लजाए,
ओउम नमो आदेश गुरु को।
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति,
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

इस मंत्र को सिद्ध करने के पश्चात किसी छोटी-सी कंकड़ी पर यह सिद्ध

मंत्र पढ़कर फूंक मारें। सिद्ध मंत्र से अभिमंत्रित यह कंकड़ी जब किसी सर्प की ओर फेंकी जाएगी तो वह स्तम्भित हो जाएगा।

सर्प, चोर तथा नाहर आदि के स्तम्भन का मंत्र

इस मंत्र का किसी शुभ मुहूर्त्त अथवा ग्रहण काल में 1008 बार जप करने से यह सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'फरीद चले परदेश को कुत्तुबजी के भाव,
सांपां चोरां नाहरां तीनों दांत बंधाव।'

यह मंत्र सिद्ध हो जाने के पश्चात रात्रिकाल में, जहां पर इन तीनों के आने का भय रहता हो, यह सिद्ध मंत्र तीन बार पढ़ें। मंत्र पढ़ने के बाद जोर से तीन बार ताली बजा दें। जितनी दूर तक ताली की आवाज जाएगी, उतनी ही दूर तक के सर्प, चोर और नाहर आदि स्तम्भित हो जाएंगे, अर्थात् वे किसी भी प्रकार से मंत्र साधक को हानि नहीं पहुंचा पाएंगे।

चूहे स्तम्भित करने का मंत्र

प्रात:काल स्नानादि से निवृत्त हो, हल्दी की पांच गांठें लें। हल्दी की ये पांच गांठें तथा थोड़े-से चावल लेकर इन्हें इस मंत्र से पांच बार अभिमंत्रित करें। मंत्र इस प्रकार है—

'मूशा चूहा कुम्भ कराई,
जबही पठवी तबही जाई।
मूश के ऊपर मूशक फेट,
तू जाइ काटहु आन के खेत।
गौरा पार्वती की दुहाई,
महादेव की आज्ञा।'

अभिमंत्रित हल्दी की गांठ और चावलों को घर अथवा खेत में जहां भी चूहे हों, डाल दें। इससे चूहे स्तम्भित हो जाएंगे। वे या तो घर-खेत को छोड़कर चले जाएंगे या फिर कोई हानि पहुंचाने के बजाय निष्क्रिय हो जाएंगे। इस प्रकार सभी चूहे सहज ही घर-खेत से समाप्त हो जाएंगे।

टिड्डी दल को स्तम्भित करने का मंत्र-1

होली, दीपावली अथवा किसी ग्रहणकाल में इस मंत्र का 1008 बार जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ओम नमो आदेश गुरु को।
अजर कीलनी वज्र का ताला,

की लूं टीडी धरूं मसान।
धर मार धरती सो मार सवा अंगुल पांख धरती में गड़े,
ऊपर मोहम्मद वीर की चौकी चढ़े।
पथ धरती चाटे खाई,
बाएं हाथ में ल्हे हाथ में उठाव।
मेरा गुरु उठावे तो उठने और चक्रसों उठे,
तो दुहाई गुरु गोरखनाथ की फिरे आदेश गुरु को।'

इस सिद्ध मंत्र को एक ठीकरी पर सात बार पढ़ें। इस अभिमंत्रित ठीकरी को, जिस खेत में टिड्डी दल आ बैठा हो, उसमें डाल दें। ऐसा करने से पूरा टिड्डी दल स्तम्भित होकर रह जाएगा और वह फसल को किसी प्रकार का नुकसान न पहुंचाने पाएगा।

टिड्डी दल को स्तम्भित करने का मंत्र-2

होली, दीपावली अथवा ग्रहणकाल में इस मंत्र का 1008 बार जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो आदेश गुरु को।
अजर बांधूं बजर बांधूं बांधूं दसो द्वार,
लोह का कोड़ा हनुमत ठोंक्या धरती का घाले घाव।
तेरी टीडी भस्मत हो जाइ,
कीली टी डी कीलूं नाला,
उ र ठोकूं वज्र का ताला।
नीचे भैंरूं किलकिले ऊपर हनुमत गाजे,
हमारी सींव में अन्न पाणी भखे तो गुरु गोरखनाथ लाजे।
शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

इस मंत्र को सिद्ध करने के पश्चात एक ठीकरी पर सात बार पढ़ें। जिस खेत में टिड्डी दल आ बैठा हो, यह ठीकरी उस खेत में डाल दें। इस सिद्ध मंत्र से अभिमंत्रित ठीकरी के खेत में डालते ही पूरा टिड्डी दल स्तम्भित हो जाएगा। फिर वह खेत की फसल को किसी भी प्रकार का नुकसान नहीं पहुंचा पाएगा।

टिड्डी दल को स्तम्भित करने का मंत्र-3

होली, दीपावली अथवा ग्रहणकाल में इस मंत्र का 1008 बार जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो आदेश गुरु को।
आकाश की जोगिनी पाताल की आदि शक्ति माई,

पश्चिम देस सों आई गोरखनाथ आकाश को चलाई।
पश्चिम देस मझ में कूवा,
जहां भवानी जन्म तेरा हूवा।
टीडी उपजी सुर्ग समाई,
जब टीडी गोरख ने बुलाई।
एक जाई तांबा वैसी एक जाई रूपा,
वैसी एक जाई सोना वैसी एक जाई छोड़ छड़ानी।
बकरा दंत में डंक दंत सरपा दंतादि,
दंत अन्न छोड़ वन को खाव।
धूल छोड़ आकाश लग जाव।
स्वेत कूकड़ो मझ की धार,
टीडी चली समंदर पार।
हुंकारे हनुमंत बुलावे भीम,
जा टीडी पैला को सीम।
मेरी सीम में खाय अन्न-पाणी तो गुरु गोरखनाथ लाजे,
माई भवानी, भवानी का घड़ कूंजे।
जो मेरी सींव में अन्न-पाणी भावेगी,
तो दुहाई जैंपाल चकवे की फिरेगी।'

यह मंत्र सिद्ध करने के बाद एक सफेद मुर्गी और मदिरा को इस मंत्र से सात बार अभिमंत्रित करें। इसके पश्चात इन दोनों अभिमंत्रित वस्तुओं को अपने खेत की भूमि से स्पर्श कराते हुए कहीं दूर रख आएं। ऐसा करने से खेत की फसल पर पड़ने वाला टिड्डी दल स्तम्भित हो जाएगा और फसल को किसी प्रकार का नुकसान न पहुंचाएगा। यह टिड्डी दल फिर कुछ समय के पश्चात स्वयं ही इस खेत की सीमा को छोड़कर कहीं दूर चला जाएगा।

टिड्डी दल को स्तम्भित करने का मंत्र

होली, दीपावली अथवा ग्रहणकाल में इस मंत्र का 1008 बार जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो पश्चिम देश अस्ताचल हूवा,
जहां अजैपाल ने खुदाया कूवा।
जा कूवा में निकला नीर,
जहां भेला हुआ बावन वीर।
जा ने मिल कर मता उपाया,

हाथ पकड़ टीडी कूं लाया।
सुमरे टीडी बांधूं डाढ़,
जमीं आसमान बीच रहस्यो गाढ़।
उतरे तो तेरी परले बांधूं,
चढ़े आसमान तो सर ले साधूं।
तीजा तेरा जाया पाऊं,
बारा कोस में काम कराऊं।
इहि विधि बिचरे बावन वीर,
जा डारा समुद्र के तीर।
मेरी सीम पर हनुमत गाजे,
इहि विधि चलाई न चलेगी तो गोरख लाजे।
शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

यह मंत्र सिद्ध करने के पश्चात एक ठीकरा लेकर उस पर तीन बार इस मंत्र को पढ़ें, फिर उस पर अपनी कनिष्ठा उंगली का रक्त लगाएं। जब कभी यह देखें कि टिड्डी-दल उड़ता हुआ आ रहा है और वह आपके खेत पर बैठने वाला है तो यह सिद्ध मंत्र से अभिमंत्रित ठीकरा लेकर पैदल अथवा किसी घोड़े या वाहन पर सवार होकर खेत की सीमा से दूर की ओर चल पड़ें। ऐसा करने से यह टिड्डी दल स्तम्भित हो जाएगा और जिस ओर साधक चलेगा, टिड्डी दल भी खेत की सीमा से दूर उसी ओर चल पड़ेगा। इस प्रकार टिड्डी दल से नष्ट होने वाली फसल की रक्षा हो जाएगी।

शस्त्र की धार स्तम्भित करने का मंत्र-1

साधक द्वारा इस मंत्र का किसी शुभ मुहूर्त्त अथवा ग्रहणकाल में दस हजार की संख्या में जप करने पर यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'धार धार खण्ड धार धार बांधूं तीन बार उड़े लोह
ना लागे घाव सीर राखे श्री गोरखराय लोह का कड़ा
मूंज का बाण, हनुमत मेल्ही लाल यह पिंड लागे न
पैनी धार, शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

इस मंत्र को सिद्ध करने के पश्चात थोड़ी-सी मिट्टी लेकर उसे सात बार सिद्ध मंत्र से अभिमंत्रित कर लें। फिर इस अभिमंत्रित मिट्टी को अपने शरीर पर मल लें। अब जो भी शस्त्र साधक के शरीर को स्पर्श करेगा, उसकी धार स्तम्भित होकर रह जाएगी, अर्थात् किसी भी शस्त्र की धार साधक को हानि न पहुंचा पाएगी।

शस्त्र की धार स्तम्भित करने का मंत्र-2

किसी शुभ मुहूर्त्त अथवा ग्रहणकाल में इस मंत्र का दस हजार की संख्या में जप करने से यह सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'जहिया लोह तीर शिर जाका घाव मासकर जानि हिया
आनन्त सोचर करहु मैं बांधौं धार-धार मूठि धनि
दूनौ तारि ठढीही मोहिन अडाफाटिहि चण्डी दीन्हि
वर मोहिं धार जेठठै तोरिरइ ईश्वर महादेव की दुहाई
मोरे पथ न आउ धार धार बांधौं लेहु उठे धार फुटै
मुनै फुटै मोरि सिद्धि गुरु के पांव शरण।'

थोड़ी-सी मिट्टी लेकर इस सिद्ध मंत्र से उसे सात बार अभिमंत्रित करें। इस अभिमंत्रित मिट्टी को साधक अपने शरीर पर अच्छी तरह मल ले। ऐसा करने के बाद जो भी शस्त्र साधक के शरीर को स्पर्श करेगा, उसकी धार स्तम्भित हो जाएगी और वह किसी भी प्रकार साधक को कोई क्षति न पहुंचा सकेगा।

तलवार की धार स्तम्भित करने का मंत्र

इस मंत्र का किसी शुभ मुहूर्त्त अथवा ग्रहणकाल में दस हजार बार जप करने से यह सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ धार धार अधर धार धार,
बांधूं सात बार।
कटे न रोम ना भीजे चीर,
खांडा की धार ले गयो हनुमंत वीर।
शब्द सांचा पिंड कांचा,
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।'

थोड़ी-सी मिट्टी लेकर इस सिद्ध मंत्र से उसे सात बार अभिमंत्रित करें और इस मिट्टी को अपने पूरे शरीर पर अच्छी तरह मल लें। अब यदि साधक के शरीर पर तलवार का वार किया जाए तो तलवार की धार साधक को कोई भी क्षति पहुंचाने में विफल रहती है। इसका कारण यह है कि साधक के शरीर का स्पर्श पाते ही धार स्तम्भित हो जाती है।

धनुष स्तम्भन का मंत्र

किसी शुभ मुहूर्त्त अथवा ग्रहणकाल में इस मंत्र का 1008 बार जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ सार सार माहासारसो बांधौ तीनि धार न धरै चोट
न पर घाव रक्षा करे श्री गोरखराउ।'

यह मंत्र सिद्ध हो जाने पर पृथ्वी से एक चुटकी मिट्टी लें और उसे सात बार इस सिद्ध मंत्र से अभिमंत्रित करके धनुष पर डाल दें। धनुष अभिमंत्रित हो जाएगा। उससे भले ही कितना भी प्रयास क्यों न करें, तीर नहीं छूटेगा।

तोप स्तम्भन का मंत्र

इस मंत्र का किसी शुभ मुहूर्त्त अथवा ग्रहणकाल में दस हजार की संख्या में जप किया जाए तो यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो आदेश गुरु को
जल बांधूं जलवाई बांधूं बांधूं ताखी ताई
सवा लाख अहेड़ी बांधूं गोला चले तो हनुमंत जती की दुहाई,
शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

यह मंत्र सिद्ध हो जाने के बाद गाय के दूध से भरे एक घड़े को सात बार अभिमंत्रित करें। इस घड़े को यदि तोप के मुंह पर पटक दिया जाए तो तोप अभिमंत्रित होकर स्तम्भित हो जाएगी और उसकी नाल से गोला बाहर न निकलेगा।

शस्त्रास्त्र के स्तम्भन का मंत्र

इस मंत्र का होली, दीपावली अथवा ग्रहणकाल में दस हजार की संख्या में जप करने से यह सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'बांधो तूपक अवनि वार न धरै चोट न परै घाउ
करे श्री गोरखराउ।'

इस मंत्र को सिद्ध करने के पश्चात थोड़ी-सी मिट्टी लेकर उसे सात बार सिद्ध मंत्र से अभिमंत्रित कर लें। फिर इस अभिमंत्रित मिट्टी को अपने शरीर पर मल लें। अब जो भी शस्त्रास्त्र साधक के शरीर को स्पर्श करेगा, उसकी प्रहारक क्षमता स्तम्भित हो जाएगी, अर्थात् किसी भी शस्त्रास्त्र का प्रहार साधक को कोई क्षति न पहुंचा सकेगा।

पत्थर के स्तम्भन का मंत्र

होली, दीपावली अथवा ग्रहणकाल में इस मंत्र का 1008 बार जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'समुद्र समुद्र में दीप दीप में कूप,
कूप में कुई जहां ते चले हरिहर।
परे चारों तरफ बरावत चला हनुमत बरावत,
चला भीम ईश्वर गौरी चला, भोला ईश्वर
भानि मठ में जाई, गौरा बैठी द्वारे न्हाय।

ठपकै नउद परे न बोला राजा इंद्र की दुहाई,
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

इस मंत्र को सिद्ध करने के पश्चात यदि साधक ऊपर से गिरते हुए पत्थर की ओर मुख करके यह मंत्र उच्चारित कर देगा तो वह पत्थर अभिमंत्रित होकर स्तम्भित हो जाएगा, अर्थात् उसका गिरना रुक जाएगा और वह साधक को चोट नहीं पहुंचा पाएगा।

अग्नि स्तम्भन का मंत्र-1

यह मंत्र नवरात्रों में सिद्ध किया जाता है। इस मंत्र की सिद्धि के लिए नवरात्रों के नौ दिनों में प्रतिदिन मंत्र की एक माला का जप किया जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो अग्नि अग्नि ज्वालामुखी माई,
हमने मनाई शंकर करे सहाई।
अग्नि शीतल हो जाई,
माता पार्वती की दुहाई,
लूणा चमारिन की दुहाई।
गुरु गोरखनाथ वाचा शब्द सांचा,
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

यह मंत्र सिद्ध करने के पश्चात एक लोटे में रस्सी बांधकर किसी कुएं से जल निकालें। इस बात की सावधानी रखनी चाहिए कि इस लोटे की रस्सी और यह लोटा पृथ्वी से स्पर्श न हो। इसलिए कुएं से जल खींचते समय रस्सी को नीचे गिराते रहने के बजाय अपने हाथ पर लपेटते रहना चाहिए। अब इस जल को इस सिद्ध मंत्र से तीन बार अभिमंत्रित करें।

जहां भी कहीं आग का प्रकोप फैल रहा हो, इस सिद्ध मंत्र का जप करते हुए लोटे के अभिमंत्रित जल को थोड़ा-थोड़ा वहां पर छिड़क दें। इस जल के छिड़कते ही तुरंत वहां की अग्नि का स्तम्भन हो जाएगा। इस प्रकार शीघ्र ही अग्नि के प्रकोप को रोका जा सकता है।

अग्नि स्तम्भन का मंत्र-2

नवरात्रों के नौ दिनों में प्रतिदिन इस मंत्र की एक माला का जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'काची हांडी काचौ पाली,
ऊपर वज्र की थाली।
नीचे भैंरू किलकिलाय ऊपर नृसिंह गाजे,

जो इस हांडी को आंच लगे तो अंजनीपुत्र लाजे।
दुहाई हनुमंत जती की,
दुहाई अंजनी के पुत्र की।
शब्द सांचा पिंड कांचा,
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

यह मंत्र सिद्ध करने के पश्चात सात बार मंत्र पढ़कर अग्नि की ओर फूंक मार देने से अग्नि स्तम्भित हो जाती है। फिर चाहे कितनी भी अग्नि प्रज्वलित की जाए, उसमें ताप नहीं रहता, अर्थात् उसकी जलाने की स्वाभाविक प्रकृति विलुप्त हो जाएगी।

अग्नि स्तम्भन का मंत्र-3

दीपावली की रात्रि में इस मंत्र का एक हजार बार जप करने से यह सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

**'जल बांधूं जलबाई बांधूं,
जमीं बांधूं अग्नी को बांधूं,
लपट झपटकर तुरतहि बांधूं।
मेरो बांधे बंधे नहीं तो
महावीर हनुमान उचारूं,
दुहाई लोना क़ी, दुहाई ज्वालादेवी की।'**

मंत्र सिद्धि के समय जप करने से पूर्व एक हवनकुंड तैयार करें और मिट्टी के सकोरे में घी भरकर अंगूठे के बराबर मोटी कपास की बत्ती डाल दें। इस घी के दीपक को प्रज्वलित करें। यह दीपक तब तक लगातार जलता रहना चाहिए, जब तक कि जप पूरा न हो जाए; अत: दीपक के लिए पहले से ही घी का प्रबंध पर्याप्त मात्रा में करके अपने पास रख लेना चाहिए।

जब पांच सौ की संख्या में मंत्र का जाप हो जाए तो कभी भी दीपक की लौ नीलवर्ण की हो सकती है। लौ के नीलवर्ण होते ही हवनकुंड में पान, बताशे, कपूर और पंचमेवा अर्पित कर देने चाहिए। साथ ही मंत्र सिद्धि की प्रार्थना करते ही जप समाप्त कर देना चाहिए। इस प्रकार यह मंत्र सिद्ध हो जाता है।

जब किसी स्थान पर अग्नि प्रकुपित हो जाए तो साधक इस मंत्र को जपते हुए उस स्थान की परिक्रमा करे। ऐसा करने से अग्नि स्तम्भित हो जाएगी और फिर शीघ्र ही अग्नि का प्रकोप शांत हो जाएगा।

अग्नि स्तम्भन का मंत्र-4

नवरात्रों के नौ दिनों में इस मंत्र की प्रतिदिन एक माला का जप करने से यह

मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'अज्ञान बांधौ विज्ञान बांधौ बांधौ घोराघाट, आठ कोटि बैसंदर बांधौ अस्त हमारा भाई। आनहि देखे झझके मोहिं देखि बुझाइ। हनुमंत बांधौ पानी होइ जाइ अग्नि भवेते के भवे जसमत्तो हाथी होइ बैसंदर बांधौ नारायण साखि मोरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

यह मंत्र सिद्ध हो जाने के पश्चात् सात बार मंत्र पढ़कर अग्नि की ओर मुख करके फूंक मार देने से अग्नि स्तम्भित हो जाती है। अग्नि का ताप और उसकी जलाने की स्वाभाविक प्रकृति विलुप्त हो जाती है।

अग्नि स्तम्भन का मंत्र-5

इस मंत्र की नवरात्रों के दिनों में प्रतिदिन एक माला के अनुसार नौ मालाओं का जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

**'हिमाचलस्योत्तरे पार्श्वे मारीयो नाम राक्षसाः।
तस्य मूत्र पुरीषाभ्यां हुताशं स्तम्भयानि स्वाहा।'**

यह मंत्र सिद्ध करने के पश्चात एक लोटे में रस्सी बांधकर किसी कुएं से जल निकालें। इस बात की सावधानी बरतनी चाहिए कि इस लोटे की रस्सी और यह लोटा पृथ्वी पर न टिके। इसी कारण कुएं से जल खींचते समय रस्सी को नीचे गिराते रहने के बजाय अपने हाथ पर लपेटते रहना चाहिए। अब इस जल को इस सिद्ध मंत्र से तीन बार अभिमंत्रित करें।

जहां भी कहीं आग का प्रकोप फैल रहा हो, इस सिद्ध मंत्र का जप करते हुए लोटे के अभिमंत्रित जल को थोड़ा-सा वहां पर छिड़क दें। इस जल के छिड़कते ही तुरंत वहां की अग्नि का स्तम्भन हो जाएगा। फिर शीघ्र ही अग्नि के प्रकोप को रोका जा सकता है।

हांडी स्तम्भन का मंत्र

किसी चौराहे से सात कंकड़ियां उठाकर लाएं। प्रत्येक कंकड़ी पर सात-सात बार मंत्रों का जप करें। मंत्र इस प्रकार है—

'खनाह की माटी चरी का पानी गध चढ़ि भीख पलानी काची पाली ऊपर जड़ी वज्र की ताली तुले भैंरों किलकिलै ऊपर नरसिंह गाजे। मेरी बांधे हांडी उकल तो गुरु गोरखनाथ की लाज। शब्द सांचा पिंड कांचा। फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा ।'

इस मंत्र से अभिमंत्रित सातों कंकड़ियों को हांडी से स्पर्श कर देने से वह

स्तम्भित हो जाती है। फिर चाहे कितनी ही तेज आग जलाई जाए, हांडी गर्म नहीं होगी और उसमें पकने वाली सामग्री में उबाल न आएगा।

अग्नि-मुक्ति का मंत्र

यदि अग्नि-स्तम्भन मंत्र द्वारा अग्नि को स्तम्भित किया गया है तो शाबर विद्या में अग्नि को मुक्त करने का मंत्र भी है। इस मंत्र के उच्चारण और इसके नियमानुसार प्रयोग से स्तम्भित अग्नि पुनः मुक्त होकर तापयुक्त और अपनी स्वाभाविक ज्वलनशील प्रकृति को प्राप्त कर लेती है।

इस मंत्र को होली, दीपावली अथवा ग्रहणकाल में सिद्ध किया जाता है। निर्धारित काल में इस मंत्र का 1008 की संख्या में जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'अग्नि भवते के भवे जशमदमती परं पिण्ड दुःख पावै दोहाई नरसिंह जग दुःख पावे।'

इस सिद्ध मंत्र को सात बार पढ़कर फूंक मारने से अग्नि का स्तम्भन मुक्त हो जाता है और अग्नि का ताप तथा ज्वलनशील प्रकृति पुनः लौट आती है।

मेघ-स्तम्भन का मंत्र

यदि शाबर-साधक हो रही वर्षा को रोकना चाहता है तो वह अपनी मंत्रशक्ति के द्वारा ऐसा कर सकता है। यद्यपि शाबर-साधक प्रकृति के विरुद्ध कार्य करने के लिए सरलता से तैयार नहीं होते, तथापि यदि उनके विशेष कार्य अवरुद्ध हो रहे हों और समय की धारा के साथ चलने के लिए उन्हें विपरीत परिस्थिति को अनुकूल बनाना पड़ता है तो वे किसी भी प्रकार की चुनौती से टकराने के लिए हर पल तैयार रहते हैं। यदि दैवीय आपदाएं उनका मार्ग या कार्य अवरुद्ध करने लगें तो वे सहज ही इन्हें अपने अनुकूल बनाने की क्षमता रखते हैं। 'मेघ-स्तम्भन' कुछ ऐसा ही कार्य है। यदि वर्षा का वेग बढ़ता जा रहा हो और शाबर मंत्रों के साधक उस समय कोई अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पन्न करने जा रहे हों तो वे बड़ी सरलता से मेघ-स्तम्भन कर देते हैं। वर्षा का होना तुरंत रुक जाता है और साधक अपना कार्य पूरा कर लेते हैं।

होली, दीपावली अथवा ग्रहणकाल में मेघ-स्तम्भन का मंत्र सिद्ध किया जाता है। इसकी सिद्धि के लिए 1008 बार इस मंत्र का जप करना आवश्यक है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो भगवते रुद्राय जल स्तम्भय स्तम्भय णः णः स्वाहा।'

यह मंत्र सिद्ध करने के पश्चात श्मशान से एक चिता की लकड़ी का कोयला ले आएं। जब मेघ-स्तम्भन करना हो तो इस कोयले को सुलगाकर इस मंत्र से सात

बार अभिमंत्रित करते हुए उसके ऊपर ईंट रख दें। ऐसा करने से मेघ स्तम्भित हो जाएंगे। वर्षा रुक जाएगी और सिद्ध साधक सहज ही अपना कार्य सम्पन्न कर लेंगे।

गर्भ-स्तम्भन का मंत्र-1

जिस गर्भवती स्त्री का गर्भपात होने की संभावना हो और पहले भी जिसका एक, दो या अधिक बार गर्भपात हो चुका हो, उसके लिए इस मंत्र की उपयोगिता अत्यंत बढ़ जाती है।

सर्वप्रथम यह देखना भी आवश्यक है कि गर्भपात क्यों हो रहा है? इसके क्या कारण हैं? गर्भपात के कारणों में कुछ कारण तो वातावरणजन्य और कुछ शारीरिक होते हैं, जबकि कुछ कारण पूर्व जन्म के पापकर्मों के परिणाम भी होते हैं।

वातावरणजन्य और शारीरिक कारणों में सात कारण प्रमुख हैं, जो निम्न प्रकार हैं—

❑ गर्भकाल में अधिक व्रत-उपवास आदि रखना।

❑ किसी कारण से अत्यधिक भयभीत रहना।

❑ गर्भकाल में अश्वारोहण, साइकिल, मोटरसाइकिल आदि से यात्रा करना।

❑ गर्भकाल में अत्यधिक सहवास करना।

❑ गर्भकाल में एकाएक कम या अधिक ऊंचाई से गिर पड़ना अथवा गर्भ पर किसी प्रकार का प्रहार होना।

❑ गर्भकाल में अत्यधिक उष्ण दवाओं का प्रयोग करना।

❑ गर्भकाल में निषेध की गई अखाद्य वस्तुओं का प्रयोग करना।

इन कारणों के अलावा पापकर्मों से प्रभावित कारण कुछ इस प्रकार हैं—

❑ अनैतिक रूप से स्थापित किए गए संबंधों के परिणामस्वरूप गर्भ गिरा देने से उत्पन्न पापकर्म अधिक होना।

❑ भाग्य में संतान भाव का अत्यंत क्षीण होना।

❑ पूर्वजन्म में किए गए दुष्कृत्य का प्रभाव पड़ना।

❑ ब्रह्म शाप, देव शाप और पितृशाप का प्रभाव पड़ना।

इन सभी कारणों में वातावरणजन्य और शारीरिक कारणों को तो सुयोग्य चिकित्सक और वातावरण को अपने अनुकूल बनाकर दूर किया जा सकता है; किंतु पापकर्मों से युक्त कारणों को प्रायश्चित्त करके ही दूर किया जाता है।

यहां पर गर्भपात रोकने अथवा गर्भ-स्तम्भन कें कई शाबर मंत्र दिए गए हैं। गर्भपात भले ही किसी भी कारण से क्यों न होता हो, इन मंत्रों के प्रभाव से अपेक्षित

लाभ प्राप्त होता है। गर्भ-स्तम्भन का एक मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ थोथो मोथो मेरा कहा कीजिए,
अमुक का गर्भ जाते राखि लीजिए।
गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

ग्रहणकाल अथवा नवरात्रों में इस मंत्र की प्रतिदिन एक माला का जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। इस मंत्र में प्रयुक्त हुए शब्द अमुक के स्थान पर उस गर्भवती स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए, जिसके गर्भ का स्तम्भन करना होता है।

यह मंत्र सिद्ध हो जाने के पश्चात गर्भवती स्त्री के नाम से यह मंत्र एक भोजपत्र पर लिखें। इस भोजपत्र के सामने इस मंत्र की एक माला का जप करते हुए इसे अभिमंत्रित करके एक ताबीज में बंद कर लें। यदि यह ताबीज गर्भवती स्त्री अपनी कमर में बांध लेगी तो उसके गर्भ का स्तम्भन हो जाएगा अर्थात् असमय उसे गर्भपात से मुक्ति मिल जाएगी।

गर्भ-स्तम्भन का मंत्र-2

इस मंत्र का किसी शुभ मुहूर्त्त अथवा ग्रहणकाल में 1008 बार जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो आदेश गुरु को।
ॐ बाबा अंग ते बांधि राख,
नृसिंह जती सीस तें बांधि राख।
श्री गोरखनाथ कांखतें बांधि राख,
हयूली का राजा मूंडी तें बाधि राख।
तूडासन देवी यह मन पवन काया को बांधि राख,
थांभे गर्भ और बांधे घाव थांभे मात पारवती,
गंडो बाधे ईश्वर जती।
जब लग गंडो कटि पर इहे,
तब लग गर्भ काया में रहे।
गुरु की शक्ति मेरी भक्ति,
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

यह मंत्र सिद्ध हो जाने के बाद कुंवारी कन्या के हाथ से काते हुए सूत का गोला लें। इस सूत से गर्भव्रती स्त्री के शरीर को एड़ी से लेकर चोटी तक सात बार नापें, फिर उसकी लड़ी बना लें। अब उसमें सात बार सिद्ध मंत्र का उच्चारण करते हुए सात गांठें लगाएं। इस अभिमंत्रित गंडे पर, फूल आदि चढ़ाकर गुग्गुल की धूनी

देनी चाहिए। इसके साथ ही सवा पाव मिठाई बच्चों में वितरित करनी चाहिए और यथासंभव दान-पुण्य भी करना चाहिए। इन सात लड़ियों वाले धागे को गर्भवती स्त्री अपने कटि भाग में बांध ले तो उसका गर्भ-स्तम्भन हो जाता है।

वह गर्भवती स्त्री इस धागे को अपना गर्भकाल पूर्ण हो जाने के पश्चात कटि भाग से खोल दे। ऐसा करने से निर्धारित समय पर उसे संतानोत्पन्न होगी।

गर्भ-स्तम्भन का मंत्र-3

इस मंत्र का किसी शुभ मुहूर्त्त अथवा ग्रहणकाल में 1008 बार जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो आदेश गुरु को।
हनुमंत वीर गंभीर,
दूजे धरती बंधावे धीर,
बांध बांध हनुमंता वीर।
मास एक बांधूं मास दुइ बांधूं,
मास तीन बांधूं मास चार बांधूं।
मास पांच बांधूं मास छः बांधूं,
मास सात बांधूं मास आठ बांधूं।
मास नौ बांधूं अमुकी को गर्भ गिरे नहीं,
ठांह को ठांह रहे,
ठांह को ठांह न रहे मेरा बांधा बंध छूटे
तो ईश्वर महादेव गुरु गोरखनाथ,
जती हनुमंत वीर लाजे।
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

इस मंत्र में प्रयुक्त शब्द 'अमुकी' के स्थान पर उस गर्भवती स्त्री का नाम उच्चारित करें, जिसका गर्भ-स्तम्भन करना है।

यह मंत्र सिद्ध हो जाने के बाद कुंवारी कन्या के हाथ के कते सूत से गर्भवती स्त्री को चोटी से एड़ी तक सात बार धागे से नापें और उसकी लड़ी बना लें। सात बार सिद्ध मंत्र का उच्चारण करते हुए उसमें सात गांठें लगाएं। इस अभिमंत्रित गंडे को फूल आदि चढ़ाकर गुग्गुल की धूनी दें। इसके साथ ही सवा पाव मिठाई बच्चों में बांटें और कुछ दान-पुण्य भी करें। तदुपरांत इस गंडे को गर्भवती स्त्री अपने कटि भाग में बांध ले। इससे उसका गर्भ-स्तम्भन हो जाएगा।

वह गर्भवती स्त्री इस गंडे को गर्भकाल पूरा हो जाने के बाद कटि भाग से खोल दे। ऐसा करने से निर्धारित समय पर उसे संतानोत्पन्न होगी।

गर्भ-स्तम्भन का मंत्र-4

इस मंत्र का किसी शुभ मुहूर्त्त अथवा ग्रहणकाल में 1008 बार जप करने से यह सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो गंगा उकारे गोरख,
महाघोर घीपार गोरख।
बेटा जाय जय द्रुत पूत ईश्वर की माया।'

इस मंत्र की सिद्धि के पश्चात कुंवारी कन्या के हाथ के कते कच्चे सूत के धागे से गर्भवती स्त्री को एड़ी से चोटी तक सात बार नापें। इस प्रकार सात धागों की लड़ियों में अलग-अलग मंत्रोच्चारण करते हुए गांठ लगाएं। इस प्रकार बने अभिमंत्रित गंडे को फूलादि चढ़ाकर गुग्गुल की धूनी दें और सवा पाव मिठाई बच्चों में बांटें। इसके बाद इस गंडे को गर्भवती स्त्री के कटि भाग में बांध दें। इससे उसका गर्भ-स्तम्भन हो जाएगा। गर्भकाल पूरा होते ही इस गंडे को खोल देना चाहिए।

गर्भ-स्तम्भन का मंत्र-5

ग्रहणकाल अथवा नवरात्रों में प्रतिदिन एक माला इस मंत्र की जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो नमो चामड़ माई,
रक्त चुए नहिं पीर भगाई।
गोरख बैठा बांधे गण्डा,
हांक देत चल चल हनुमंता।
लग गठान में फूंकी सिंगी,
गर्भवती की रक्षा हूंगी।
अण्डापूत सबही बच जाए,
माता काली करे सहाय।
दुहाई लगी गौरा पार्वत्ती की।'

इस मंत्र की सिद्धि के पश्चात् उपरोक्त विधि के अनुसार कुंवारी कन्या के हाथ के कते कच्चे सूत के धागे को अभिमंत्रित करके गर्भवती स्त्री के कटि भाग में बांध दें। ऐसा करने से गर्भवती स्त्री का गर्भ-स्तम्भन हो जाएगा। गर्भकाल पूरा हो जाने पर यह गंडा खोल दे, ताकि भली प्रकार संतानोत्पन्न हो सके।

मासिक स्राव के स्तम्भन का मंत्र-1

होली, दीपावली, ग्रहणकाल अथवा किसी भी माह के मंगलवार को एक

माला इस मंत्र की जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो आदेश गुरु को।
चार घड़ी चार बटी रक्त चुवै,
चैरासी घड़ी रक्त चुवै।
मील धीर थाम हनुमंत वीर,
लंका सो कोटि समुद्र सी खाई।
अमुक को रक्त चुवै तो शोखिया वीर की दुहाई।
लूणा चमारी की आन।'

यह मंत्र सिद्ध हो जाने के बाद कुंवारी कन्या के हाथ के कते कच्चे सूत की ढाई पूनी का डोरा लें। उस डोरे को सात स्थानों पर अभिमंत्रित करके गांठ लगा दें। इस गंडे को रजस्वला स्त्री के कटि भाग पर बांध दें तो मासिक स्राव का स्तम्भन हो जाता है। यह प्रयोग उन स्त्रियों के लिए अत्यंत लाभप्रद है, जिन्हें लम्बे और अनियमित ढंग से मासिक स्राव होता है।

मासिक स्राव के स्तम्भन का मंत्र-2

इस मंत्र का होली, दीपावली अथवा ग्रहणकाल में 1008 की संख्या में जप करने पर यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ अमुकी चट चट खट ठः ठः स्वाहा।'

इस मंत्र में प्रयुक्त शब्द 'अमुकी' के स्थान पर रजस्वला स्त्री के नाम का उच्चारण करें। इस स्त्री के बाएं पैर के नीचे की मिट्टी लेकर उसे किसी मुर्दे के कफन के टुकड़े में बांध लें। उसे इस सिद्ध मंत्र द्वारा 108 बार अभिमंत्रित करें। ऐसा करने से अत्यधिक मात्रा में और अनियमित होने वाले मासिक स्राव का स्तम्भन हो जाता है।

जब मासिक स्राव का स्तम्भन समाप्त करना हो तो सांगली कंद को शहद में घिसकर योनिद्वार और नाभि पर रखा जाए तो मासिक स्राव का स्तम्भन टूट जाता है।

मासिक स्राव के स्तम्भन का मंत्र-3

होली, दीपावली, ग्रहणकाल अथवा किसी भी माह के मंगलवार को इस मंत्र की एक माला का जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'वज्रयोगिनी वज्र किवाड़,
बजरी बांधूं दसों द्वार।
झाड़ो झड़े न लिंगी,
करे तो वज्रयोगिनी का वाचा फुरे।'

यह मंत्र सिद्ध हो जाने के बाद कुंवारी कन्या के हाथ के कते कच्चे सूत की ढाई पूनी का डोरा लें। उस डोरे को सात स्थानों पर अभिमंत्रित करके गांठ लगा दें। इसके बाद सिद्ध मंत्र से अभिमंत्रित इस गंडे को रजस्वला स्त्री के कटि भाग पर बांध दें तो उसके मासिक स्राव का स्तम्भन हो जाएगा।

मासिक स्राव रोकने के अन्य प्रयोग

❑ अशोक वृक्ष की छाल और बच को दूध में उबालकर पीने से मासिक स्राव रुक जाता है।

❑ मासिक स्राव वाली स्त्री बाएं हाथ से तीन मुट्ठी आटा लेकर उसे किसी कुंवारी कन्या से गुंथवाए। इस आटे की पुतली बनाकर सवा हाथ के लाल कपड़े पर इसे स्थापित करके इसका पूजन करे। पूजन में चौमुखा दीपक जलाए। इस पुतली को रजस्वला स्त्री इक्कीस की संख्या से उल्टी गिनती गिनते हुए अपने योनिरंध्र से स्पर्श कराए। इक्कीस बार ऐसा करने के बाद उस पुतली को खप्परनुमा ठीकर पर रखकर और लाल कपड़ा, दीपक, मिठाई और पंच मेवा सहित किसी एकांत स्थान पर रख आए। इस प्रयोग से मासिक स्राव रुक जाता है।

❑ यदि रजस्वला स्त्री आंवला, हरड़ और रसौत का चूरण समान मात्रा में दिन में तीन बार शीतल जल से ले तो उसका अत्यधिक मात्रा में और अनियमित रूप से होने वाला मासिक स्राव रुक जाएगा।

वीर्य स्तम्भन का मंत्र

यद्यपि यह मंत्र स्वत: सिद्ध है, तथापि किसी शुभ काल में इस मंत्र की पांच या सात मालाओं का जप कर लेना उत्तम रहता है। मंत्र इस प्रकार है—

'काचा पिंड पिंड में कोठा,
कोठा में दस द्वार,
बहत्तर हजार नाड़ी।
नाड़ी में रस रस में बिंद,
बिंद को थामे गुरु गोरख भाजे,
लूणा जोगनी चाखे।
हनुमान की पूंछ बढ़ी वैसे ही बिंद बढ़ो सुख भयो,
ओउम नमो इति महारानी तेरी लांखों लाख आन।'

शनिवार की शाम को मदार (आक) के फल को विधि-विधानपूर्वक आमंत्रित कर आएं और अगले दिन रविवार को उसे ले आएं। मदार के फल से रुई निकालकर उसकी वर्तिका (बत्ती) बनाकर उसे अरंड के तेल में डाल दें। इस प्रकार बने दीपक के सामने इस मंत्र की एक माला का जप करें।

सहवास से पूर्व लूणा जोगनी का ध्यान करते हुए पत्नी को सेज पर बैठाकर शुद्ध जल से उसके कामस्थल का प्रक्षालन करना चाहिए। फिर उसके दक्षिण तथा वाम ओष्ट पर तीन-तीन तथा मध्य में ग्यारह मंत्रों का जप करना चाहिए। इसके साथ इस मंत्र से अभिमंत्रित दीपक को प्रज्वलित करना चाहिए। इस दीपक में इतना तेल होना चाहिए कि वह अधिक-से-अधिक पौन घंटे तक जल सके।

फिर पत्नी को सुगंधित पदार्थों से युक्त पान खिलाकर प्रसन्न करें और प्रसन्न मन से ही रतिक्रीड़ा आरम्भ करें। ऐसा करने से रतिक्रीड़ा में अतीव आनन्द की प्राप्ति होगी और जब तक दीपक जलता रहेगा, वीर्य का स्खलन न होगा। इस प्रकार वीर्य स्तम्भन से पति-पत्नी को चरम सुख सहज ही मिल जाएगा।

❑ वच की जड़ तथा काले धतूरे को समान मात्रा में पीसकर उसमें शहद मिलाकर एक लेप तैयार करें। इस लेप को एक माला मंत्र की पढ़कर अभिमंत्रित करें। इस अभिमंत्रित लेप का सहवास से पूर्व पुरुष अपने गुप्तांग पर लेपन करे। ऐसा करने से पुरुष का वीर्य काफी समय तक स्खलित नहीं होता। इस वीर्य स्तम्भन से स्त्री-पुरुष दोनों को ही चरम सुख की प्राप्ति होती है।

❑ सोमवार की प्रातःकाल अपामार्ग (चिरचिटा) की जड को विधि-विधानपूर्वक जाकर आमंत्रित कर आएं और अगले दिन मंगलवार को प्रातः उसे उखाड़कर ले आएं। इसी दिन इस जड़ का भली प्रकार पूजन आदि करें और एक माला इस मंत्र की पढ़कर इस जड़ को अभिमंत्रित करें। सहवास से पूर्व साधक इस अभिमंत्रित जड़ को अपनी कमर में बांध लें। ऐसा करने से वीर्य स्तम्भन हो जाता है और पति-पत्नी को चरम सुख की प्राप्ति होती है।

लक्ष्मी (सुख-समृद्धि) स्तम्भन का मंत्र

दीपावली की अमावस्या को रात्रिकाल में गृहस्वामिनी और गृहस्वामी इस मंत्र की सिद्धि प्रयोग करें। गृहस्वामिनी अपने हाथ से उबले चावलों के 4 पिंड निर्मित करे। एक पिंड गृहस्वामी चने के आटे (बेसन) का बनाए। एक साफ-सुथरे कमरे में सवा मीटर के सफेद-स्वच्छ कपड़े को बिछाकर उसके मध्य भाग में चावलों की एक छोटी-सी ढेरी बना कर रखें और उसके ऊपर चांदी की एक नाग-प्रतिमा को स्थापित करें। इस नाग प्रतिमा के दाईं ओर बेसन का पिंड तथा बाईं ओर चावल के दो पिंड स्थापित करें। इनके पास ही चार नागफनी कीलें भी रखें। सात छोटे-छोटे चूने के सफेद कंकड़ लें। इनमें से चार कंकड़ों की ढेरी बनाकर बाईं ओर तथा तीन कंकड़ों की ढेरी दाईं ओर बनाएं। नाग की प्रतिमा को पहले साफ जल से और फिर गंगाजल से स्नान कराएं। इसके बाद इसे दूध से स्नान कराएं तथा पुनः इस पर गंगाजल डालें। इन तीनों स्थानों पर यज्ञोपवीत

रखकर इनके सामने पूड़ी, हलवा और मिष्ठान आदि का भोग अर्पित करें और लक्ष्मी स्थायी रूप से इस घर में विराजमान हो, ऐसी प्रार्थना करें। इसके बाद गृहस्वामी और गृहस्वामिनी कम से कम इस मंत्र की एक माला का जप अवश्य करें। मंत्र इस प्रकार है—

'गोरा सुत गुरु करै सहाई,
सुख बरकत घर-आंगन आई।
कहां-कहां से आई? राजदरबार से,
खेत-खलियान से जमीन-आसमान से।
देव दनुज मानव से सकल दिवस से,
नौ नाथ चौरासी सिद्ध खींच घसीट-घसीट,
पछीट-पछीट कर लावे।
दुख दलिद्दर भागे कौन भगाए,
राजा कुबेर भगाए राजा रामचंद्र जी भगाए।
हनुमान को घोटा भैंरों को सोटा,
नाहरसिंह की हुंकार काली कलकत्ते वाली की जयकार।
दुहाई गिरनार के बाल अवधूत की,
नाथन के नाथ शंकर की।
मेरी भगत गुरु की शक्ति मंत्र सांचा।'

यह जप पूरा होने के पश्चात नाग-प्रतिमा तथा नागफनी कीलों को सुरक्षित रख लें। शेष सामग्री को उसी सफेद कपड़े में लपेटकर किसी नदी अथवा तालाब में विसर्जित कर दें।

पूजन करते समय लक्ष्मीजी का चित्र रखने से भी अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है और यदि बाईं ओर के अंतिम सिरे पर गणेश जी की प्रतिमा भी स्थापित की जाए तो अति उत्तम रहता है।

इस प्रयोग के द्वारा सुख-समृद्धि की वृद्धि होती है और लक्ष्मी का घर में स्तम्भन होता है।

ओलों के स्तम्भन का मंत्र

गुरु पूर्णिमा (आषाढ़ी पूर्णिमा) से श्रावणी पूर्णिमा तक के एक माह में नित्य-प्रति इस मंत्र की एक माला का जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'समुद्र समुद्र में द्वीप द्वीप में कूप,
कूप में कुई, जहां ते चले हरि हर परे (ओले)।

चारों तरफ बरावत चला,
हनुमंत बरावत चला।
भीम ईश्वर मांजि मठ में जाय,
गोरा बैठी दवारे नहाई।
ठक्कनै उदपैरे न बोला,
राजा इंद्र की दुहाई।
मेरी भक्ति की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

इस मंत्र की सिद्धि हेतु जप करने के लिए आबादी से बाहर किसी एकांत में बने हनुमान मंदिर में पहले हनुमान जी का पूजन आदि सम्पन्न किया जाना चाहिए। मंत्र सिद्धि हेतु जपकाल में पूरे एक माह तक साधक को पूर्ण रूप से ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए और नियम-संयम तथा सत्यवादिता को अपनी दिनचर्या में शामिल कर लेना चाहिए। साधक जपकाल में धूप कुंडा अथवा धूपाड़े में गुग्गुल की धूप देता रहे।

एक माह तक जप करके मंत्र सिद्धि करने के पश्चात साधक नवरात्रों के समय स्वत: उगी सरसों को इकट्ठी कर ले। इनके दाने निकालकर उन पर नवरात्रों के नौ दिनों तक प्रतिदिन एक माला इस मंत्र की पढ़े। इस प्रकार सरसों के ये दाने सिद्ध मंत्र द्वारा अभिमंत्रित हो जाएंगे। जब ओलावृष्टि हो तो साधक गांव से बाहर जाकर इस मंत्र का जप करते हुए इन अभिमंत्रित सरसों के दानों को एक ओर ऐसी जगह पर फेंके जहां पर खेत आदि न हो। ऐसा करने से गांव और फसल पर पड़ने वाले ओले स्तम्भित हो जाएंगे। इनका गांव तथा फसल पर पड़ना रुक जाएगा और जहां पर सरसों के अभिमंत्रित दाने फेंके गए हैं, सभी वहीं पर गिरने लगेंगे।

तुरही (एक प्रकार का बाजा) स्तम्भन का मंत्र

होली, दीपावली अथवा ग्रहणकाल में इस मंत्र का 1008 बार जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ वादी आया वादन करता बैठा बड़ पीपर की छाया,
रह रे वादी वाद न कीजे बांधूं तेरा कंठ अरु काया।
बांधूं पूंगी और नाद बांधूं,
योगी और साधवा बांधूं।
कंठ की पूंगी बाजे और मसान की बानी,
अब तेरी रे पूंगी सो जाने।
तले बांधे नाहरसिंह,
ऊपर हनुमंत गाजे।

मेरी बांधी पूंगी बाजे,
तो गुरु गोरखनाथ लाजे।'

यह मंत्र सिद्ध हो जाने के बाद किसी चौराहे से एक कंकड़ी लाएं और उसे इस सिद्ध मंत्र से तीन बार अभिमंत्रित करें। जब यह किसी तुरही से स्पर्श कराई जाएगी तो उसका बजना बंद हो जाएगा।

तुरही को स्तम्भन-मुक्त करने का मंत्र

होली, दीपावली अथवा ग्रहणकाल में इस मंत्र का 1008 बार जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

ॐ गुरु को शब्द आनन्द नाद,
खुल गई पूंगी भई आवाज।
शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

यह मंत्र सिद्ध हो जाने के बाद एक चुटकी-भर धूल लें। उसे इस सिद्ध मंत्र से तीन बार अभिमंत्रित करें। जब इस अभिमंत्रित धूल को तुरही पर मारा जाता है तो वह स्तम्भन से मुक्त हो जाती है और वह पूर्ववत् मधुर स्वर में बजने लगती है।

सुई-स्तम्भन का मंत्र

किसी शुभ मुहूर्त्त में इस मंत्र की सात माला का जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'धार धार बांधौ सात बार,
न लागै न फूटै न आवै घाव।
रक्षा करे श्री गोरखनाथ,
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति।
हनुमंत वीर रक्षा करै,
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

एक सुई हाथ में लेकर इस सिद्ध मंत्र से उसे सात बार अभिमंत्रित करें। इस अभिमंत्रित सुई से शरीर के जिस अंग में छेद करना चाहोगे, हो जाएगा और घाव भी न लगेगा।

□□

6

मोहन-आकर्षण और शाबर मंत्र

मोहन और आकर्षण यद्यपि 'वशीकरण' के ही विशिष्ट अंग हैं तथा इनका व्यापक प्रभाव क्षेत्र देखते हुए इन्हें अलग अध्याय में स्थान देना न्यायोचित है। 'मोहन' शब्द से तात्पर्य अपने किसी निकट या दूर के व्यक्ति को स्वयं पर मोहित करने से है। इसी प्रकार 'आकर्षण' से तात्पर्य किसी व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित करने से है।

शाबर विद्या में मोहन-आकर्षण से संबंधित अनेक मंत्रों का उल्लेख किया गया है। जब पति-पत्नी, प्रेमी-प्रेमिका अथवा अधिकारी-नौकर के बीच मन-मुटाव से जीवन में विसंगतियां बढ़ने लगें और सामान्य कार्यों में भी उलझनें बढ़ती ही जाएं, तब मोहन-आकर्षण मंत्रों के प्रयोग से इन्हें दूर किया जा सकता है। ध्यान रहे कि शाबर मंत्रों का प्रयोग छल, दंभ, अहंकार, तुष्टि और काम-विलास के लिए नहीं किया जाना चाहिए, अन्यथा अंत में इसके बहुत ही घातक परिणाम सामने आते हैं।

विशेष मोहिनी मंत्र-1

किसी रविवार के दिन से आरम्भ करके इक्कीस दिन तक इस मंत्र का नित्य प्रति इक्कीस बार जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। इसके अलावा यदि दीपावली की रात्रि में इस मंत्र का 144 बार जप किया जाए तो यह सिद्ध हो जाता है। मंत्र-जप करते समय धूप-दीप तथा मिष्ठान्न आदि भी रखें। यह मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो आदेश गुरु को।
मोहनी जगमोहनी मेरो नाम,
ऊंचे टीले हूं बसूं मोहूं सगरो गाम।
ठग मोहूं ठाकुर मोहूं बाट का बटोहू मोहूं,
कुषा की पनिहार मोहूं महला बैठी राणी मोहूं।
जोहि जोहि वां वां पग तरे देहु,
गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

यह मंत्र सिद्ध हो जाने के बाद पहले चौराहे की धूल को इस सिद्ध मंत्र से सात बार अभिमंत्रित करके, उसका अपने मस्तक पर तिलक लगाएं। फिर एक छोटी-सी गुड़ की डली लेकर उस पर इक्कीस बार यह मंत्र पढ़ें। सिद्ध मंत्र से अभिमंत्रित इस गुड़ की डली को किसी कुएं में, उस व्यक्ति का नाम लेकर डाल दें, जिसे मोहित करना हो। जब वह व्यक्ति उस कुएं का जल पीएगा तो वह साधक के प्रति मोहित हो जाएगा।

अब प्राय: कुओं का प्रचलन बंद ही हो गया है। यदि किसी स्थान पर कुएं उपलब्ध हों और उनका जल पिया जाता हो तो उपरोक्त प्रकार से ही प्रयोग करें, अन्यथा गुड़ की डली को किसी बरतन में जल लेकर उसमें घोल लें और उसे साध्य व्यक्ति को पिला दें। ऐसा करने से भी वह व्यक्ति मोहित हो जाएगा।

विशेष मोहिनी मंत्र-2

किसी शनिवार से आरम्भ करके सात दिन तक प्रतिदिन इस मंत्र का 125 बार जप करें और भोग में मदिरा, लपसी और कलेजी रखें। ऐसा करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो आदेश गुरु को।
गुग्गुल की धूप को धूवां धार,
देखूं पलमा तेरो शक्ति।
तेरस रात्रि को टूटा तारा,
ऐसा टूटे भैरों बाबा का मन गाए,
गुड़ मंत्र पढ़कर उसको दे।
घर में चक्क न बाहर चक्क,
फिर फिर देखे मेरा मुख।
जीव न सेवे जीव को मूवे सेवे मसाण,
हमसे आकुल व्याकुल हो तो जती हनुमान की आन।
हमें छांड़ और के पास जाय,
पेडू फाट तुरत मर जाय।
सत्यनाम आदेश गुरु को।'

इस सिद्ध मंत्र से गुड़ की डली को सात बार अभिमंत्रित करें और इसे उस व्यक्ति को खिला दें जिसे मोहित करना हो। गुड़ की अभिमंत्रित डली खाते ही वह व्यक्ति साधक के प्रति मोहित हो जाता है।

विशेष मोहिनी मंत्र-3

दीपावली की रात्रि में इस मंत्र का 144 बार जप किया जाए तो यह मंत्र सिद्ध

हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो आदेश गुरु को।
या गुड़ राती या गुड़ माती,
या गुड़ आवै पायां पड़ती।
जो मांगूं श्योजन पाऊं,
सूती तिरिया जगायर ल्याऊं।
चलि रे अगिया बेताल,
अमुकी के पेट चलावे झाल।
रात्रि को चैन न दिन को सुख,
फिरि फिरि जोवे हमारा मुख।
जै मकड़ी मकड़ी सैट ले,
सीस फाड़ दो टूक हो पड़ै।
काला कलुआ काली रात,
कलुआ चाला आधी रात।
चाल चाल रे काला कलुआ,
सोधन चाटे हमारा तलुआ।
आक के पान बसे कवारी,
धन जोबन सो खरी पियारी।
रेत रगत गुड़ करे गिरास,
अमुकी आवे अमुक पास।
हनुमंत जती की शक्ति,
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

यह मंत्र सिद्ध हो जाने के बाद लगभग दो तोला गुड़ लें। इस गुड़ में अपनी अनामिका उंगली के रक्त की कुछ बूंदें मिलाएं। फिर इसे इस सिद्ध मंत्र द्वारा इक्कीस बार अभिमंत्रित करें। यह अभिमंत्रित गुड़ जिस स्त्री को खिला दिया जाएगा, वह साधक के प्रति मोहित हो जाएगी। यदि किसी कारणवश यह गुड़ स्त्री को न खिलाया जा सके तो उसे कुएं में डाल दें और उसे उस कुएं का जल पिला दें अथवा थोड़ी-सी मात्रा में जल लेकर गुड़ की डली उसमें घोलकर वह जल स्त्री को पिला दें, तब भी वह साधक के प्रति मोहित हो जाएगी।

इस मंत्र में प्रयुक्त हुए शब्द 'अमुक' और 'अमुकी' के स्थान पर मोहित होने वाली स्त्री का नाम तथा 'फलाना' के स्थान पर साधक अपने नाम का उच्चारण करे।

विशेष मोहिनी मंत्र-4

शनिवार के दिन से आरम्भ करके निरंतर 11 दिन तक प्रतिदिन इस मंत्र का 144 बार जप करें। मंत्रोच्चारण के साथ ही प्रत्येक मंत्र के बाद अग्नि में गुग्गुल का होम करें। दीपक प्रज्वलित करके बताशे तथा फल चढ़ाएं। ऐसा करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'जल मोहूं थल मोहूं जंगल की हिरणी मोहूं,
बाट चलत बटोही मोहूं कचहरी बैठा राजा मोहूं।
पीढ़ी बैठी रानी मोहूं मोहनी मेरा नाम,
मोहूं जग संसार।
तरा तरीला तोतला तीनों बसे कपाल,
दस्तक दे दी मात के दुश्मन करूं पामाल।
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

यह मंत्र सिद्ध हो जाने के पश्चात कोई मिठाई लें और उसे इस सिद्ध मंत्र द्वारा इक्कीस बार अभिमंत्रित करें। इस अभिमंत्रित मिठाई को साधक जिस व्यक्ति को भी खिलाएगा, वह साधक के प्रति मोहित हो जाएगा।

सर्व मोहिनी मंत्र-1

शनिवार के दिन जंगल में जाकर शंखाहुली को विधि-विधानपूर्वक निमंत्रित कर आएं। उसे चावल, चीनी और धूप आदि देना न भूलें। अगले दिन रविवार को उसके पास जाकर सबसे पहले उसे जल से स्नान कराएं। फिर उसे चावल-फूल चढ़ाएं। धूप देकर घी का दीपक जलाएं और गुड़ का भोग लगाएं। इसके पश्चात् 121 बार निम्न मंत्र का जप करें—

'ॐ साखाहूली वन में फूली बैठी करै सिंगार,
राजा मोहे प्रजा मोहे सबने करे सियार।
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

मंत्र-जप करने के पश्चात शंखाहूली को पुष्प-जड़ सहित उखाड़कर घर ले आएं। शंखाहूली, गोरोचन और सर्प की केंचुली को पीसकर एक मिश्रण तैयार करें। इस मिश्रण को 21 दिन तक प्रतिदिन 121 मंत्रों के द्वारा अभिमंत्रित करें। इससे शंखाहूली का मिश्रण और मंत्र दोनों ही सिद्ध हो जाते हैं। जब साधक शंखाहूली के इस मिश्रण को अपनी पगड़ी, टोपी अथवा वस्त्रों में धारण करके किसी सभा आदि में जाएगा तो सभी लोग उसके प्रति मोहित हो जाएंगे।

सर्व मोहिनी मंत्र-2

शनिवार से आरम्भ करके छः दिन तक लगातार प्रतिदिन धूप, दीप और

नैवेद्य से महावीर हनुमानजी का पूजन करें। साथ ही प्रतिदिन इस मंत्र का 144 बार जप करें। ऐसा करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाएगा। मंत्र इस प्रकार है—

'जती हनुमंत कनेरी मेरे घट पिण्ड का कौन है बैरी,
छत्तीस पवन मोहि मोहि जोहि जोहि दह दह,
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।
सत्य नाम आदेश गुरु को।'

किसी चौराहे से सात छोटी-छोटी कंकड़ियां लाएं और किसी कुएं पर जाकर उन कंकड़ियों को सिद्ध मंत्र से 144 बार अभिमंत्रित करें। इसके पश्चात् इन अभिमंत्रित कंकड़ियों को उसी कुएं में डाल दें। अब जो भी व्यक्ति इस कुएं का जल पीएगा, वह साधक के प्रति मोहित हो जाएगा।

सर्व मोहिनी मंत्र-3

सात शनिवार और रविवार को रात्रि में विधि-विधानपूर्वक नाहरसिंह का पूजन करें। धूप, दीप, पुष्प, चंदन, रोली, गुग्गुल, चावल, पान और सुपारी तथा लौंग आदि सामग्री का प्रयोग करें। पान, सुपारी, शक्कर तथा गुग्गुल को घी के साथ मिलाकर एक अच्छा मिश्रण बना लें। इसके पश्चात इस मंत्र का 108 बार जप करें। प्रत्येक मंत्र-जप के बाद पान, सुपारी, शक्कर, गुग्गुल और घी के मिश्रण का अग्नि में होम करते रहें। इस प्रकार मंत्र-जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'पद्मनी अंजन मेरा नाम,
इस नगरी में पैस के मोहूं सगरा गाम।
न्याव करंता राजा मोहूं,
फरस बैठा पंच मोहूं।
पनघट की पनिहारिन मोहूं,
इस नगर में पैस के छत्तीस पवन मोहूं।
जो कोई मार-मार करंत आवै,
ताहै नाहरसिंह वीर बायां पग के अंगूठा तरे घेर घेर लावे।
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।
सत्य नाम आदेश गुरु का।'

यह मंत्र सिद्ध हो जाने के पश्चात वन कपास की रुई और अपामार्ग की जड़ लाएं। अपामार्ग की जड़ को वन कपास की रुई में लपेटकर उससे काजल पारें। इस काजल को सिद्ध मंत्र से सात बार अभिमंत्रित करें। इस अभिमंत्रित काजल को जब साधक अपनी आंख में आंजकर किसी सभा आदि में जाएगा तो उसे देखकर

सभी लोग उसकी ओर मोहित हो जाएंगे।

सर्व मोहिनी मंत्र-4

शनिवार को जंगल में जाकर विधि-विधानपूर्वक शंखाहूली को निमंत्रित कर आएं। निमंत्रित करते समय उसे चावल, चीनी और धूपादि भी दें। अगले दिन रविवार को उसके पास जाकर सर्वप्रथम उसे शुद्ध-स्वच्छ जल से स्नान कराएं, फिर उस पर चावल-फूल चढ़ाएं। धूप देकर घी का दीपक प्रज्वलित करें और गुड़ का भोग लगाएं। इसके पश्चात् 21 बार निम्न मंत्र का जप करें—

**'ॐ नमो आदेश गुरु को
ॐ शंखाहूली वन में फूली
ईश्वर देख गवरजा भूली
आव आव राजा प्रजा पाव पड़ाव मंगल मोहन
वसकरन मोहन मेरो नाम दे मोहन
अमुक के अंत शव सों मंग महेसुर गांव
चल मोहनी राऊल चल जलती आग बुझावत
चली तीन खेत आगे मोह तीन खेत पाछै
मोह तीन खेत उत्तर मोह तीन खेत दक्षिण
मोह आवते की दृष्टि मोह-दर-मोह
दीवान मोह गांव का मुकद्दम मोह
काजी का कुरान मोह हे तू नरसिंह वीर हमारा
काज न करे तो अपनी मां का दूध पिया हराम करे
ठः ठः ठः ठः ठः स्वाहा।'**

मंत्र-जप करने के पश्चात् शंखाहूली को पुष्प-जड़ सहित उखाड़कर घर ले आएं। रात्रि के समय दीप प्रज्वलित करके नृसिंह का आह्वान करें तथा दो पेड़े और पान के बीड़े का भोग रखकर चावल, घी और शक्कर पर 121 बार मंत्र पढ़ें, फिर उन्हें अग्नि में होम कर दें। तत्पश्चात् कपूर से आरती करें। ऐसा करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है।

❑ रविवार के दिन व्रत रखें। फिर मंत्रोच्चारण करते हुए शंखाहूली को पीसकर उसकी छोटी-छोटी गोलियां बना लें। इनमें से एक गोली को अपनी पगड़ी अथवा टोपी आदि में रखकर सभा में जाने से पूरी सभा मोहित हो जाती है।

❑ यदि शंखाहूली की इस अभिमंत्रित गोली को मिठाई आदि में रखकर किसी को खिला दिया जाए अथवा उसे घिसकर उसका किसी के मस्तक पर तिलक लगाया जाए तो वह साधक के प्रति मोहित हो जाता है।

सर्व मोहिनी मंत्र-5

इस मंत्र की सिद्धि और प्रयोग विधि 'सर्व मोहिनी मंत्र-4' के अनुसार ही है। इसमें भी शंखाहूली का प्रयोग उपरोक्त 'मंत्र-4' के अनुरूप ही होता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ शंखाहूली वन में फूली,
ईश्वर देख गवरजा भूली।
जो याको सिर पर धरे,
राजा -प्रजा वाके चरणों पड़े।
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति,
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

स्त्री मोहिनी मंत्र

जिस व्यक्ति की मृत्यु रविवार के दिन हुई हो, उसकी चिता की राख में से तीन मुट्ठी राख ले आएं। इस राख पर दीप प्रज्वलित करें और पास ही धूप तथा नैवेद्य आदि रखें। यह प्रयोग शनिवार के दिन प्रारम्भ करें और इस दिन से सात दिन तक लगातार करते रहें। प्रतिदिन 144 बार इस मंत्र का जप करें—

'धूली धूलेश्वरी धूली माता परमेश्वरी,
धूली चंचती जै जैकार दनरन चौंप भरे,
अमुकी छाती छार-छार ते न हटे,
देतां घर वार मरे तो मसान लोटे।
जीवे तो पांव पलोटे।
वाचा बांध सूती हो तो जगाइ लाव,
माता धूलेश्वरी तेरी शक्ति मेरी भक्ति।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा ठः ठः ठः स्वाहा।'

इस मंत्र में प्रयुक्त शब्द 'अमुकी' के स्थान पर उस स्त्री का नाम उच्चारित करना चाहिए जिसे साधक को मोहित करना है।

इस प्रकार मंत्र-जाप करने से यह सिद्ध हो जाता है। इसके पश्चात दीपक के नीचे रखी चिता की राख में से थोड़ी-सी मात्रा लेकर उसे सिद्ध मंत्र से 21 बार अभिमंत्रित करें। इस अभिमंत्रित राख को जिस किसी भी स्त्री के ऊपर डाला जाएगा, वह साधक के प्रति मोहित हो जाएगी।

फूल मोहिनी मंत्र-1

लौंग, सुपारी, पान, फूल और मिठाई लाएं। एक फूल को घी में सानकर

मंत्रोच्चारण करते हुए अग्नि में होम करें। इसी प्रकार मंत्रोच्चारण के साथ 106 फूलों की आहुतियां दें। यह प्रयोग रविवार से आरम्भ करके 21 दिन तक लगातार प्रतिदिन करें। इस प्रकार यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'कामरू देस कामाख्या देवी,
जहां बसे इस्माइल जोगी।
इस्माइल जोगी ने बोई बारी,
फूल उतारे लोना चमारी।
एक फूल हंसे, दूजा फूल बिगसे,
तीजे फूल में छोटा-बड़ा नाहरसिंह बसे।
जो सूंघे इस फूल की बास,
सो आवे हमारे पास।
और के पास जाय,
हियो काट मर जाय।
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

मंत्र सिद्ध हो जाने के पश्चात् ब्राह्मणों को दान-दक्षिणा दें। अब किसी सुगंधित फूल को सात बार इसी मंत्र से अभिमंत्रित करके जिस किसी को भी सुंघाया जाएगा तो वह साधक के प्रति मोहित हो जाएगा।

फूल मोहिनी मंत्र-2

शनिवार के दिन से आरम्भ करके विधि-विधानपूर्वक एक दीपक का पूजन करें और 144 मंत्रों का जप करें। यह प्रयोग 21 दिन तक प्रतिदिन लगातार करते रहें। इस प्रकार करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र सिद्धि के पश्चात् यथासंभव ब्राह्मणों को भोजन कराने के बाद दान-दक्षिणा भी दें। यह मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो आदेश गुरु को।
एक फूल फूल भर दोना,
चौंसठ जोगनी ने मिल किया टोना।
फूल फूल वह फूल न जानी,
हनुवंत वीर घेर घेर दे आनी।
जो सूंघे इस फूल की बास,
उसका जी-प्राण रहे हमारे पास।
सूती हो तो जगाइ लाव,
बैठी हो तो उठाइ लाव।

और देखे जरे बरे,
मोहे देखे मेरे पांयन परे।
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति।
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा वाचावाची से टरे,
कुम्भी नरक में परे।'

मंत्र-सिद्धि के पश्चात सोमवार को किसी सुगंधित फूल को इस सिद्ध मंत्र से 21 बार अभिमंत्रित करें। यह अभिमंत्रित फूल जिस किसी भी व्यक्ति को सुंघाया जाएगा,वह साधक के प्रति मोहित हो जाएगा।

चम्पा के फूल का मोहिनी मंत्र

शनिवार को चम्पा के पेड़ को विधि-विधानपूर्वक निमंत्रित कर आएं और जिस फूल को लाना है, उस डाली पर लाल कलावे का डोरा बांध आएं। रविवार को प्रात:काल उस डाली को इस मंत्र से अभिमंत्रित करके गुग्गुल की धूनी एवं धूप दें। इसके पश्चात उस फूल को तोड़कर घर ले आएं। मंत्र इस प्रकार है—

'कामरू देस कामाख्या देवी,
जहां बसे इस्माइल जोगी।
इस्माइल जोगी ने लगाई बारी,
फूल चुने लोना चमारी।
फूल राता फूल माता फूल हांसा फूल बिगसा,
तहां बसे चम्पा का पेड़।
चम्पा के पेड़ में रहे काल भैंरू,
भूत-प्रेत मरे मसान पै आवैं।
किसके काम ये आवें? टोना टामन के काम,
भेजूं काल भैंरू को लावे मुशकें बांध।
बैठी हो तो बेगी लाव,
सोती हो तो उठा लाव।
वह सोवे राजा के महलों
प्रजा के महलों मुझसे होनी राणी।
फूल दूं उसी के हाथ,
वह उठ लागे मेरे साथ।
हमको छांड़ि पर घर जाय,
छाती फार वहीं मर जाय।
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

वाचा चूके उमा हसूके,
लोना चमारी बहरे जोगी के कुंड में पड़े।
वाचा छोड़ कुवाचा जाय तो नरक में पड़े जाय।'

अब रात्रिकाल में एक दीपक जलाकर उसके सामने वह फूल रखें और भैरों का पूजन करते हुए 21 मंत्रों का जाप करें। 21 दिन तक इसी प्रकार जप करते रहने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। भोग देते समय मदिरा, उड़द के बड़े, गुड़, तेल और दही का प्रयोग करें।

यह मंत्र सिद्ध हो जाने के बाद चम्पा के फूल को सात बार इस सिद्ध मंत्र से अभिमंत्रित करें। जिस व्यक्ति को यह फूल सुंघाया जाएगा, वह साधक के प्रति मोहित हो जाएगा।

लाल कनेर के फूल का मोहिनी मंत्र

शनिवार को लाल कनेर के पेड़ को विधि-विधानपूर्वक निमंत्रित कर आएं और जिस फूल को लाना है, उस डाली पर लाल रंग का डोरा बांध आएं। रविवार को प्रातःकाल उस डाली को इस मंत्र से अभिमंत्रित करके गुग्गुल की धूनी एवं धूप दें। इसके पश्चात् उस फूल को तोड़कर घर ले आएं। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ मूठी माता गूठी रानी मूठी लगावे आग, अमुका के
चटक लगाव, बेधड़क कलह मचावे, मुख न बोले सुज
न सोवे, कहत मंत्र उठाय मार्‍यो उरझ, ज्यों काया सूत
की आंटी उरझ, अब देखूं नाहरसिंह वीर तेरे मंत्र की
शक्ति, शब्द साचा पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

अब रात्रिकाल में एक दीपक जलाकर उसके सम्मुख वह फूल रखें और विधिपूर्वक पूजन करते हुए 121 बार मंत्र का जप करें। इक्कीस दिन तक प्रतिदिन लगातार इसी प्रकार जप और पूजन करते रहें। इस तरह यह मंत्र सिद्ध हो जाता है।

मंत्र सिद्ध हो जाने के बाद लाल कनेर के एक फूल को इक्कीस बार इस सिद्ध मंत्र से अभिमंत्रित करें। जिस व्यक्ति को यह फूल सुंघाया जाएगा, वह साधक के प्रति मोहित हो जाएगा।

तेल का मोहिनी मंत्र-1

यह मंत्र दीपावली की रात्रि में सिद्ध किया जाता है। इत्र, मिठाई, लोबान और दीपक लेकर इस मंत्र की 22 माला का जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ मोहना राणी मोहना राणी चली सैर को,
सिर पर धरे तेल की दोहनी।

जल मोहूं थल मोहूं मोहूं सब संसार,
मोहना राणी पलंग चढ़ बैठी मोह रहा दरबार।
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति दुहाई गोरा पार्वती की,
दुहाई बजरंग बली की।'

यह मंत्र सिद्ध हो जाने के बाद इससे तेल को सात बार अभिमंत्रित करें। इस तेल की बिंदी अपने मस्तक पर लगाकर किसी सभा आदि में जाने पर पूरी सभा साधक के प्रति मोहित हो जाएगी। यदि सात बार अभिमंत्रित यह तेल किसी स्त्री के अंग से स्पर्श करा दिया जाए तो वह भी साधक के प्रति मोहित हो जाएगी।

तेल का मोहिनी मंत्र-2

इस मंत्र की सिद्धि भी 'तेल का मोहिनी मंत्र-1' के ही अनुरूप है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो मोहना राणी पलंग चढ़ बैठी,
मोह रहा दरबार।
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति,
दुहाई लोना चमारी की।
दुहाई गोरा पार्वती की,
दुहाई बजरंग बली की।'

इस मंत्र के सिद्ध हो जाने पर पूर्व की भांति तेल को सात बार अभिमंत्रित करने से और उसका तिलक मस्तक पर लगाने से पूरी सभा के लोग मोहित हो जाते हैं।

सुपारी मोहिनी मंत्र-1

सूर्य ग्रहण के समय नाभि तक जल में खड़े हो जाएं और सात सुपारियां लेकर उन्हें सात बार इस मंत्र से अभिमंत्रित करें। मंत्र इस प्रकार है—

'पीर में नाथ पीर तू नाथ जिसे खिलाऊं, तिसे बस करना, फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

इस मंत्र से अभिमंत्रित सुपारियों को निगल जाएं। जब वे शौच द्वारा पेट से बाहर निकलें तो उन्हें निकाल लें। पहले उन्हें साफ-स्वच्छ जल से धो लें, फिर गाय के दूध से धोएं। इसके बाद उन्हें इस मंत्र से सात बार अभिमंत्रित करें और गुग्गुल की धूनी देकर अपने पास सुरक्षित रख लें।

ये अभिमंत्रित सुपारियां सिद्ध हो चुकी हैं। अब इन्हें सात बार अभिमंत्रित, करके जिसे भी खिलाया जाएगा, वह साधक के प्रति मोहित हो जाएगा।

सुपारी मोहिनी मंत्र-2

सर्वप्रथम सात सुपारियां लें। रविवार के दिन से आरम्भ करके 21 दिन तक उन्हें प्रतिदिन लगातार 108 बार इस मंत्र से अभिमंत्रित करें। इससे यह मंत्र और ये सुपारियां सिद्ध हो जाएंगे। मंत्र इस प्रकार है—

'खरी सुपारी टामनगारी,
राजा-प्रजा खरी पियारी।
मंत्र पढ़ लगाऊं तो रही या कलेजा लावे तोड़,
जीवत चाटे पगलथी मूवे सेवे मसान।
या शब्द की मारे न लावे तो जती हनुमंत की आज्ञा न माने,
शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

इसके अलावा सात सुपारियों को सूर्य ग्रहण में भी सरलता से सिद्ध किया जा सकता है। सूर्य ग्रहण में इन सुपारियों को इस मंत्र से 108 बार अभिमंत्रित करें तो ये सिद्ध हो जाती हैं।

इन सिद्ध की गई सुपारियों को जिसे भी खिलाया जाएगा, वह साधक के प्रति मोहित हो जाएगा।

सुपारी मोहिनी मंत्र-3

इस मंत्र द्वारा सात सुपारियों को 'सुपारी मोहिनी मंत्र-2' की भांति ही सिद्ध कर लें। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ देव नमो हरय ठं ठं स्वाहा।'

इन सिद्ध सुपारियों को जिस व्यक्ति को खिलाया जाएगा, वह साधक के प्रति मोहित हो जाएगा।

लौंग मोहिनी मंत्र

इस मंत्र की सिद्धि के लिए जप और पूजन शनिवार के दिन से आरम्भ करें। शनिवार की रात्रि में दीपक जलाकर पहले उसका विधि-पूर्वक पूजन करें और 21 मंत्रों का जप करें। 22 दिन तक लगातार इसी प्रकार नित्य-प्रति मंत्र-जप करते रहें। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ सत्य नाम आदेश गुरु को।
लौंगा लौंगा मेरा भाई,
इन्हीं लौंगा ने शक्ति चलाई।
पहली लौंग राती माती,
दूजी लौंग जीवन माती।
तीजी लौंग अंग मरोड़े,

चौथी लौंग दोऊ कर जोड़े।
चारों लौंग जो मेरी खाय,
अमुक के पास सों अमुक कने आ जाय।
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति,
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

इस मंत्र में 'अमुक' शब्द दो बार प्रयुक्त हुआ है। पहले 'अमुक' शब्द से तात्पर्य स्त्री के संरक्षक के नाम से तथा दूसरे 'अमुक' का तात्पर्य साधक के नाम से है। मंत्र में इसी प्रकार नामों का ही उच्चारण करें, न कि अमुक का।

इस प्रकार मंत्र जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। इस सिद्ध मंत्र से चार लौंग लेकर सात बार अभिमंत्रित करें। इन अभिमंत्रित लौंगों को जिस व्यक्ति को खिला दिया जाएगा, वह साधक के प्रति मोहित हो जाएगा।

स्त्री आकर्षण मंत्र-1

इस मंत्र का संध्याकाल में प्रतिदिन एक हजार की संख्या में जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ चामुण्डे तरुततु अमुकाय कर्षय आकर्षय स्वाहा।'

इस मंत्र का इक्कीस दिन तक लगातार जप किया जाता है। मंत्र में प्रयुक्त शब्द 'अमुकाय' के स्थान पर उस स्त्री के नाम का उच्चारण किया जाता है, जिसे आकर्षित करना हो।

❑ मंत्र सिद्ध हो जाने के पश्चात इस मंत्र को चंदन या लाख से लाल वस्त्र पर लिखकर और अपना मुख उत्तर की ओर करके पूजन किया जाता है। इसके पश्चात इसे पृथ्वी में गाड़ दें और इक्कीस दिन तक चावल के धोवन के पानी से इसे सींचते रहें। इस प्रयोग को विधिपूर्वक करने से कठोर-से-कठोर हृदय वाली स्त्री भी साधक की ओर आकर्षित होकर खिंची चली आएगी।

❑ काले सर्प के फन का चूर्ण बनाकर उसे अग्नि के समर्पित करें। इस दौरान सिद्ध किए गए मंत्र का भी निरंतर जप करते रहें। इस सर्प के चूर्ण के धुएं की धूप अपने अंग में लें। मंत्र में जिस स्त्री के नाम का उच्चारण किया जाएगा, वह साधक की ओर आकर्षित होकर खिंची चली आएगी।

❑ अर्जुन वृक्ष के बांदा को आश्लेषा नक्षत्र में विधि-विधानपूर्वक आमंत्रित करके अगले दिन लाएं। इसे बकरी के मूत्र में पीस लें, फिर इसे इस सिद्ध मंत्र से अभिमंत्रित कर लें। जिस स्त्री को आकर्षित करना हो, इस मंत्र के उच्चारण में उसी का नाम लें और इस मिश्रण को उसी स्त्री के मस्तक पर डाल दें। वह स्त्री अनायास ही साधक की ओर आकर्षित होकर खिंची चली आएगी।

स्त्री आकर्षण मंत्र-2

इस मंत्र का अर्धरात्रिकाल में जप किया जाता है। साधक अर्धरात्रि में खुले आकाश के नीचे खड़ा होकर उस स्त्री का स्मरण करें जिसे आकर्षित करना है, फिर इस मंत्र का 1200 बार जप करे। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ आकर्षय।'

तीन दिन तक इसी प्रकार लगातार जप करते रहने से साध्य स्त्री साधक की ओर आकर्षित हो जाती है।

विशेष आकर्षण मंत्र-1

इस मंत्र का प्रतिदिन दस हजार की संख्या में जप किया जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ ह्रों ह्रीं ह्रां नमः।'

यह जप आरम्भ करने से पूर्व उस व्यक्ति का स्मरण कर लेना चाहिए, जिसे अपनी ओर आकर्षित करना हो। पंद्रह दिन तक इसी प्रकार लगातार जप करते रहने से साध्य व्यक्ति साधक की ओर आकर्षित हो जाता है।

विशेष आकर्षण मंत्र-2

इस मंत्र का किसी भी मंगलवार से आरम्भ करके इक्कीस दिन तक नित्य-प्रति दस हजार की संख्या में जप करने से यह सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो भगवते रुद्राय एदृष्टि लेखि नाहर : स्वाहा।
दुहाई कंसासुर की जूट जूट फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

कभी-कभी यह मंत्र दस दिन तक जप करने पर भी सिद्ध हो जाता है। इसके अतिरिक्त ग्यारह मंगलवारों में कुल दस हजार की संख्या में जप करने पर भी यह मंत्र सिद्ध हो जाता है।

मंत्र सिद्ध हो जाने के पश्चात जप का दशांश होम, होम का दशांश तर्पण और तर्पण का दशांश ब्राह्मण-भोजन कराना चाहिए।

मंत्र सिद्ध हुआ है अथवा नहीं, इसका परीक्षण एक छोटे-से प्रयोग द्वारा बड़ी सरलता से किया जा सकता है। एक सरकण्डे को बीच में से चीरकर लम्बाई में उसके दो टुकड़े कर लें। दोनों सरकण्डों के सिरों को दो आदमी अपने अलग-अलग हाथों में पकड़ लें। फिर बिनौला, सरसों और कुछ मात्रा में चूहे के बिल की मिट्टी तीनों को मिश्रित करके चूर्ण बना लें। इस चूर्ण को सिद्ध मंत्र से अभिमंत्रित करके सरकण्डे के टुकड़ों पर मारें। यदि ऐसा करने से सरकण्डे के दोनों टुकड़े एक दूसरे की ओर झुकते हुए आपस में मिल जाएं तो समझ लें कि मंत्र सिद्ध हो गया।

जिस व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित करना हो, उसका पहनने वाला कोई कपड़ा लें। उस कपड़े पर बिनौला, सरसों और चूहे के बिल वाला अभिमंत्रित चूर्ण डालें तो वह व्यक्ति साधक की ओर आकर्षित हो जाएगा। यदि साध्य व्यक्ति गांव, शहर अथवा देश से दूर विदेश में है तो उसके कपड़े पर अभिमंत्रित चूर्ण डालने से वह व्यक्ति भी साधक की ओर आकर्षित होकर खिंचा चला आएगा।

विशेष आकर्षण मंत्र-3

इस मंत्र का मंगलवार से आरम्भ करके 21 दिन तक प्रतिदिन दस हजार की संख्या में जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ ह्रीं ठः ठः स्वाहा।'

मंत्र सिद्धि के पश्चात 'सिद्धि' का परीक्षण 'विशेष आकर्षण मंत्र-2' के अनुसार सरकण्डे के टुकड़ों द्वारा ही किया जा सकता है। किसी व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए भी इसका प्रयोग उपरोक्त 'मंत्र-2' के अनुसार ही करना चाहिए।

विशेष आकर्षण मंत्र-4

होली, दीपावली अथवा किसी ग्रहणकाल में इस मंत्र का दस हजार की संख्या में जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो आदि रूपाय अमुकं आकर्षणं कुरु कुरु स्वाहा।'

इस मंत्र में प्रयुक्त हुए शब्द 'अमुक' के स्थान पर उस व्यक्ति के नाम का उच्चारण करें, जिसे आकर्षित करना हो।

❑ मंत्र सिद्ध हो जाने के पश्चात साधक अपनी अनामिका उंगली से रक्त की कुछ बूंदें निकाले और सफेद कनेर की कलम बनाए। इस कलम और रक्त की बूंदों के द्वारा भोजपत्र पर इस सिद्ध मंत्र को लिखें। इस भोजपत्र को साध्य व्यक्ति के नाम से 108 बार अभिमंत्रित करके शहद में डाल दें। ऐसा करने पर वह व्यक्ति जिसे अपने प्रति आकर्षित करना हो, वह अनायास ही साधक की ओर खिंचा चला आता है। साध्य व्यक्ति चाहे साधक से सौ योजन दूर क्यों न हो, वह भी साधक के प्रति आकर्षण महसूस कर खिंचा चला आता है।

❑ एक मनुष्य की खोपड़ी लें। इस खोपड़ी पर केसर तथा गोरोचन के द्वारा यह सिद्ध मंत्र लिखें। इसके पश्चात् इस खोपड़ी को दिन-भर में तीनों समय खैर के अंगारों पर तपाएं। ऐसा करने से साध्य व्यक्ति साधक के प्रति आकर्षित हो जाता है।

❑ काले धतूरे के पत्ते का रस और गोरोचन को मिश्रित कर लें। सफेद कनेर की कलम और इस मिश्रण से भोजपत्र पर इस सिद्ध मंत्र को लिखें। फिर भोजपत्र को खैर के अंगारों पर तपाएं। ऐसा करने पर साध्य व्यक्ति साधक की ओर आकर्षित होकर खिंचा चला आता है।

❑❑

7

विद्वेषण और शाबर मंत्र

'विद्वेषण' से तात्पर्य दो या दो से अधिक मित्रों, परिजनों अथवा संबंधियों के स्नेहिल व्यवहार में कटुता और विद्वेष भावना को भड़काने से है। कुछ विशेष परिस्थितियों में 'विद्वेषण' करना व्यक्ति, परिवार और समाज के हित में होता है। जैसे दो मित्रों के बीच के संबंध इतने गहरे हैं कि वे आंख बंद करके एक-दूसरे पर विश्वास करते हैं; किंतु उनके ये गहरे संबंध परिवार और समाज के लिए तब अत्यंत दुखदायी और अहितकर बन जाते हैं, जबकि दोनों मित्रों में से एक कुटेव (बुरी लत, जैसे मदिरापान अथवा व्यभिचार) का शिकार होता है। दूसरा मित्र जो किसी भी प्रकार के व्यसन का आदी नहीं होता, अपने व्यसनी मित्र की संगति में वह भी वैसी ही राह पकड़ सकता है। ऐसी दशा में 'विद्वेषण' के द्वारा दोनों मित्रों को अलग करना हितकारी कार्य है।

इसी प्रकार यदि कोई विवाहिता स्त्री किसी कारण पर-पुरुष के आकर्षण का शिकार हो जाती है तो ऐसी दशा में उसका दाम्पत्य जीवन पूरी तरह से तहस-नहस हो सकता है। यही नहीं, बल्कि उसके उस परिवार की मर्यादा भी मिट्टी में मिल सकती है जिस परिवार की वह कभी बेटी थी और जिसकी अब बहू है। इस प्रकार एक साथ कई परिवारों को क्षोभ, अपमान और ग्लानि का शिकार होना पड़ सकता है। ऐसी दशा में भी 'विद्वेषण' बड़ा कारगर सिद्ध होता है।

मुख्य रूप से विद्वेषण को दो भागों में बांटा जा सकता है। पहले भाग में पुरुष वर्ग से संबंधित विद्वेषण और दूसरे भाग में स्त्री वर्ग से संबंधित विद्वेषण आता है।

पुरुष वर्ग से संबंधित विद्वेषण में मित्रों, शत्रुओं, प्रेमियों और शासक तथा अधीनस्थ अधिकारियों आदि के बीच का विद्वेषण उल्लेखनीय है। इसी प्रकार स्त्री वर्ग से संबंधित विद्वेषण में दो गहन सखियों, अपने शत्रु की पत्नी, मां और बहन आदि से अपने परिवार में किसी स्त्री सदस्य के मैत्री भाव को समाप्त करने के लिए किया गया विद्वेषण आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

जो कार्य व्यक्ति, परिवार और समाज में दुःख, क्षोभ, ग्लानि और अपमान का कारण बनते हैं, शाबर साधकों को ऐसे कार्यों के लिए शाबर मंत्रों के प्रयोग से बचना चाहिए। इस प्रकार के कार्यों के लिए किए गए शाबर मंत्रों के प्रयोग परोक्ष

या अपरोक्ष रूप में अंततः साधकों के लिए पतन का कारण बनते हैं; अतः साधक स्वविवेक से इस बात का निर्णय करे कि किस प्रकार के कार्य उसके तथा समाज के हित में हैं और ऐसे कार्य के लिए ही उसे प्रयास करने चाहिए।

विद्वेषण मंत्र-1

इस मंत्र का एक लाख की संख्या में जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो नारदाय अमुकस्य अमुकेन सह विद्वेषणं कुरु कुरु स्वाहा।'

इस मंत्र में प्रयुक्त हुए शब्द 'अमुकस्य अमुकेन सह' के स्थान पर जिन व्यक्तियों के बीच विद्वेष कराना हो, उनका नाम उच्चारित करना चाहिए।

❑ घोड़े तथा भैंस का बाल लें। इन दोनों को संयुक्त रूप से इस सिद्ध मंत्र से अभिमंत्रित करें। जिस सभा अथवा दो या दो से अधिक लोगों के बीच विद्वेषण कराना हो, वहां पर दोनों संयुक्त रूप से अभिमंत्रित बालों को जलाकर धूप देने से वहां उपस्थित सभी लोगों में विद्वेष भावना भड़कने लगेगी।

❑ सर्प का दांत तथा मोर की बीट प्राप्त करें। इन दोनों को घिसकर सिद्ध मंत्र से अभिमंत्रित करें और इसका अपने मस्तक पर तिलक लगाएं। ऐसा तिलक लगाकर साधक जिन दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच पहुंच जाएगा, उनमें विद्वेष भावना जाग जाएगी।

❑ सेही के कांटे को इस सिद्ध मंत्र से अभिमंत्रित करके जिस घर के द्वार पर गाढ़ दिया जाएगा, उस घर के लोगों के बीच विद्वेष की भावना प्रबलता से भड़क उठेगी।

विद्वेषण मंत्र-2

यह मंत्र निर्जन एकांत अथवा श्मशान भूमि में जप करने से सिद्ध होता है। यह मंत्र उग्र होने के कारण साधक को पूजन तथा जप क्रिया आरम्भ करने से पूर्व आत्मसुरक्षा का उपाय करके अपनी सुरक्षा को सुनिश्चित कर लेना चाहिए। भोग के रूप में साधक चार अंडे, मांस, मदिरा और पांच प्रकार की मिठाइयां रखे। अपने आपको रक्षा घेरे में रखकर साधक मशाण देव और मैली देवी का पूजन करे। मशाण की मिट्टी बना और चिता में पका दीपक प्रज्वलित करे। यदि ऐसा दीपक न मिले तो वहीं-कहीं पड़े किसी ठीकरे को दीपक की भांति प्रयोग करे। जपकाल में यह दीपक बुझने न पाए, ऐसी व्यवस्था करके रखनी चाहिए। धूप हेतु गुग्गुल का प्रयोग करे।

पूजन करने के पश्चात् एक टूटे बर्तन अथवा श्मशान में ही पड़े किसी टूटे-फूटे घड़े आदि में अंडा, मांस चारों दिशाओं में रखकर उस पर मदिरा अर्पित करे।

इसके बाद अभय भाव और शांतचित्त से मंत्र का जप करें। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो मशाण बसी चण्डाली
चमारी मशाणी मुर्दे को खाय
लोंच लोंच कच कच चबाए।
किट किट बत्तीसी किट किटाए,
कड़ कड़ हाड़ चबाए।
हमारे बैरी अमुक को अमुक से
बहत्तर सौ जोजन देश-परदेश में भगाए,
भगाए-भगाए पगलाए।
धूल फांके बाल नोंचे मशाण मैली की गोद में गिरे।
चौकी मशाण की मशाण की मैली महारानी
आसो भंगन हमारे काज साधै,
बंगाल को सेवड़ा मनसराम भाजै।'

इसी प्रकार इस मंत्र की पांच माला का जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है।

मंत्र सिद्ध हो जाने के पश्चात् जब किसी व्यक्ति का अन्य व्यक्ति से विद्वेष कराना हो तो रात्रिकाल में चिता की अग्नि में एक माला का हवन करे। हवन द्रव्य में मांस और गुग्गुल का प्रयोग करे। इस मंत्र में जहां पर 'अमुक को अमुक' का प्रयोग हुआ है, वहां पर जिनके बीच विद्वेष कराना हो, उनके नाम का उच्चारण करे। इस प्रयोग से दोनों व्यक्तियों के बीच विद्वेषण हो जाता है।

विद्वेषण मंत्र-3

यह मंत्र निर्जन, एकांत स्थान अथवा श्मशान भूमि में सिद्ध होता है। इस मंत्र की सिद्धि-प्रक्रिया भी 'विद्वेषण मंत्र-2' के ही अनुसार हैं। मंत्र इस प्रकार है—

'चप चप चिता चापे,
अंगारे अमुक अमुक को आपस में मारे।
टारे बड़े सकारे ले जाए,
समंदर पार अमुक को पगलाए।
पगलाए नचाय-नचाय फुम फुम फुंकार करे,
मशाणी भैंरों हुंकार करे।
अमुक-अमुक पे कोप टूटे,
भवानी भंगन हुकुम करे,
हुकुम टरे तो जलती चिता में जरे।'

इस मंत्र की प्रयोग विधि भी उपरोक्त मंत्र के अनुसार ही है।

विद्वेषण मंत्र-4

इस मंत्र की सिद्धि दीपावली की रात्रि में की जाती है। दीपावली को अर्द्धरात्रि से पूर्व दस-ग्यारह बजे से लेकर ब्रह्ममूहूर्त्त लगभग चार बजे तक इस मंत्र का जप करने से यह सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'चार चिता चढ़ बैठी चण्डी,
चारहु ओर करे वनखण्डी।
खण्ड खण्ड खंजड़ी बजाय महिना,
मियाद सेज चढ़ जाए अमुकी
अमुकी को पगलाय महिना।
छै में मुकुट गिराय
जो परै बैर आपस में,
काली अघोरी काल विलाय।
दुहाई अघोर चण्डी की।'

यदि विद्वेष पुरुष-पुरुष के बीच करना है तो मंत्र-उच्चारण में 'अमुकी-अमुकी' के स्थान पर 'अमुक-अमुक' का उच्चारण करें। मंत्र हेतु जप से पूर्व चण्डी का पूजन किया जाता है। इसमें भोग के द्रव्य के रूप में मदिरा के स्थान पर दही-गुड़ तथा मांस के स्थान पर उड़द का प्रयोग किया जाता है।

इस प्रयोग से तीव्र विद्वेषण हो जाता है। यदि इस मंत्र का प्रभाव लगातार छः महीने तक रहे और यथोचित उपचार न किया जाए तो प्रभावित व्यक्ति की मृत्यु भी हो सकती है।

विद्वेषण मंत्र-5

यह प्रयोग मंगलवार को किया जाता है। राई, राख और सरसों को समान मात्रा में लें और आक-ढाक की लकड़ी में इस मंत्र का उच्चारण करते हुए इनकी 108 आहुतियां दें। मंत्र इस प्रकार है—

'बारा सरसों तेरा राई,
पाट की माटी मसान की छाई।
पढ़कर मारूं करद तलवार,
अमुका कढ़े न देखे अमुकी का द्वार।
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति,
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।

सत्य नाम आदेश गुरु का।'

वास्तव में यह मंत्र प्रेमी-प्रेमिका के बीच पनप रहे अनावश्यक प्रेम को समाप्त करने के लिए है। अमुका के स्थान पर पुरुष का तथा अमुकी के स्थान पर स्त्री का नाम उच्चारित करना चाहिए।

मंत्रोच्चारण और आहुतियों के बाद थोड़ी सी राख लेकर उन स्त्री-पुरुष के द्वार के सामने डाल देनी चाहिए, जिनके बीच विद्वेष कराना हो। ऐसा करने से प्रबल विद्वेष उत्पन्न हो जाता है।

विद्वेषण मंत्र-6

दीपावली की रात्रि अथवा ग्रहणकाल में इस मंत्र का दस हजार जप करने पर यह सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो नारायणाय अमुके अमुकेन सह विद्वेष कुरु-कुरु स्वाहा।'

इस मंत्र में प्रयुक्त शब्द 'अमुक अमुकेन' के स्थान पर जिन व्यक्तियों के बीच विद्वेष कराना हो, उनके नाम का उच्चारण किया जाता है।

❑ यह मंत्र सिद्ध हो जाने के बाद सबसे पहले हाथी तथा सिंह के बाल लाएं और जिन व्यक्तियों के बीच विद्वेष उत्पन्न करना हो, उनके पैरों के नीचे की मिट्टी प्राप्त करें। इन तीनों वस्तुओं को एक जगह एकत्र करके किसी कपड़े में पोटली-सी बांधकर पृथ्वी में गाढ़ दें। इस स्थान पर अग्नि प्रज्वलित करके मंत्रोच्चारण करते हुए 108 चमेली के फूलों की आहुति दें। ऐसा करने से दोनों व्यक्तियों के बीच प्रबल विद्वेष उत्पन्न हो जाएगा।

❑ जिन व्यक्तियों के बीच विद्वेष उत्पन्न करना हो, उनके पैरों के नीचे की मिट्टी प्राप्त करें और चूहे तथा बिल्ली की विष्ठा लाएं। इन वस्तुओं को सानकर एक पुतले का निर्माण करें। इस पुतले को नीले वस्त्र में लपेटकर उसे सिद्ध मंत्र से 108 बार अभिमंत्रित करें। इसके बाद इस पुतले को श्मशान भूमि में ले जाकर गाढ़ दें। इससे उन व्यक्तियों के बीच प्रबल विद्वेष उत्पन्न हो जाएगा।

❑ घुग्घू और कौए पक्षी का एक-एक पंख प्राप्त करें। इन पंखों को अपने अलग-अलग हाथों में थामकर इन्हें सिद्ध मंत्र से अभिमंत्रित करें, फिर इन्हें काले सूत में लपेट दें। इसके बाद उन्हें हाथ में लेकर किसी नदी अथवा तालाब पर पहुंचें और सिद्ध मंत्र का 108 बार जप करते हुए तर्पण करें। ऐसा करने पर साधक जिन व्यक्तियों के नाम का मंत्र-जप में उच्चारण करेगा, उन पर प्रबल विद्वेष की भावना हावी हो जाएगी।

❑❑

8

उच्चाटन और शाबर मंत्र

'उच्चाटन' से तात्पर्य किसी व्यक्ति को अपने स्थान, अन्य व्यक्ति अथवा विशेष परिस्थितियों से उसके मन को खिन्न करके निष्कासित कर देना है। यद्यपि यह एक अभिचारिक कर्म है, तथापि कुछ विशेष परिस्थितियों में यदि किसी की प्राण, धन अथवा मानरक्षा के लिए इसका प्रयोग किया जाए तो यह कर्म भी व्यक्ति और समाज के हित में हो सकता है।

यदि कोई सुंदरी अपने रूप और यौवन के बल पर किसी युवक के धन और मान को लूट रही है और युवक इस लूट से अनभिज्ञ उसकी रूपराशि में उलझा हुआ स्वयं को लुटाने के लिए प्रस्तुत किए जा रहा है तो ऐसी दशा में उच्चाटन कर्म बड़ा उपयोगी सिद्ध होता है। इसी प्रकार यदि कोई पुरुष अपनी काम-वासना की पूर्ति के लिए किसी नवयौवना को छल-बल के द्वारा अथवा मधुर प्रेम के सपने दिखाकर उसका कौमार्य लूटने और जीवन नष्ट करने को प्रयासरत है तथा किसी भी प्रकार के समझाने-बुझाने के सभी प्रयास असफल सिद्ध हो रहे हैं तो ऐसे में उच्चाटन से लाभ मिल सकता है।

उच्चाटन हिंसक पशु-पक्षियों और विषैले जीव-जंतुओं पर भी काफी उपयोगी सिद्ध होता है। यदि किसी गांव अथवा शहर में कोई हिंसक नरभक्षी बाघ अथवा चीता आदि आ गया है और उसे मारने अथवा वहां से भगाने के सभी प्रयास विफल हो रहे हैं तो उस पर किया गया उच्चाटन बड़ा कारगर होता है। इसी प्रकार यदि घर में कोई विषैला सर्प अथवा अन्य जीव घर में घुस आया है और उसके द्वारा किसी व्यक्ति को विषैले दंश के शिकार होने का भय है। यह विषैला जंतु काफी प्रयासों के बाद भी न तो मारा ही जा सका और न ही पकड़ने में आया, तब ऐसी दशा में केवल एक ही उपाय बचता है कि उसे घर से बाहर भगाने का कोई भी संभव उपाय किया जाए। ऐसा संभव उपाय शाबर विद्या में विद्यमान है और वह है उच्चाटन! उच्चाटन मंत्रों में विषैले ही नहीं, किसी भी प्रकार के जीव को अपने स्थान से दूर कर देने की अद्‌भुत क्षमता है।

यहां पर शाबर विद्या में वर्णित कुछ उच्चाटन कर्मों और मंत्रों का विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

उच्चाटन मंत्र-1

यह मंत्र मूलतः द्रविड़ भाषा का है। निर्जन स्थान में स्थित देवी मंदिर, चण्डी अथवा काली के मंदिर में मल्लिका पुष्प सहित पंचोपचार पूजन करें, फिर नित्य प्रति बारह सौ मंत्रों का रात्रिकाल में 21 दिन तक जप करें। इस प्रकार यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। यह मंत्र इस प्रकार है—

'कालि कालि महाकालि ग्लौं कालरात्रि कान्हेश्वरी ऐहि ऐहि ...मू (जिस पर उच्चाटन करना हो, उसका नाम उच्चारित करें) उच्चाटन देश ललुं तोर दादि इरंदाल देवि आणे पुतीर्लु तोरतादि इंदालु उम्म महेश्वर राणे विष्णुतीर तामुल इरंदाल वीरभद्र ओउम कालि कालि महाकालि महाकालि ओउम गुरु प्रसादम्।'

इस मंत्र के सिद्ध हो जाने के बाद नमक और राई की एक हजार आहुतियां दें।

❑ ब्राह्मण और चांडाल की भस्म को एकत्रित करें। इस भस्म को आपस में अच्छी तरह मिलाकर उसे सिद्ध मंत्र से सौ बार अभिमंत्रित करें। इस अभिमंत्रित भस्म को जिस व्यक्ति के घर में डाला जाएगा, उसका उच्चाटन हो जाएगा।

❑ रविवार के दिन आक के पत्रों को लाकर उन्हें इस सिद्ध मंत्र से सौ बार अभिमंत्रित करें। इन अभिमंत्रित आक के पत्तों को जिस व्यक्ति के घर में डाला जाएगा, उसका उच्चाटन हो जाएगा।

❑ कोयल की विष्ठा लाकर उसे इस सिद्ध मंत्र से एक हजार बार अभिमंत्रित करें। कोयल की यह अभिमंत्रित विष्ठा जिस व्यक्ति के घर में डाली जाएगी, उसका उच्चाटन को जाएगा।

❑ नीम की खूंटी को इस सिद्ध मंत्र से सौ बार अभिमंत्रित करें, फिर इस खूंटी को जिस व्यक्ति के घर में गाढ़ दिया जाएगा, उसका उच्चाटन होना निश्चित है।

उच्चाटन मंत्र-2

इस मंत्र का होली, दीपावली अथवा ग्रहणकाल में दस हजार की संख्या में जप करने से यह सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो भीमास्याय अमुक गृहे उच्चाटन कुरु कुरु स्वाहा।'

इस मंत्र में प्रयुक्त हुए शब्द 'अमुक' के स्थान पर उस व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए, जिसका उच्चाटन करना हो।

मंत्र सिद्ध कर लेने के बाद दोपहर में जिस स्थान पर गधा लेटा हो, उस स्थान की धूलि को पूर्व अथवा पश्चिम दिशा की ओर मुख करके बाएं हाथ से उठा

लाएं। इस धूलि को सिद्ध किए गए मंत्र से 108 बार अभिमंत्रित करें और इसे उस व्यक्ति के घर में फेंक आएं जिसका उच्चाटन करना हो। यह प्रयोग सात दिन तक लगातार करते रहें। ऐसा करने से उस व्यक्ति का उच्चाटन हो जाता है।

कर्नाटकी उच्चाटन मंत्र-3

इस मंत्र का जप मंगलवार से शुरू करें। जप मध्य रात्रि अथवा मध्याह्न में दक्षिण की ओर मुख करके नग्न अवस्था में किया जाता है। जप संख्या छः हजार है। यह मंत्र इस प्रकार है—

'नमो भगवति श्मशानवासिनी सकल भूत भयंकरि सर्वोच्चा टनकारिणि कालरुद्रेन क्रोधने वशरकारि उलमहाशक्ति नातो निदवर उच्चाटन माडु माडु विद्वनेनि नगे कालरुद्राणे कंद्रिका माक्षिपाणे कावेरी जम्बुकेश्वरनाणे गुरु शक्ति ह्री गुरु प्रसादम्।'

सात दिन तक इसी प्रकार मंत्र जप करते रहें। आठवें दिन अर्द्धरात्रि के समय चिता से लाई अग्नि में कौए और उल्लू के पंखों से हवन करें या मंगलवार को श्मशान से किसी चिता की भस्म लाकर उसे एक हजार मंत्रों से अभिमंत्रित करें। ऐसा करने के बाद इस भस्म को जिस व्यक्ति के सिर पर डाला जाएगा, उसका उच्चाटन हो जाएगा।

उच्चाटन मंत्र-4

होली, दीपावली अथवा किसी ग्रहणकाल में इस मंत्र का दस हजार की संख्या में जप करने से यह सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो भगवते रुद्राय दृष्टाकरालाय अमुकं सुपुत्र बांधवे सह हन-हन दह दह पच शीघ्र उच्चाटय उच्चाटय हुं फट स्वाहा ठः ठः।'

इस मंत्र में जिस स्थान पर 'अमुक' शब्द का प्रयोग हुआ है, उसके स्थान पर उस व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए जिसका उच्चाटन करना हो।

❑ मंत्र सिद्ध हो जाने के बाद कौए के पंख को सिद्ध मंत्र से 108 बार अभिमंत्रित करें। फिर इस पंख को शत्रु व्यक्ति के घर में गाढ़ दें। इससे उसका उच्चाटन हो जाएगा।

❑ उल्लू की विष्ठा तथा सरसों को परस्पर मिलाकर चूर्ण कर लें। इस चूर्ण को सिद्ध मंत्र से 108 बार अभिमंत्रित करें। इस अभिमंत्रित चूर्ण को जिस व्यक्ति के मस्तक अथवा शीश पर डाला जाएगा, उसका उच्चाटन हो जाएगा।

❑ गूलर की चार अंगुल लकड़ी को कीलनुमा बनाकर उसे इस सिद्ध मंत्र से 108 बार अभिमंत्रित करके यदि उसे किसी के घर की दीवार अथवा घर की चहारदीवारी में कहीं भी गाढ़ दिया जाए तो उसका प्रबल उच्चाटन हो जाता है।

❑ उल्लू के पंख को मंगलवार के दिन इस सिद्ध मंत्र से 108 बार अभिमंत्रित करें। फिर इसे उस व्यक्ति के घर में गाढ़ दें, जिसका उच्चाटन करना है।

❑ मनुष्य की 4 अंगुल हड्डी को कीलनुमा बनाकर उसे 1000 मंत्रों से अभिमंत्रित करें, फिर इसे उस व्यक्ति के घर में गाड़ दें जिसका उच्चाटन करना हो। इस प्रकार उसका उच्चाटन हो जाएगा।

❑❑

9

मारण और शाबर मंत्र

'मारण' से तात्पर्य किसी व्यक्ति को मंत्र-प्रयोग के द्वारा मौत के घाट उतार देने से है। किसी व्यक्ति के द्वारा दूसरे व्यक्ति को मारना अत्यंत घृणित और जघन्य अपराध है; किंतु उस स्थिति में जबकि 'मारण-कर्म' करने वाले व्यक्ति को अपने प्राण बचाने का कोई रास्ता न सूझ रहा हो और सामने वाला हर हाल में उसे मौत के घाट उतारने पर तुला हुआ हो...ऐसी दशा में भी 'मारण-कर्म' करने वाले को अपने शत्रु को पहले हर तरह से समझाना चाहिए; क्योंकि मानव हत्या शास्त्रों में भी निषेध और पापपूर्ण कर्म बताया गया है। यदि किसी भी तरह अपनी आत्मरक्षा होती दिखाई न देती हो तो फिर व्यक्ति को अपनी प्राण रक्षा के लिए अपने शत्रु की जान लेने का अधिकार है। शाबर विद्या भी इस स्थिति में 'मारण-कर्म' करने को उचित ठहराती है।

परिस्थितियां भले ही कैसी भी हों, मारण मंत्र का प्रयोग भली प्रकार सोच-विचार कर और अत्यंत आवश्यक होने पर ही करना चाहिए। ध्यान रहे कि किसी प्राणी की हत्या के पाप के फल को साधक को भी हर हालत में किसी न किसी रूप में अवश्य ही भुगतना पड़ता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए साधक को मारण-कर्म की ओर तभी प्रवृत्त होना चाहिए, जबकि इसके अलावा अन्य सभी मार्ग बंद हो गए हों, अन्यथा नहीं।

मारण की देवी अत्यंत उग्र और विध्वंसक है। इसी कारण इस कर्मशक्ति का स्फुरण तीव्र गति से होता है। मारण-कर्म में प्रवृत्त होने वाले साधक में इतनी शक्ति और सामर्थ्य होनी चाहिए कि वह शक्ति के इस तीव्र स्फुरण को झेल सके यदि किसी कारणवश साधक ऐसे समय में भयभीत होकर कायरता का भाव प्रकट करे और इस तीव्र स्फुरण को झेलने में अक्षम सिद्ध हो तो वह शक्ति साधक पर ही भीषण आघात करने से नहीं हिचकती।

इस प्रकार स्पष्टत: मारण-कर्म की ओर प्रवृत्त होने वाले साधकों को चाहिए कि सर्वप्रथम तो वे ऐसा कर्म करने में संकोच करें और अंततः यदि विवशतावश उन्हें यह कर्म करना भी पड़े तो इस बात का ध्यान रखें कि उनके स्वयं के प्राण भी

संकट में पड़ सकते हैं; अतः अपनी आत्मरक्षा के सभी उपाय करके और अपने आपको निर्भय, निर्द्वंद्व करके ही इस ओर पग बढ़ाएं।

यहां पर मारण मंत्र के कुछ विशिष्ट प्रयोग और उनकी साधना विधि को सविवरण प्रस्तुत किया गया है।

मारण मंत्र-1

यह मंत्र दीपावली की रात्रि अथवा ग्रहणकाल में दस हजार की संख्या में जप करने से सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ काली कंकाली महाकाली के पुत्र कंकाल भैंरूं।
हुकुम हाजिर रहे,
मेरा भेजा काल करै,
मेरा भेजा रक्षा करै
आन बांधूं बान बांधूं,
दसों सुर बांधूं।
नौ नाड़ी बहत्तर कोठा बांधूं।
फूल में भेजूं फल में जाइ,
कोठे जो पड़े थरथर कंपे लह-लह लहले।
मेरा भेजा सवा घड़ी सवा पहर कू वाउला न करे,
तो माता काली की सज्या पर पग धरे।
पे वाचा चूमे तो ऊवा सूके,
वाचा छोड़ि कुवाचा करे तो
धोबी नांद चमार कुंड में पड़े।
मेरा भेजा वाऊला न करे तो
महादेव की लटा टूट भूम में पड़े,
माता पार्वती के चीर पै चोट करै॥
बिना हुकुम नहीं मारना हो काली के पुत्र!
कंकाल भैंरूं फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा॥'

पान, सुपारी, बताशे, लौंग का जोड़ा, लोबान, धूप, कलावा, कपूर और खप्पर अथवा ठीकरे में सिंदूर के सात बेदा आदि से एक त्रिशूल बनाएं। इस त्रिशूल को सिद्ध किए गए मंत्र से बाईस बार अभिमंत्रित करें। फिर अग्नि में होम करें। ऐसा करने से जिस व्यक्ति के लिए यह मारण प्रयोग किया गया है, वह शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

मारण मंत्र-2

शनिवार, मंगलवार अथवा नवरात्रों में सर्वप्रथम काली-पुत्र भैरवजी का मदिरा आदि से पूजन किया जाए और बाकला का प्रसाद चढ़ाया जाए। इसके पश्चात इस मंत्र का नित्य प्रति दस हजार की संख्या में जप किया जाए तो यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो काली का पूत भैरव चाल्यो,
काला कूकर बैठ चाल्यो।
भौं भौं करै भैंरूं का साटा बैरी के माथे पड़े,
नस नाड्या फटें लोहू निकसे,
मैली मुशाणी चाटे चटकारा करे।
दिन उनारी बैरी मरे,
आसो मैरानी को वाचा सिद्ध हो।'

यह मंत्र सिद्ध हो जाने के बाद आटे का एक पुतला बनाएं और उसमें अपने शत्रु की प्राण-प्रतिष्ठा करें। इस पुतले को सामने रखकर सिद्ध मंत्र से एक हजार बार अभिमंत्रित करें। अब पुतले को जिस स्थिति में रखा जाएगा, वैसी शत्रु की दशा भी होगी।

❑ यदि इस पुतले को खैर के अंगारों की आंच में तपाया जाए तो शत्रु भीषण ज्वर रोग से पीड़ित हो जाएगा। यदि फिर पुतले को शीतल जल में डाल दिया जाए तो शत्रु का ज्वर ठीक हो जाएगा।

❑ आटे से निर्मित शत्रु की प्राण-प्रतिष्ठा और यथोचित मंत्रों से अभिमंत्रित इस पुतले को उस स्थान पर गाढ़ दिया जाए, जहां पर चिता के जलने से काला गोलाकार निशान बन जाता है। ऐसा करने पर शत्रु गंभीर रूप से रोगग्रस्त होकर मृत्यु का शिकार बनता है।

❑ अमावस्या की रात्रि में नग्न होकर यदि इस पुतले को चिताग्नि में डाल दिया जाए तो शत्रु मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

मारण-मंत्र-3

यह मंत्र ग्रहणकाल अथवा दीपावली की रात्रि में जप करने से सिद्ध होता है। इस मंत्र का दस हजार की संख्या में जप किया जाता है, तभी इसकी सिद्धि प्राप्त होती है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो नरसिंहाय कपिल जटाय
अमोघ वीचा सत्त वृत्ताय महोग्रचंडरूपाय।
ॐ ह्रीं ह्रीं क्षां क्षां क्ष्रीं क्ष्रीं क्ष्रीं फट् स्वाहा।'

❑ यह मंत्र सिद्ध करने के पश्चात अपने शत्रु को ध्यान में रखते हुए एक हजार लाल पुष्प, कोविदार तथा घी को मिलाकर होम करें। इसके साथ ही मंत्रोच्चारण भी करते रहें। ऐसा करने से शीघ्र ही शत्रु मृत्यु को प्राप्त होता है।

❑ कौए के पंख तथा पंजे प्राप्त करें। इनके साथ ही कुश हाथ में लेकर किसी नदी पर पहुंचें। इन वस्तुओं के साथ मंत्रोच्चारण करते हुए नदी में 21 अंजुलि तर्पण करें। ऐसा करने से जिस शत्रु का मन-भाव से ध्यान किया जाएगा, कुछ समय पश्चात् वह मृत्यु को प्राप्त हो जाएगा।

मारण मंत्र-4

अमावस्या की अर्द्धरात्रि में श्मशान भूमि में पहुंचकर सर्वप्रथम आत्मरक्षा मंत्र द्वारा स्वयं को सुरक्षित कर लें। फिर श्मशानाधिपति और मंत्रों की अधिष्ठात्री देवी काली को काले मुर्गे की बलि दें। इसके बाद बकरे का मांस मदिरा में डुबोकर चिता में भोग लगाएं, फिर दस हजार की संख्या में मंत्र जप करें। यदि इस रात्रि में मंत्र की जपसंख्या पूरी न हो सके तो शेष जप अगली रात में पूरा करें। यह मंत्र इस प्रकार है—

'खड़ खड़ खोपड़ी चबाए,
किट किट दांत किटकिटाए।
चटर-पटर चिता सुलगाए,
फट फट पिण्ड फोड़े चल।
तोह नरमुण्डी खप्पर में पधराऊं,
मांस मदिरा को भोग लगाऊं,
सात मशान की भसम भूत में कंकाली खप्पर बैठाऊं।
काल खप्पर में कौन बैठी,
काली कंकाली बैठी।
कहां जाए जहां भिजाऊं तहां जाए,
जा जा उड़ा गगन में खप्पर।
अमुक के घर अमुक को कलेजा फाड़-फाड़, चाब,
रुधिर भर खप्पर में ले आ।
उलट-पुलट धूं-धूं धुत्कार कारो,
धुवां उठा मशान चेता,
अमुक की चिता फूंक।
कालों के काल महाकाल के तीसरे नेत्तर की आन।'

यह मंत्र सिद्ध करने के पश्चात् चिता की अग्नि में मदिरा और बकरे के मांस

की इक्कीस-इक्कीस आहुतियां देते हुए मंत्रोच्चारण करें। फिर श्मशान में पड़े किसी घड़े के ऊपरी भाग को सावधानी से अलग करके तल वाले भाग में चिता की अग्नि डालें। जब तल भाग अग्नि से तपकर पूरी तरह सुर्ख हो जाए तो उसमें से अग्नि को निकाल लें और फिर उसमें लगभग 50 ग्राम कपूर डालें। कपूर के जलते ही उसमें मदिरा की पांच आहुतियां डालें और साथ ही मंत्रोच्चारण भी करें। इसके बाद नवरात्रों में सिद्ध नरमुण्ड में विकसित किए गए उड़दों को बकरे के मांस में खचाकर उसे तपते हुए खप्पर में उलट दें और उसे पुन: चिता की अग्नि में तपाएं। इस खप्पर में कुछ मात्रा जल की भी डालें। जब जल में मास उबलने लगे तो खप्पर को अग्नि से उतारकर ठंडा होने दें, फिर मांस में से उड़दों को निकालकर मांस को चिता की अग्नि में समर्पित करें। अब खप्पर तथा उड़दों को सुरक्षित रख लें।

❑ जब किसी शत्रु पर मारण प्रयोग करना हो तो इन उड़दों पर इस मंत्र की एक माला पढ़कर अभिमंत्रित करें। इन अभिमंत्रित उड़दों को जब शत्रु के घर की ओर फेंका जाएगा तो कुछ ही समय पश्चात् शत्रु की मृत्यु हो जाएगी।

❑ सात श्मशान से थोड़ी-थोड़ी शव-भस्म एकत्रित करें। उसे खप्पर में भरकर उसमें काली की स्थापना करें और उसमें मांस, मदिरा आदि का भोग लगाकर दीपक जलाएं। इस खप्पर में बारह काली चूड़ी, काजल, काली बिंदी, लाल रंग का कपड़ा, चिता में सिद्ध किए गए उड़द, लोहे की सात कीलें, श्मशान में पड़े घड़े के सात ठीकरे और सात कंकड़ तथा श्मशान में पड़ा लाल रंग का कफन रखकर मंत्रोच्चारण करें। फिर इस उक्त सामग्री से युक्त खप्पर को मंत्रोच्चारण करते हुए धीरे-धीरे अपने वक्ष से ऊंचा उठाते हुए आकाश की ओर उछाल दें। यह खप्पर 'सन्-सन्' की आवाज करता और चक्कर लगाता आकाश मार्ग से शत्रु के घर की ओर चला जाएगा।

यह मारण प्रयोग 'मूंठ' कहलाता है और यह शत्रु के प्राणों के लिए अत्यंत घातक सिद्ध होता है। जिस शत्रु पर मूंठ चलाई जाती है, उसे बचा पाना बड़ा कठिन होता है।

मारण मंत्र-5

इस मंत्र की सिद्धि भी अमावस्या की अर्द्धरात्रि में देवी काली के पूजन और मंत्र जप के द्वारा ही होती है। मंत्र इस प्रकार है—

'कालो खप्पर काल कूं खाय,
कंकाली खप्पर उड़वाय,
बीच खप्पर ठाड़ी हुमकाय।

चल-चल री कालिका ले उड़ ठीकरा,
मूंठ को अमुक के घर आर-पार उलट,
फोड़ हाड़ा तोड़ मांसा चांट।
खूंना कूं खप्पर भर पान कर,
नस की नाड़ी उखाड़ कर,
जुबान की जड़ी हाथ-भर खेंच।
पेट से लगा दांतन की बत्तीसी भींच,
अमुक को भस्म करंत।
चिता में डार जार जो न डारे जारे ते।
कुम्भी पाक नरक विष्ठा के ढेर,
पीव के दलदल में गिरे।'

यह मारण प्रयोग भी मूंठ ही कहलाता है। इसकी साधना-विधि भी मारण मंत्र-4 के अनुसार ही है। इसे पूर्व मंत्र के अनुसार ही मूंठ के रूप में प्रयोग किया जाता है।

मारण मंत्र-6

दीपावली की रात्रि अथवा ग्रहणकाल में इस मंत्र का दस हजार की संख्या में जप करने से यह सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो काल रूपाय अमुकं भस्मी कुरु कुरु स्वाहा।'

मंत्र में प्रयुक्त हुए शब्द 'अमुकं' के स्थान पर साध्य शत्रु के नाम का उच्चारण करें।

❑ यह मंत्र सिद्ध हो जाने के बाद एक चिता की लकड़ी लाएं। भरणी नक्षत्र में पड़ने वाले मंगलवार को उसे इस सिद्ध मंत्र से 108 बार अभिमंत्रित करें। यह अभिमंत्रित लकड़ी जिस व्यक्ति के द्वार पर गाढ़ दी जाएगी, उसकी तत्काल मृत्यु हो जाएगी।

❑ मंगलवार के दिन पंद्रह का यंत्र चिता की भस्म से विलोम करके बनाएं। पंद्रह का यंत्र इस प्रकार है—

6	1	8
7	5	3
2	9	4

इस यंत्र पर 108 बार उपरोक्त सिद्ध मंत्र का जप करें और जप करते हुए इस पर चिता की भस्म डालें। ऐसा करने पर शत्रु शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

❑ मनुष्य की हड्डी को पान में रखकर इस सिद्ध मंत्र से 108 बार अभिमंत्रित करें और जिस व्यक्ति को इसे खिला दिया जाएगा, उसकी तत्काल मृत्यु हो जाएगी।

मारण मंत्र-7

दीपावली की रात्रि अथवा ग्रहणकाल में इस मंत्र का दस हजार की संख्या में जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ ह्रीं अमुकस्य हन् हन् स्वाहा।'

इस मंत्र में प्रयुक्त शब्द 'अमुकस्य' के स्थान पर साध्य शत्रु के नाम का उच्चारण करें।

कनेर के एक हजार फूल लें। उन्हें शुद्ध सरसों के तेल में भिगोकर सिद्ध मंत्र से अभिमंत्रित करके अग्नि में होम करें। ऐसा करने से शीघ्र ही शत्रु की मुत्यु हो जाती है।

मारण मंत्र-8

दीपावली की रात्रि अथवा ग्रहणकाल में इस मंत्र का दस हजार की संख्या में जप करने से यह सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो हाथ फाउड़ी कांधे मारा भैंरू वीर मसाने खड़ा
लोहे की धनी वज्र का बाण वेग ना मारे तो देवी कालका
की आण गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा,
सत्य नाम आदेश गुरु का।'

मंत्र सिद्धि के पश्चात दीपावली की रात्रि में चौका लगाकर और दीप प्रज्वलित करके गुग्गुल की धूनी दें। फिर उड़दों को सिद्ध मंत्र से अभिमंत्रित करके दीपक पर पहले 108 बार मारें और फिर 18 बार मारें। इसके बाद उड़दों पर काले कुत्ते के खून को लगाकर, उन्हें राख में मिलाकर रखें। इन उड़दों में से तीन दाने लेकर उन्हें सिद्ध मंत्र से अभिमंत्रित करके शत्रु के शरीर पर मारें। ऐसा करने से शीघ्र ही शत्रु मृत्यु का शिकार हो जाता है।

❑❑

10

चमत्कारी शाबर सिद्धियां

शाबर विद्या में कुछ ऐसी चमत्कारी सिद्धियां हैं, जो यदि सौभाग्यवश गुरु-कृपा अथवा भवगत्-कृपा से किसी को प्राप्त हो जाएं तो उसका जीवन चमत्कारों से परिपूर्ण हो जाता है। इन सिद्धियों को पाकर जो व्यक्ति इतराने लगता है, स्वयं पर अभिमान कर ऊंची-ऊंची डींगें हांकने लगता है, धीरे-धीरे उसके ज्ञान का विपुल वैभव धूमिल होने लगता है; किंतु इन सिद्धियों को पाकर जो व्यक्ति लोक-कल्याण के कार्यों में जुट जाता है, उसकी सिद्धियां और शक्तियां द्विगुणित होती चली जाती हैं; अत: साधकों को अपनी सिद्धियों पर अभिमानवश विपरीत भाव रखने के बजाय लोक-कल्याण के भाव रखने चाहिएं। यहां पर कुछ चमत्कारी शाबर सिद्धियों के मंत्र और उनकी साधना आदि का सविस्तार विवरण दिया गया है।

चमत्कारी परी साधना मंत्र

इस मंत्र की सिद्धि के लिए किसी एकांत मगर रमणीक स्थान का चुनाव करना चाहिए। इस प्रकार के स्थान पर दीपावली अथवा नवरात्रों की रात्रि के दस बजे से लेकर बारह बजे तक मंत्र-जप करना चाहिए। मंत्र इस प्रकार है—

'आकाश परी के पांव घूंघरा
नाचती आवे बजाती आवे
सोती हो तो जगके आवे
जगती हो तो जल्दी आवे
छमाछम करे बादलों में घोर करे
मेरा हुकुम नहीं माने तो परीलोक से
नीचे जगतलोक में गिरे
हजार साल नरक भोगे
लाख-लाख बिच्छुन की पीड़ा भोगे
आन गोरा-पार्वती की
दुहाई शाबर बाबा की।

माता हिंगलराज की।
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति।'

जपकाल में पान का बीड़ा, लौंग और मिठाई साधक को हाथ में रखनी चाहिए। यह साधना तीस दिन तक इसी प्रकार निरंतर करते रहें। सिद्धि पूर्ण होने पर जब परी प्रकट हो तो साधक को अपने हाथ की वस्तुएं उसे देकर साष्टांग दण्डवत् करना चाहिए। फिर परी से मां, बहन अथवा पत्नी का संबंध स्थापित रखने तथा स्मरण करने पर आने का वचन ले लेना चाहिए। साधक से प्रसन्न परी सहर्ष इस प्रकार का वचन दे देगी।

साधना करते समय कभी-कभी परी के स्थान पर छलावा भी ऐसे रूप में सामने आ जाता है; अतएव साधक को परी और छलावे के रूप को अच्छी प्रकार समझ लेना आवश्यक है। साधना में रत रहने वाले साधक का अंतर्मन इस अंतर को सहज ही भांप लेता है, फिर भी यदि ऐसा न हो तो गुरुदेव अथवा मां हिंगलराज से यथार्थ वस्तुस्थिति जानने की विनती अवश्य करे।

जिन्दराज साधना मंत्र

साधक अपने घर के पूर्वी भाग में स्थित किसी भी स्थान पर अथवा पूर्वाभिमुख होकर मिट्टी का एक घोड़ा बनाए। इस घोड़े को पांच रंगों लाल, हरा, पीला, काला और सफेद से रंग दे। इस पंचरंगे घोड़े पर मूल-काठी आदि से शृंगार करे और फिर इसका पांच प्रकार के फूलों से पूजन करे। लौंग और लोबान की धूप जलाकर एक सौ मंत्रों से इस पंचरंगे घोड़े को अभिमंत्रित करें। मंत्र इस प्रकार है—

'सिर पे साफा हाथ में सांग कसे हैं,
बस्तर कसी लगाम बैठो उड़तो आतु है।
जिन्दवीर रणधीर धर्मध्वजा फहराती आवे,
जिन्दवीर बलखातौ आवे, जहां बुलाऊं वहीं पधारे।
कल्दारन के ढेर लगा रे,
लौंग से बुलाऊं लोबान से बुलाऊं,
फूल से बुलाऊं फूल में आवे।
जो-जो मांगू सो सो लावे,
एक पलक न देर लगावे।
बुलाय-बुलाय न आए अमुक चीज न लाय,
तो किले को जिन्दवीर न कहाय।
बजरंगी की सेवा में खटक लगाय,
काली मैया को रुलाय,

चाण्डाल की शराब में नहाय।
मेरा बुलाया न आया तो गुरु भोला की आन,
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति आदेश शाबर बाबा को!'

यह प्रयोग लगातार पांच दिन तक करते रहें। पांचवें दिन इस पंचरंगे श्रृंगारित घोड़े को किसी नदी के किनारे ले जाएं और आकाश में जिन्दराज के किले की ओर निहारते हुए भक्तिभाव से मंत्र का जप करते रहें।

ऐसा करने पर कुछ ही देर में यह पंचरंगा थोड़ा आकाश में उड़ जाएगा। ऐसा होने पर साधक को समझ लेना चाहिए कि यह मंत्र सिद्ध हो गया। यदि घोड़ा आकाश में न उड़े तो समझो कि अभी मंत्र की सिद्धि नहीं हुई। ऐसा होने पर साधक उस पंचरंगे घोड़े को नदी के किनारे ही छोड़कर लौट आए और इस प्रयोग को पुन: करे।

अधिक से अधिक पांच बार यह प्रयोग करने पर यह पंचरंगा घोड़ा आकाश में उड़ ही जाता है अर्थात् मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र सिद्ध हो जाने के पश्चात इस दिन से साधक को प्रतिदिन सौ बार इस मंत्र का जप आरम्भ कर देना चाहिए।

यह मंत्र-जप दो माह अर्थात साठ दिन तक इसी प्रकार करते रहना चाहिए। इकसठवें दिन जिन्दराज प्रकट हो जाएगा। यदि ऐसा न हो तो साधक को फिर भी निराश नहीं होना चाहिए और लगातार मंत्र-जप जारी रखना चाहिए। इकसठवें दिन से नब्बे दिन के बीच कभी भी जिन्दराज प्रकट हो सकता है।

जिन्दराज के प्रकट होने से पहले आकाश से चांदी के रुपयों की बरसात होने लगती है। जिन्दराज के आगमन पर साधक को उसका भली-भांति स्वागत-सत्कार करना चाहिए। लौंग-लोहबान की धूप करते हुए इत्र, फूल और बताशे आदि सामग्री भी अपने पास रखनी चाहिए।

प्रसन्न जिन्दराज से इस अवसर पर दर्शन देने का धन्यवाद करते हुए पुन: आवश्यकता पड़ने पर प्रकट होने का वचन ले लेना चाहिए। इसके बाद जब भी कभी जिन्दराज की आवश्यकता हो तो उसका आह्वान करते हुए लौंग का जोड़ा अर्पित कर मंत्र-जप करना चाहिए। इसके साथ ही लौंग-लोहबान की धूप भी देनी चाहिए। ऐसा करने पर जिन्दराज प्रकट होगा और साधक की मनोकामना पूर्ण करेगा।

लक्ष्मी साधना मंत्र-1

दीपावली की पूर्व पूर्णिमा को विधि-विधानपूर्वक आमंत्रित करके पीपल के पेड़ की जड़ को ले आएं। उसे नित्य प्रतिदिन स्नान कराकर श्रद्धा-भक्ति से प्रणाम करें और उस पर धूप, अगरबत्ती तथा प्रसाद आदि चढ़ाएं।

दीपावली की रात्रि में दीपमालिका प्रज्वलित करके पीपल की जड़ को आसन के नीचे रखकर मंत्र-जप करें। मंत्र इस प्रकार है—

'लच्छमी माई विसनु की लुगाई,
आओ माई आंगन में विराजो।
घर में भंडार भरो चांदनी-सी बरषो,
तारेन-सी चमको जो न पधारो,
तो पति की सेज भूलो।
चण्डू चाण्डाल की भोग बनो।
आदेश गोरखनाथ मछन्दर को,
दुहाई सात समन्दर की,
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति मंत्र सांचा।'

दीपावली की इस रात्रि में इस मंत्र का जितना भी जप हो सके, रात्रि जागरण करते हुए उतना जप करें। इसके पश्चात नित्य प्रतिदिन स्नान करके अपने आसन के नीचे पीपल की मूल को रखकर इस मंत्र का सौ बार जप करते रहें। निरन्तर इस प्रकार जप करते रहने से साधक के घर-परिवार में माता लक्ष्मी का वैभव धीरे-धीरे प्रकट होने लगेगा।

मंत्र-जप के दौरान दृष्टांत स्वप्न में साधक को अपने घर के आंगन में स्वर्णालंकारों से विभूषित एक अत्यंत सुंदर युवती के प्रवेश करते हुए दर्शन होंगे। इसके पश्चात् यह युवती घर में प्रवेश करती हुई दिखाई देगी। वास्तव में यह युवती मां लक्ष्मी का ही स्वरूप है। साधक का जैसे-जैसे मंत्र-बल बढ़ता जाएगा, माता लक्ष्मी का चतुर्दिक वैभव स्पष्ट रूप से प्रकट होने लगेगा।

ऐसे में साधक को सदैव स्त्रियों और ब्राह्मणों का सम्मान करना चाहिए तथा देवी-देवताओं में श्रद्धा-भक्ति रखनी चाहिए। इसके अलावा समय-समय पर साधक को दान-पुण्य भी करते रहना चाहिए।

लक्ष्मी साधना मंत्र-2

इस मंत्र की सिद्धि भी दीपावली की पूर्व पूर्णिमा को विधि-विधानपूर्वक पीपल की जड़ को आमंत्रित कर लाने और मंत्र-जप करने से होती है। यह मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो भगवती समन्दर की बेटी,
विष्णु की रानी आओ लक्ष्मी महारानी।
हम मानुष तुम भगवती,
हमें भी बनाओ कुबेरपति।

जो न बनाओ धनपति तो गिरो नरककुंड में,
लाख-लाख बिच्छुन की पीड़ा सहो।
दुहाई-दुहाई श्रीनाथ भगवान् की।'

इस मंत्र की सिद्धि भी पूर्व मंत्र 'लक्ष्मी साधना मंत्र-1' की भांति ही करनी चाहिए। इस मंत्र का नित्य प्रतिदिन जप करने से माता लक्ष्मी की साधक पर अवश्य ही कृपा होती है। साधक को इस मंत्र की एक माला का जप प्रतिदिन हमेशा करना चाहिए।

स्वप्न साधना मंत्र

नवरात्रों में इस मंत्र का दस हजार की संख्या में जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'सपन सलोनी सुंदर लोनी,
गगन मगन पे चांद बरोनी।
राजा प्रजा सबहि पुकारे,
दोऊ कर जोरे वन्दें सारे।
रात-रात में हाल दिखावे,
सपने में लीला सब आवे।
आगल-पाछल सकल बतावे,
लूना जोगन दरश करावे।
न बतलाए हमार मनोरथ,
गिर शूकर-मैला में जावे।
दुहाई शिवशंकर की मन्सा पूरन की।'

❑ स्वप्न में साधक को जिस समस्या का हल खोजना है, इस मंत्र की सिद्धि उसे अनायास वह हल स्वप्न में बता देती है। ऐसी किसी भी आवश्यकता के पड़ने पर साधक एक समय भोजन करे। एक नए कोरे करवे (छोटा घड़ा) में स्वच्छ जल भरकर उसमें आम के पत्ते डाल दे। इस करवे को सामने रखकर इसे सिद्ध मंत्र की एक माला से अभिमंत्रित करे। इसके पश्चात् इस करवे को सिर की ओर रखकर दाईं करवट लेटकर मन ही मन मंत्र का जप करते हुए सो जाए। शयन नीचे भूमि पर ही साफ-स्वच्छ कपड़ा डालकर ही करे। ऐसा करने पर रात्रिकाल में साधक को अपनी समस्या का स्पष्ट हल मिल जाएगा। प्रात: उठते ही सबसे पहले अपने स्वप्न में दिखाई दिए हल को किसी कागज पर साफ-साफ लिख ले। यह सोचकर कि स्वप्न याद रह जाएगा, साधक लापरवाही न करे।

❑ यदि इस सिद्ध मंत्र की एक माला का जप अमरबेल पर किया जाए और

इसके बाद भूमि पर साफ-स्वच्छ कपड़ा बिछाकर शयन किया जाए तो साधक को तब अपनी समस्या का हल स्वप्न में मिल जाता है।

स्वप्न में गुप्त निधि दर्शन हेतु मंत्र

इस मंत्र की सिद्धि भी नवरात्रों में ही होती है। साधक द्वारा नवरात्रों में दस हजार की संख्या में इस मंत्र का जप करने पर यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'हरि-भरी हरियाली माता,
धरती कोख से सम्पत नाता।
डूड़े-कूड़े महल अटारी,
टूटे-फूटे खडेरा हारी।
गर्भ छिपी क्यों री महतारी,
निकर दिखे हम सुखारी।
तोको इच्छक कौन करां,
हमें सब गुपत बता।
सुपने में सब ग्यान करावे,
नेम-टेक को सब बतलावे।
दुहाई कुबेर के कुबेर की,
आदेश शाबर बाबा को।
जयकारा माता हिंगलराज को।'

मंत्र सिद्ध होने के पश्चात साधक को जिस स्थान पर गुप्त निधि होने का संदेह हो, वहीं पर अथवा उसके आस-पास इस सिद्ध मंत्र का जप करते हुए सो जाए। यदि उस स्थान अथवा उस स्थान के आस-पास शयन करना संभव न हो तो उस स्थान की थोड़ी-सी मिट्टी ले आए। इस मिट्टी को सिद्ध मंत्र की एक माला का जप करके अभिमंत्रित करे और फिर इसे अपने सिरहाने रखकर सो जाए।

ऐसा करने पर साधक को स्वप्न में उस स्थान में स्थित गुप्त निधि के दर्शन हो जाएंगे, यदि वास्तव में वहां पर कोई निधि होगी तो। इसके साथ ही साधक को यह भी ज्ञान हो जाएगा कि गुप्त निधि उस स्थान पर कितने फुट नीचे और कितनी मात्रा में है तथा उस गुप्त निधि का रक्षक कौन है ? वह रक्षक गुप्त निधि को बाहर निकालने के बदले में क्या चाहता है ? साधक को इस प्रकार की प्रत्येक बात की जानकारी स्वप्न में मिल जाएगी।

आगिया बेताल साधना मंत्र

होली की रात्रि में एकाग्रचित्त होकर साधक द्वारा इस मंत्र का जितना भी

अधिक से अधिक संभव हो, जप किया जाए। ऐसा करने पर यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो आगिया वीर बैताल,
पैठि सातवें पाताल।
लांघ अग्नि की जलती झाल,
बैठि ब्रह्मा के कपाल,
मछली चील्ह कागली गूगल हरताल।
इन बस्ता ले चीलि न,
तो माता कालिका की आन।
शब्द सांचा पिंड कांचा,
फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

मंत्र-जप के समय साधक कागली मछली के मांस का भोग लगाए और गूगल तथा हरताल की धूप दे।

यह मंत्र सिद्ध हो जाने के पश्चात यदि किसी कंकड़ को इस सिद्ध मंत्र से इक्कीस बार अभिमंत्रित करके कहीं पर मार दे तो तुरंत अग्नि प्रकट हो जाएगी।

प्रेत साधना मंत्र-1

इस मंत्र की सिद्धि हेतु जप का आरम्भ मंगलवार, अमावस्या, कृष्णपक्ष की अष्टमी, काली जयंति, तारा जयंति अथा भैरव जयंति की अर्द्धरात्रि से किया जाता है। इस मंत्र का जप नरास्थि के आसन पर बैठकर किया जाता है। श्मशान से एक मानव-हड्डी को विधि-विधानपूर्वक आमंत्रित करके लाएं और उसे किसी सुनसान शिवालय में शिवलिंग के निकट ही आसन बिछाकर उसके नीचे रख लें। इस आसन पर बैठकर साधक नित्य प्रतिदिन पांच हजार मंत्रों का जप करे। पांच अथवा सात दिन तक इसी प्रकार जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'हाम् हुम होऊं सुनसान,
सोखता मशान जागता भूत नाचता शैतान।
आसो मैरानी लाए,
भूत अंगन से पकड़ के लाए।
चोटी पकड़कर लाए,
चोटी को हम उखाड़ें।
भूत हमारे हुकुम बजाए,
न बजाए तो आसो रानी का कोड़ा खाए।
हजार दुहाई।'

यह मंत्र सिद्ध हो जाने के पश्चात् अनायास ही साधक के सामने प्रेत प्रकट हो जाएगा। साधक को प्रेत से बिल्कुल भी भयभीत नहीं होना चाहिए। प्रेत के प्रकट होने पर उसे मांस तथा मदिरा का भोग प्रदान करे और बलपूर्वक उसकी चोटी पकड़कर खींच ले। साधक को प्रेत की चोटी उखाड़ कर अपने पास सुरक्षित रख लेनी चाहिए। साथ ही प्रेत से यह भी वचन ले लेना चाहिए कि आवश्यकता पड़ने पर जब उसका स्मरण किया जाए तो वह तुरंत प्रकट हो। प्रेत साधक को यह वचन दे देगा और जब तक साधक के पास उसकी चोटी रहेगी, वह दास के समान उसके सभी कार्य-सेवा आदि करता रहेगा।

ध्यान रहे कि साधक को कभी भी प्रेत से अनैतिक कार्य नहीं कराने चाहिएं, अन्यथा धीरे-धीरे साधक का सत्व समाप्त हो जाएगा और प्रेत शक्तिशाली होता हुआ साधक पर हावी होने लगेगा।

प्रेत साधना मंत्र-2

यह मंत्र स्वयं सिद्ध है। इस मंत्र द्वारा विशेष प्रकार से साधना करने पर प्रेत के दर्शन होते हैं। इस साधना द्वारा प्रायः उस मृत व्यक्ति को प्रेत-योनि में बुलाना उपयोगी होता है, जिसकी अनायास ही मृत्यु हो गई हो और उससे उसकी धन, सम्पत्ति अथवा ऋण जैसे व्यक्तिगत विशेष जानकारियां प्राप्त करना अत्यंत आवश्यक हो। वह व्यक्ति प्रेत योनि में आकर वह सब बातें स्पष्ट रूप से बता सकता है, जो उसने अपने जीवनकाल में न बताई हों अथवा न बता सका हो। इसके अलावा वह मृतक जिसकी हत्या कर दी गई हो और उसके हत्यारे के बारे में कुछ भी न पता चल पा रहा हो, वह भी प्रेत योनि में आकर अपनी हत्या के बारे में तथा हत्यारे के बारे में बता सकता है।

यह साधना इस प्रकार की जाती है—जिस दिन किसी व्यक्ति का अंतिम संस्कार किया जाता है, उसी दिन संध्याकाल में उसकी चिता की किसी अधजली लकड़ी को चावल से आमंत्रित कर आएं। अगले दिन प्रातःकाल उस अधजली लकड़ी को जल से स्नान कराकर ले आएं।

रात्रिकाल में किसी एकांत स्थान पर उस चिता की अधजली लकड़ी पर आसन बिछाकर बैठ जाएं और इस मंत्र की एक माला का जप करें। मंत्र इस प्रकार है—

'हाल मरे आज दिखे,
जो न दिखे तो
घोर नरक कुंड में गिरे।
आन प्रेतराज की।'

इस प्रकार जप करने से उस व्यक्ति के प्रेत योनि में दर्शन हो जाएंगे, जिसकी चिता की अधजली लकड़ी साधक ने अपने आसन के नीचे रखी थी।

यदि उस प्रेत से बात करनी हो और उसके बारे में जानकारी लेनी हो तो साधक को इसी आसन पर तेरह दिन तक इस मंत्र की नित्य प्रतिदिन एक माला का जप करना चाहिए। जब वह प्रेत प्रकट हो; किंतु बात करने के लिए तैयार न हो तो मंत्र जप करते हुए अंत में 'न बोले तो हनुमानजी की आन' अथवा 'न बोले तो काली की आन' जोड़कर मंत्र-जप करे।

ऐसा करने पर प्रेत साधक से बात करेगा और साधक जो भी पूछेगा, उसका उत्तर देगा।

हाजरात का निर्माण और साधना का मंत्र

हाजरात के निर्माण की कई पद्धतियां हैं। इनमें से दो पद्धतियां विशेष रूप से प्रचलित हैं। एक पद्धति 'वामाचार' पर आधारित है, जबकि दूसरी पद्धति में जड़ी-बूटियों का प्रयोग किया जाता है। यहां पर दोनों ही पद्धतियों द्वारा हाजरात का निर्माण और उसकी साधना का मंत्र प्रस्तुत किया गया है।

वामाचार पर आधारित हाजरात-1

इस पद्धति द्वारा हाजरात निर्माण के लिए सर्वप्रथम काले नाग की दक्षिणी आंख और जिह्वा प्राप्त करें। इन दोनों को कपास में लपेट कर एक बत्ती बनाएं और नारियल का दीपक बनाकर उसमें घी भर लें। इस प्रकार का दीपक बनाकर उसे प्रज्वलित करें और किसी कांसे के थाल आदि बरतन में काजल बना लें।

इस काजल को हथेली के बीचों-बीच गोलाकार एक रुपए के सिक्के जितना बड़ा लगाएं और निम्न मंत्र का जप करें—

'काला भैंरू काला काल,
काला भेज्या चारों धाम।
काल्या काल कहां गया?
मैंने भेज्या वहां गया।
कौन कौन को दिखाए,
भगे भगाए को रूठे रूठाए को।
धरती में दबे धन-माल को,
देव दानव को चोर चौपाए को।
जहां के तहां को न बताए तो,
माता कालिका के खप्पर में जरे।
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति।'

इस मंत्र का जप करते-करते ही कज्जल-वृत्त में से प्रकाश की किरणें फूटती हुई प्रतीत होती हैं। यह हाजरात बालक अथवा बालिका ही नहीं, युवा स्नान की हुई स्त्री भी देख सकती है। प्रकाश किरण के पश्चात कज्जल-वृत्त में नाग देवता के दर्शन होते हैं। नाग देवता को करबद्ध होकर प्रणाम करना चाहिए और फिर उसके सामने अपना मंतव्य रखना चाहिए।

साधक का मंतव्य जानकर नाग देवता उस कज्जल-वृत्त में ही उड़ता हुआ प्रतीत होता है और उस स्थान पर जा पहुंचता है जिस स्थान के संबंध में प्रश्न किया गया है अथवा जिस दूरस्थ व्यक्ति के बारे में कुछ पूछा गया है, वह स्थान अथवा व्यक्ति साफ तौर पर दिखाई पड़ने लगता है।

इस प्रकार के हाजरात से किसी खोए हुए व्यक्ति की तलाश अथवा गुप्त निधि की जानकारी भी हासिल की जा सकती है।

जड़ी-बूटियों पर आधारित हाजरात-2

तुलसी के पौधे को बुधवार की संध्या में विधि-विधानपूर्वक आमंत्रित कर आएं और बृहस्पतिवार की प्रातः ले आएं। इसी प्रकार सोमवार को विधि-विधानपूर्वक गेहूं के पौधे और विल्व पत्र तथा विल्व फल को ले आएं। बृहस्पतिवार को ही पीपल की छाल भी इसी प्रकार ले आएं।

इस सभी सामग्री को इकट्ठा करके सबसे पहले विल्व पत्र और विल्व फल का रस निकाल लें और इसे चार गुणा छः इंच के पारदर्शी कांच के एक ओर सावधानी से लगा दें। यह कांच का टुकड़ा काली लकड़ी के फ्रेम में जड़ा होना चाहिए। जब कांच पर लगा यह रस सूख जाए तो पीपल की छाल को कूट-पीसकर पाउडर बना लें और उसे गेहूं के पौधे के रस में मिलाकर अच्छी तरह कांच पर उसी ओर लगाएं जिस ओर पहले रस लगाया था। इसके बाद जब यह भी सूख जाए तो अंत में तुलसी के पौधे का रस भी कांच पर लगाएं। यह तरल सूख जाने के बाद इस पर सिंदूर लगे पीपल के पत्ते को लगाकर इसे फ्रेम कर दें।

किसी शुभ दिन आंधी झाड़े की मूल को ले आएं। इसके ऊपर कपास, श्वेतार्क अथवा सामान्य आक की रुई को लपेट कर बत्ती बनाएं और गाय के शुद्ध घी में इस बत्ती को लगाकर दीपक तैयार करें।

जब किसी बालक अथवा बालिका को हाजरात दिखाना हो तो यह दीपक प्रज्वलित करके उस तैयार किए गए दर्पण के सामने रखें। देखने वाला बालक आठ-नौ वर्ष से अधिक आयु का न हो। इस बालक अथवा बालिका को दर्पण के सामने बैठाकर निरंतर दीपक और दर्पण की ओर देखने को कहें।

साधक बालक अथवा बालिका के सिर पर हाथ रखकर इस मंत्र का जप

करे। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो वीर हनुमान,
अंजनी के पूत राम के वान।
ले चलो वीर हनुमान,
धरती आकाश सकल पिंड-पिंड में।
व्याप पेड़ पहाड़ पर्वत और दशों दिशाओं को,
पवन गति से भेदकर हाल दिखाओ,
न दिखाओ तो माता जानकी की आन।'

सात से ग्यारह मंत्रों के जाप के बीच दर्पण में देखने वाले बालक को वानर के रूप में हनुमानजी के दर्शन होंगे। साधक बालक द्वारा उन्हें प्रणाम कराए। इसके पश्चात जो समस्या हो, उसका निदान पूछे। निदान मिलने पर प्रज्वलित दीपक को बुझा दे। साधक को हमेशा हनुमानजी में अपनी श्रद्धा-भक्ति रखनी चाहिए और उनकी पूजा आदि अनुराग सहित करनी चाहिए।

भविष्य दर्शन का चमत्कारी मंत्र

साधक नवरात्रों में भक्तिभाव से हनुमानजी का पूजन करे। फिर किसी हनुमान मंदिर में, जो एकांत में स्थित हो, वहां जाकर पूर्व दिशा की ओर मुख करके इस मंत्र का दस हजार की संख्या में जप करे। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो वीर हनुमान,
हाथ बताशा मुख सूं पान।
आओ हनुमान बताओ हाल,
कालरथी को चेला अंजनी को लाल।
अमुक मनुज को पीछा आगा,
भविष सब ऊंचा नीचा।
पाप-पुण्य सब चोखा-चोखा,
तुरतहि बताओ न बताओ तो,
माता अंजनी का दूध हराम।
गुरु गोरख उचारे,
अंजनी का जाया हनुमान म्हारो काज संवारे।
मेरी भगति गुरु की शक्ति मंत्र सांचा।'

नवरात्रों के बाद साधक को नित्य प्रतिदिन एक माला इस मंत्र की जपते रहना चाहिए। छः माह अथवा उससे पूर्व ही यह मंत्र चैतन्य होकर अपना चमत्कार दिखाने लगता है। धीरे-धीरे ध्यानावस्था में दर्शन के साथ ही स्पष्ट रूप से आवाजें

सुनाई देती प्रतीत होती हैं। ऐसी स्थिति आने पर साधक को अपने अंदर और अधिक मंत्र-बल संजोकर रखना चाहिए। इसके लिए साधक नित्य प्रतिदिन अधिक संख्या में मंत्र-जप करे। मंत्र-जप विषम संख्या में तीन, पांच, सात, नौ...आदि मालाओं के अनुसार ही करना उत्तम रहता है।

साधक को हनुमानजी की साधना श्रद्धा-भक्ति के साथ करनी चाहिए और हनुमानजी को सिंदूर, चोला, नारियल, ध्वज, चना, गुड़ और रोट चढ़ाना चाहिए। हनुमान जयंति, रामनवमी और मंगलवार के व्रत पूजन आदि भक्ति-भाव से करने चाहिएं। इस प्रकार जप और पूजन करने से साधक को अभीष्ट की प्राप्ति होती है।

जब कोई व्यक्ति साधक के पास अपना भविष्य पूछने के लिए आता है तो साधक उससे उसका नाम-पता आदि पूछकर हनुमान-विग्रह पर पान और बताशा चढ़ाने के लिए भेज दे। इसी बीच साधक हनुमानजी का ध्यान लगाकर मन ही मन मंत्र-जप करता रहे। साधक को इस ध्यानावस्था में ही उस व्यक्ति के भूत-भविष्य के बारे में सब कुछ ज्ञान हो जाता है। साथ ही उस व्यक्ति की समस्याएं और उनका हल भी साधक को ज्ञात हो जाता है।

मूंठ निवारण मंत्र-1

नवरात्रों में इस मंत्र का दस हजार की संख्या में जप करने पर यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'होहि होहि की लगाई,
जड जड खड खड उलट पलट,
लूका को भूका को मूंठ धुमाई।
पेड़ पर्वत पे गिराई,
सिद्ध यति की दुहाई।
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति।'

इस मंत्र की सिद्धि के समय साधक को अपने पास ही सवा पाव उड़द भी रखने चाहिएं। ये भी मंत्र सिद्ध होने के साथ ही सिद्ध हो जाते हैं। इस मंत्र की सिद्धि की यह विशेषता है कि जब साधक के आस-पास से रात्रिकाल में कोई मूंठ जाएगी तो स्वतः ही उसकी आंखें खुल जाएंगी। साथ ही साधक को मूंठ जाती साफ-साफ दिखाई भी देगी।

यदि साधक को यह मूंठ रोकनी है तो वह सिद्ध किए हुए उड़द के दानों को सिद्ध मंत्र का जप करते हुए मूंठ की ओर फेंके। साधक के इस आदेश से मूंठ आगे न बढ़ सकेगी और वहीं आस-पास के किसी वृक्ष पर गिरकर समाप्त हो जाएगी।

मूंठ निवारण मंत्र-2

लगातार सात मंगलवार को इस मंत्र का इक्कीस बार जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'काला कलुवा चौंसठ वीर,
मेरा कलुवा मारा तीर।
जहां को भेजूं वहां को जाय,
मांस मच्छी को छुअन न जाय।
अपना मारा आप ही खाय
चलत बाण मारूं उलट मूंठ मारूं।
मार मार कलुवा तेरी आस,
चार चौमुखा दीया न बाती,
जा मारूं वाही की छाती।
इतना काम मेरा न करे तो,
तुझे अपनी मां का दूध हराम।'

मंत्र-जप करते समय गुग्गुल की धूप दें और चौराहे अथवा घाट पर चार बत्ती का दीपक रख आएं। इस दीपक के साथ ही फूल और मिठाई भी रख आएं।

जो व्यक्ति मूंठ से पीड़ित हो, उसे इसके निवारण हेतु इस सिद्ध मंत्र से झाड़ना, भभूति खिलाना और इसी मंत्र से अभिमंत्रित गंडा पहनाना चाहिए। साथ ही ऐसे व्यक्ति को दीपदान भी करना चाहिए। इस प्रकार मूंठ की बाधा का निवारण हो जाता है। इस मंत्र के साधक पर मूंठ आदि का कोई प्रभाव नहीं होता।

❑❑

11

शाबर मंत्र और रोग निवारण

शाबर विद्या में अनेक रोगों के निवारण के लिए सफल और सरल मंत्र विद्यमान हैं। इन मंत्रों में लोकोपकार की अद्भुत भावना निहित है। ये मंत्र न केवल स्व-साधक का ही कल्याण करते हैं, अपितु जन-जन का कल्याण करते हैं। इन मंत्रों की शक्ति जाग्रत करने अथवा सिद्धि पाने के लिए जप-तप और संयम की आवश्यकता है और ऐसा आचरण करने से न केवल मंत्रों की सिद्धि में ही सफलता मिलती है, बल्कि यह आचरण तो जीवन के सभी क्षेत्रों के लिए सफलता का सोपान सिद्ध हो सकता है। अतएव साधक को चाहिए कि वह संयमित आचरण का पालन करे और शाबर मंत्रों की सिद्धि जनकल्याण की भावना को ध्यान में रखते हुए ही करे। यहां पर कुछ सामान्य रोग निवारण के लिए शाबर मंत्र प्रस्तुत हैं।

सिरदर्द निवारण मंत्र

होली, दीपावली अथवा किसी शुभ दिन की रात्रि में इस मंत्र का 108 बार जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ओउम नमो आदेश गुरु को। मनुज में पिंड पिंड में कपाल, कपाल में भेजा भेजे में कीड़ा। कीड़ा करे न पीड़ा, कंचन की छैनी रूपे का हथौड़ा। पिता, ईश्वर, गाड इनके श्रापे को महादेव तोड़े, शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

सिर दर्द से पीड़ित व्यक्ति को अपने सामने बैठाकर उसके मस्तक पर राख से सात रेखाएं बनाएं और प्रत्येक रेखा पर इस मंत्र का जप करें और फिर मस्तक पर फूंक मार दें। इस प्रकार मस्तक पर प्रत्येक रेखा बनाते समय मंत्रोच्चारण करें और अंत में फूंक मारें। इस प्रकार सात बार करें। मंत्रोच्चारण इतने धीमे स्वर में करना चाहिए, ताकि किसी अन्य को सुनाई न दे। शाबर मंत्रों में गोपनीयता का विशेष महत्त्व है, इस बात का ध्यान रखें। इस प्रयोग से रोगी का कष्ट दूर हो जाएगा।

दांत दर्द निवारण मंत्र

महानिशा में इस मंत्र का 108 बार जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है।

मंत्र इस प्रकार है—

'दंत अगन बांध अगेश्वर बांधू-बांधूं दर्द विकराल, दांतन माहि कीड़ा बांधूं-बांधूं लहु लुहार। बज्जर बांध वज्रधन बांधूं चावन को बलि हार, मेरा बांधा बंधे नहीं तो डाढ़ देवी की आन। नाज-नखरा मत करो चबाओ और खाओ, जो पीड़ा करो गौरा-महादेव की दुहाई।'

यह मंत्र सिद्ध हो जाने के पश्चात इस मंत्र से अभिमंत्रित करके सात लौंगों को पीड़ित व्यक्ति को चबाने के लिए कहें। फिर पीड़ित व्यक्ति के दाढ़-दांतों को नागफनी कील से सात बार अभिमंत्रित करें और इस कील को किसी बबूल अथवा अन्य मजबूत पेड़ के तने में गाड़ दें। पीड़ित व्यक्ति के दंतदर्द का निवारण होने पर उसे किसी कन्या को सवा पांच रुपए का दान देना चाहिए।

कर्ण-पीड़ा निवारण मंत्र

किसी ग्रहणकाल में इस मंत्र का 108 बार जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'वन में ब्याही वानरी सो जाया हनुमान, घण्टा बिलारी वाघी थनैली कर्णमूल सब जाय, रामचन्द्र का वचन पानीपथ हो जाय।'

इस मंत्र के सिद्ध हो जाने के पश्चात हनुमानजी का पूजन करें। पूजन में सिंदूर, गुड़, घी, ध्वजा और रोट आदि चढ़ाएं।

कर्ण-पीड़ा से व्याकुल व्यक्ति के कान से सात बार अभिमंत्रित राख की भभूत स्पर्श करें। ऐसा करने से पीड़ित व्यक्ति के दर्द का निवारण हो जाता है।

दृष्टिदोष (नजर) निवारण मंत्र-1

होली, दीपावली अथवा ग्रहणकाल की रात्रि में पंचोपचार से मां काली का पूजन करें। फिर एक माला इस मंत्र की जपें। इस प्रकार यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'काली काली महाकाली, इंद्र की बेटी ब्रह्मा की साली, तेरा वचन न जाए खाली। कचिया मशान बांध पकिया मशान बांध, घाट व घटोई बांध पीपरी को जिंद बांध। डाकिनी शाकिनी महामारी पूतना उच्चाटन डाल, जहां की तहां न पहुंचावे तो, काली कलकत्ते वाली न कहावे। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति।'

दृष्टिदोष (नजर) किसी ऐसे स्त्री अथवा पुरुष की कुवासना से उत्पन्न होता है, जो 'अच्छा' देखकर स्वयं उसे पाने की तीव्र लालसा करने लगता है; किंतु वह उसे प्राप्त नहीं का पाता। तभी उसके मन से 'आह' उत्पन्न होती है और सब अच्छा अनायास ही बुरे में बदलने लगता है।

दृष्टिदोष से सुंदर, वाचाल बच्चे, सुंदर स्त्रियां, सुखद दम्पत्ति, अच्छी चलती दुकान, अधिक दूध देने वाली गाय-भैंस आदि पीड़ित हो जाते हैं। दृष्टिदोष से पीड़ित बच्चा प्राय: चिड़चिड़ा हो जाता है और अधिक रोता है। उसे पीले और दुर्गंधयुक्त दस्त भी लग जाते हैं।

दृष्टिदोष से पीड़ित बालक को मोरपंख, बुहारी अथवा चाकू से सात बार झाड़ते हुए सिद्ध मंत्र का पाठ किया जाता है। सात बार इस प्रकार मंत्रोच्चारण करने से बालक का दृष्टिदोष समाप्त हो जाता है। इसके अलावा जिस व्यक्ति अथवा स्त्री से दृष्टिदोष हुआ है, यदि उसी के बालक से सिर पर हाथ फिरवा दिया जाए तो भी यह दृष्टिदोष दूर हो जाता है।

दृष्टिदोष (नजर) निवारण मंत्र-2

होली, दीपावली अथवा ग्रहणकाल में इस मंत्र का 108 बार जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'पानी तीनि पानी ब्रह्मा विष्णु महेश्वर, जानि शिवशक्ति आदी कुमारी। अब छार भार सब तोहि की, ताइ कहहु कतहु का लेउ थैले आउ। बालक के तोके मोके पुण्य जब होय, महादेव की जटा परे पार्वती के आंचर, जो यह बालक दुख पावे।'

❑ यह मंत्र सिद्ध होने के पश्चात मोरपंख से प्रात: सायं सात-सात बार मंत्र पढ़कर बालक को झाड़ा लगाने से उसका दृष्टिदोष समाप्त हो जाता है।

❑ दृष्टिदोष से पीड़ित बालक के नाम से तीन अंगुल लम्बा आटे का पुतला बनाकर उस पर बालक की सात नाप का कच्चे सूत का डोरा लपेट दें और उसे अग्नि में होम कर दें। यह प्रयोग करते समय सिद्ध मंत्र का जप अवश्य करते रहें। इससे बालक का दृष्टिदोष समाप्त हो जाता है।

❑ सात लाल मिर्च, एक मुट्ठी पीली सरसों, नमक की एक छोटी डली, लगभग दो ग्राम राह की धूल, सात काली मिर्च और काला धागा आदि सामग्री को एकत्रित करके दृष्टिदोष से पीड़ित बालक पर सात बार उतारें। ऐसा करने से पूर्व इस सामग्री को सिद्ध मंत्र से अभिमंत्रित करना न भूलें। फिर इस सामग्री को अग्नि में होम कर दें। बालक का दृष्टि दोष समाप्त हो जाएगा।

बालकों का सर्वबाधा दोष निवारण मंत्र

ग्रहणकाल में इस मंत्र का 108 बार जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'सत्य नाम आदेश गुरु का, आदेश पवन पानी का। नाम अनहद दुंदुभि बाजे, जहां बैठी जोगमाया साजे। चौंसठ जोगनी बावन वीर, बालक

की हरे सब्र पीर। आठों जात सब शीतला जानिए बंध, बंध बारे जात मशान भूत-प्रेत बंध। बंध छल बंध छिद्र बंध सबको मार भसमनत, सत्य नाम आदेश गुरु का।'

इस मंत्र की सिद्धि के पश्चात कन्या-भोजन कराना आवश्यक है। बालक चाहे किसी भी रोग से ग्रसित क्यों न हो, इस सिद्ध मंत्र का झाड़ा लगाने से आशातीत सफलता मिलती है। रोगी बालक को खाने-पीने की सामग्री और औषधियां भी इस मंत्र से अभिमंत्रित करके देने पर काफी लाभ मिलता है।

नेत्रपीड़ा निवारण मंत्र

नवरात्रों में प्रतिदिन इस मंत्र की एक माला का जप करना चाहिए। मंत्र-जप के समय पान का बीड़ा, लौंग और प्रसाद प्रतिदिन सात देवों की स्थापना करके उन पर अर्पित करें। प्रत्येक देवता पर पान, तीन लौंग और प्रसाद चढ़ाना चाहिए। ऐसा करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'सातों रीदा सातों भाई, सातों मिलके आंख बराई। दुहाई सातों देव की इन आंखिन में पीड़ा करे, तो धोबी की नाद चमार के चूल्हे में गिरे। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा, सत्य नाम आदेश गुरु का।'

यह मंत्र सिद्ध हो जाने के पश्चात साधक को नमक की छोटी-छोटी सात डेलियां लेनी चाहिएं। नमक की प्रत्येक डेली से मंत्रोच्चारण के साथ पीड़ाग्रस्त आंख को झाड़ना चाहिए। आंख झाड़ने के पश्चात नमक की डेलियों को घर में पानी वाले स्थान पर रख देना चाहिए। ज्यों-ज्यों पानी में ये डेलियां घुलती जाएंगी, पीड़ित व्यक्ति की पीड़ा कम होती चली जाएगी।

यह झाड़ा सुबह-शाम तीन दिन तक लगाना चाहिए। इससे आंखों का दुखना, लाल रहना, आंखों से पानी बहना और कोए बढ़ जाना जैसे नेत्र रोगों का निवारण हो जाता है।

रतौंधी रोग निवारण मंत्र

होली, दीपावली अथवा ग्रहणकाल में इस मंत्र का 108 बार जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'भाट भाटिन निसरि चली कहां जाइब? जाइब जावेऊं समुद्र पार, भाटिन कहा में बि आबेऊं, उसकी छाली बि आबेऊं। उपसमाधी कर मुड़ा अण्डा। घोसोहिलतारा सोहिलतारा राजा अजैपाल उतरत रहे, राजा अजैपाल कर कंदार पानी भरत रहे। उन्हें देखे पाव बालाऊ गेड़िया मेला उजाड़ तेके, मैं अधोमुखी ईश्वर महादेव के दुहाई येही धरी उतर जाय।'

रतौंधी रोग से ग्रस्त व्यक्ति साधक के सम्मुख बैठे और साधक सिद्ध मंत्र का मन ही मन उच्चारण करते हुए चार-पांच बार रोगी को झाड़े तो उसका यह रोग दूर हो जाता है।

कंठबेल पीड़ा निवारण मंत्र

नवरात्रों में प्रतिदिन इस मंत्र का 108 बार जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो कंठबेल महावेल, तुम दरद दियो अब हिलो। चलो तुरतहि जाओ, सातलोक सात समुंदर पार जाके डूबो। हमें बचाओ न जाओ तो बहत्तर हजार चमार की नाद में गिरो, दुहाई बाबा शंकर की गौरा-पार्वती की।'

कंठबेल से पीड़ित व्यक्ति को इस सिद्ध मंत्र के द्वारा मोर पंख अथवा बुहारी से झाड़ें। सोमवार से रविवार तक प्रतिदिन सात बार इस मंत्र से झाड़ने पर पीड़ित का दर्द और रोग जाता रहता है।

पीलिया निवारण मंत्र-1

होली, दीपावली अथवा किसी शुभ मुहूर्त्त में 1008 बार जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो आदेश गुरु को। रामचंद्र सर साधा लक्ष्मण साधा बाण, काला पीला, राता पीला, थोथा पीला, पीला पीला, चारों झड़ जो रामचंद्रजी थां पे नाम। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

पीतल की कटोरी में पानी भरकर उसे साधक मंत्रोच्चारण करते हुए चाकू से 108 बार काटे। प्रतिदिन यही क्रिया सात दिनों तक दोहराता रहे, पीलिया रोग का निवारण हो जाएगा।

पीलिया निवारण मंत्र-2

होली, दीपावली अथवा रामनवमी से इस मंत्र का जप आरम्भ करना चाहिए। हनुमानजी की मूर्ति के सम्मुख इक्कीस दिन तक प्रतिदिन एक हजार मंत्रों का जप करने से यह सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो वीखेताल असराल नाहरसिंह देव तुषादि पीलिया कू भिदाती। कोरे झोरे पीलिया रहे न न नेक निशान, जो कहीं रह जाए तो हनुमान की आन। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

मंत्र सिद्ध हो जाने के पश्चात पीलिया से ग्रस्त व्यक्ति को अपने सामने बैठाकर उसके सिर पर कांसे की कटोरी में सरसों का तेल डालकर रखें। फिर उस

तेल को कुशा से हिलाते हुए इक्कीस बार सिद्ध मंत्र का जप करें। ऐसा करने पर तेल पीला हो जाएगा। तीन दिन तक इसी प्रयोग को दोहराते रहें। पीलिया रोग का निवारण हो जाता है।

बवासीर निवारण मंत्र-1

दीपावली अथवा ग्रहणकाल में इस मंत्र का 1008 बार जप करने से यह सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'खुरासान की टीनी साइ, खूनी बादी दोनों जाइ।'

मंत्र सिद्धि के पश्चात साधक जल को इस मंत्र से अभिमंत्रित करके बवासीर से पीड़ित व्यक्ति को दे और पीड़ित व्यक्ति इस जल को शौच के जल के रूप में प्रयोग करे। इस प्रकार तीन दिन तक यह अभिमंत्रित जल प्रयोग करने से रोगी को लाभ मिलता है।

बवासीर निवारण मंत्र-2

होली, दीपावली अथवा ग्रहणकाल में इस मंत्र का 1008 बार जप करने से यह सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो नमो सिद्ध नमो, चौरासी उदर जड़ी रक्त सड़ी चूवे। मत खड़ी पड़ी तोहे देखे, लोना चमारी धूप गूगल की दी अग्यारी। जो रहे बवासीर तो हजार हराम, गुरु गोरख की शक्ति आन गौरा माई की।'

❑ यह मंत्र सिद्ध हो जाने के पश्चात इस मंत्र से अभिमंत्रित काली मिट्टी की पट्टी पेड़ू पर बांधें तथा मंत्र से अभिमंत्रित एक लाल धागा अपनी कमर से बांधें। ऐसा करने से भी बवासीर का रोग निवारण हो जाता है।

❑ बवासीर से पीड़ित व्यक्ति प्रतिदिन शौच के जल को अभिमंत्रित करके प्रयोग करे। ऐसा करने से भी बवासीर रोग का निवारण हो जाता है।

ज्वर निवारण मंत्र

महाशिवरात्रि अथवा ग्रहणकाल में इस मंत्र का जप 1008 बार करने से यह सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'मनसामेदास नवमे कपटी वसै कपाल हाव के मूले हनुमंत की आप सीसी जंग पढ़ान विचार मंत्र शांति गायत्री तामसेन देवता मोहाज़ाराजा तिजाट एक ज्वरा दो ज्वरा तिन ज्वरा चारि ज्वरा पांच ज्वरा सात ज्वरा जोर है तो राजा अजयपाल का बहै तैंतीस कोट देवता तेरे मंत्र की शक्ति से चलें। चोंसठ खंड में जाय चोर न मारे वादा न जाय क्षणे वाम क्षणे दक्षिण क्षणे आसे होर अचन सोरो स्मीररे काया विख्यात होर।'

❑ मंत्र सिद्ध होने के पश्चात एक नीम की डाली से ज्वर पीड़ित व्यक्ति को सात बार मंत्रोच्चारण करते हुए झाड़ें तो उसका रोग निवारण हो जाता है।

❑ इस सिद्ध मंत्र से अभिमंत्रित करके एक नींबू को पीड़ित व्यक्ति के सिर के ऊपर से उतारें और उसके चार टुकड़े करके चारों दिशाओं में फेंक दें। यह प्रयोग तीन बार करने से उसके रोग का निवारण हो जाता है।

मिर्गी रोग निवारण मंत्र

नवरात्रों में पहले नित्य श्रीराम और हनुमान का पूजन तथा फिर इक्कीस माला का इस मंत्र का जाप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'हल-हल सरगत मण्डिका पुड़िया श्रीराम फूके मृगीवायु सूखे ओम् ठः ठः स्वाहा।'

मंत्र सिद्धि के पश्चात इस मंत्र से ग्यारह मालाओं की होम आहुति कर देने से मंत्र अधिक शक्ति सम्पन्न हो जाता है।

❑ मिर्गी का दौरा पड़ने पर रोगी के गले में यह सिद्ध मंत्र लिखकर डाल दें और रोगी को इसी मंत्र से झाड़ भी दें। इससे उसे आशातीत लाभ मिलेगा।

❑ किसी ऊंचे पहाड़ अथवा नीचे पठार में उगे छोटे से नीम के पौधे को जड़ सहित एक झटके से उखाड़ लाएं। इस पौधे को स्नानादि कराकर पंचोपचार सहित पूजन करें। इसके बाद इस पौधे को सामने रखकर सिद्ध मंत्र की एक माला का जप करें। फिर पौधे को धूप में सुखाकर उसके पत्तों का चूर्ण बना लें।

अब रोगी को लगभग आधा ग्राम पत्तों का चूर्ण प्रातः सायं पान में रखकर खिलाएं और नीम की शेष डंडी से उसे मंत्र जप करते हुए झाड़ें। ऐसा करने से मिर्गी रोग का निवारण होता है।

अण्डकोष पीड़ा निवारण मंत्र

होली, दीपावली अथवा विजयदशमी को इस मंत्र की पांच मालाओं का जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो आदेश गुरु को जैसे कैलहु रामचंद्र के बूत ओसइ करहु राघविनि कबूत पवनपूत हनुमंत धाऊ हर हर रावन कूट मिरावन श्रवहि अण्ड खेतहि श्रवहि अण्ड विहण्ड खेतहि बांज गर्भहि श्रवहि खीत्महि श्रवहि शाप हर हर जंबीर हर हर जंबीर हर हर हर।'

मंत्र सिद्धि से पूर्व भगवान् राम का पूजन और हनुमानजी को नारियल का प्रसाद तथा सिंदूर-चोला आदि चढ़ाएं।

❑ इस मंत्र की सिद्धि के पश्चात पानी से भरे अण्डकोषों को हाथ से हल्का-हल्का मलते हुए मंत्र-जप करें। ऐसा प्रातः-सायं पांच दिन तक करते रहने

से अण्डकोष की वृद्धि और पीड़ा दूर हो जाती है।

❑ यदि इस मंत्र से अभिमंत्रित जल किसी गर्भवती स्त्री को पिला दिया जाए तो उसका गर्भपात हो जाता है। साधक को दो-तीन मास से अधिक के गर्भपतन हेतु इस मंत्र का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

❑ यदि किसी बिल में सर्प घुसा है तो उसके ऊपर इस मंत्र से अभिमंत्रित एक मिट्टी का ढेला रख देने से सर्प बिल से निकलकर चला जाता है।

❑ यदि इस मंत्र से अभिमंत्रित तीन ढेलों को किसी नवांकुरित खेत की तीन दिशाओं में फेंक दिया जाए तो वह खेत सूखने लगता है।

सर्प-दंश निवारण मंत्र-1

होली, दीपावली अथवा ग्रहणकाल में इस मंत्र का एक हजार की संख्या में जप करने से यह सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'उत्तर दिशि कारी बादरि तेहि मध्य ठाढ़ काल पुरुष
एक हाथ चक्र एक हाथ गदा चक्र मारा शत खंड जाइ
गदा मारे सातों पाताल जाइ ॐ हर हर निर्विष शिवाज्ञा।'

सर्प-दंश से पीड़ित व्यक्ति को मोरपंख के द्वारा इस सिद्ध किए गए मंत्र द्वारा झाड़ने से विष का प्रभाव समाप्त हो जाता है।

सर्प-दंश निवारण मंत्र-2

होली, दीपावली अथवा ग्रहणकाल में इस मंत्र का दस हजार की संख्या में जप करने से यह सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'नृसिंह भरी के वचनः वै जी हो निरंतर नार।'

सर्प-दंश से पीड़ित व्यक्ति को इस सिद्ध मंत्र से अभिमंत्रित करके तीन चुल्लू जल पिलाएं और तीन टोना उसके मस्तक पर मारें। ऐसा करने से विष का प्रभाव समाप्त हो जाता है।

सर्प-दंश निवारण मंत्र-3

होली, दीपावली अथवा ग्रहणकाल में इस मंत्र का दस हजार की संख्या में जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'थिरूपवन जेहि विष नाशे तेहि देखि विषधरहू
कांपे सत्पर्जा आष विषमो संदीत्वैष्ठ्यै नहिं विषइ
मंत्रे कुशल बालुगाले झवित्काल निर्विश होई।'

सर्प-दंश से पीड़ित व्यक्ति को मोरपंख के द्वारा इस सिद्ध किए गए मंत्र से झाड़ने पर विष का प्रभाव समाप्त हो जाता है।

बिच्छू के विष निवारण का मंत्र-1

ग्रहणकाल में इस मंत्र का दस हजार की संख्या में जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो आदेश गुरु को क्यों रे बीछू तें क्यों काट्यो, गोद गिरी मुख चाढ्यो। मैं काठाने पानी प्याऊं, का क्यों उतर जाय उतरे तो उतारूं। चढ़े तो उतारूं चढ़े तो मारूं, नातर गरुड़ मोर हंकारूं। लंका-सो कोट समुद्र-सी खाई, उतर रे बीछू जती हनुमंत की दुहाई। शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

इस सिद्ध मंत्र द्वारा पानी को सात बार अभिमंत्रित करके बिच्छू के काटे अंग को छूकर पानी पृथ्वी पर गिरा देने से बिच्छू के विष का निवारण हो जाता है।

बिच्छू के विष निवारण का मंत्र-2

ग्रहणकाल में इस मंत्र का दस हजार की संख्या में जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है।

**'परबत ऊपर सुरही गाइ,
ते करे गोबरे बीछी बिआइ।
छः कारी छः गोरी छः का जोता,
उतारिके बिधा बिछिठा बहिआ।
आठ गाठि नव पोर बीछी करे, अजोर बलि चलु चलाइ,
करवाऊ ईश्वर महादेव की दुहाई।
जहां गुरु के पाव सरके तहहि, गुरु के कुश कजुरी तहहि।
विष्णुपुरी निर्मा जाइकै, दुहाई महादेव गुरु के,
ठावहि ठाव बीछी पार्वती।'**

यह मंत्र सिद्ध करने के पश्चात साधक इस मंत्र से जिस किसी भी बिच्छू के काटे व्यक्ति को झाड़ देगा, उसके विष का निवारण हो जाएगा।

बिच्छू के विष निवारण का मंत्र-3

ग्रहणकाल में इस मंत्र का दस हजार की संख्या में जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

**'सुरही कारी गाइ गाइ की चमरी पूछी,
ते करे गोबरे बिछी।
बिआइ बीछी तोरे कई जाति, गौरावर्ण अठारह जाति।
छः कारी छः पीअरी छः भूमाधारी,
रत्न पवारी छः छः कुं कुं हुं छारि उतरू बीछी।**

हाड़ हाड़ पोर पोर ते कस मारे,
नीलकंठ गरमोर महादेव की दुहाई।
गौरा पार्वती की दुहाई।
अनीत टेहरी शडार वन छाइ, उतरहि बीछो हनुमंत की आज्ञा।
दुहाई हनुमंत की।'

यह मंत्र सिद्ध करने के पश्चात इसके द्वारा बिच्छू काटे व्यक्ति को जब झाड़ दिया जाता है तो उसके विष का निवारण हो जाता है।

कुत्ते के विष निवारण का मंत्र-1

दीपावली अथवा ग्रहणकाल में इस मंत्र का दस हजार की संख्या में जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

**'ॐ नमो कामरूदेस कामाच्छा देवी, जहां बसे इस्माइल जोगी।
इस्माइल जोगी ने पाली कुत्ती,
दश काली दश कावरी दश पीली दश लाल।
इसको विष हनुमान हरे, रक्षा करे गुरु गोरखवाल।
शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'**

यह मंत्र सिद्ध करने के पश्चात इस मंत्र से अभिमंत्रित विभूति कुत्ते के काटे से पीड़ित व्यक्ति को खिला देने से कुत्ते के विष का समूल निवारण हो जाता है।

कुत्ते के विष निवारण का मंत्र-2

दीपावली अथवा ग्रहणकाल में इस मंत्र का दस हजार की संख्या में जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

**'प्रकट कूकरा विकट वाट, विष कू झाडूं वारू वाट।
कोरा करवाइ ब्रत नइया,
गौरा ढाले ईश्वर न्याय
कुत्ता को विष उतर जाय।
दुहाई महादेव पार्वती की, फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'**

यह मंत्र सिद्ध करने के पश्चात सर्वप्रथम कुम्हार के चाक की मिट्टी लाकर उसकी सात गोलियां बनाएं। इन गोलियों को सात-सात बार इस सिद्ध मंत्र से अभिमंत्रित करें। तत्पश्चात इन अभिमंत्रित गोलियों में से तीन गोलियां कुत्ते के काटे व्यक्ति को दें और चार गोलियां अपने पास रखें। इन गोलियों के टुकड़े-टुकड़े करके चारों ओर बिखेर दें और पीड़ित व्यक्ति के पास वाली गोलियां कुत्ते के दंशित स्थान पर बांध दें। ऐसा करने से पागल कुत्ते के द्वारा काटे व्यक्ति का विष निवारण हो जाता है।

कुत्ते के विष निवारण का मंत्र-3

दीपावली अथवा ग्रहणकाल में इस मंत्र का दस हजार की संख्या में जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'कारी कुत्ती विविलारी धौला कुत्ता कलोर अमुक
काटा कूकर वार धयल्यायु।'

इस मंत्र में प्रयुक्त हुए शब्द 'अमुक' के स्थान पर उस व्यक्ति के नाम का उच्चारण करें जिसे कुत्ते ने काटा है।

यह मंत्र सिद्ध हो जाने के पश्चात कुम्हार के चाक की मिट्टी लाएं। उसे इस सिद्ध मंत्र से अभिमंत्रित करके और मंत्रोच्चारण करते हुए कुत्ते के काटे स्थान पर लगाकर झाड़ दें। यदि झाड़ते समय दंशित स्थान से रोएं निकलने लगें तो समझना चाहिए कि कुत्ते के विष का निवारण हो रहा है।

सर्व पीड़ा निवारण मंत्र

नवरात्रों में नित्य प्रतिदिन इस मंत्र का दीप जलाकर ग्यारह बार जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

'रोम-रोम की रक्षा रामजी करें, हाड़न की रक्षा हरजी करें।
टकान की रक्षा टीकमजी करें, पिंडारी की रक्षा मोहनजी करें।
गोड़न की रक्षा गोवर्धनजी करें, जांघन की रक्षा जनार्दनजी करें।
इंद्री की रक्षा इंद्रजी करें, कमर की रक्षा केशवजी करें।
पेट की रक्षा पुरुषोत्तमजी करें।
खंवान की रक्षा गरुणजी करें।
कंठ की रक्षा श्रीकृष्णजी करें, ओढ़न की रक्षा हनुमंतजी करें।
जिह्वा की रक्षा पार्वतीजी करें, नाक की रक्षा नरसिंहजी करें।
नेत्रों की रक्षा नारायणजी करें,
ब्रह्मांड की रक्षा श्री सकलदेव शास्त्र सहाय करें।
चोटी की रक्षा चतुर्भुज जी करें,
आकाश की रक्षा ज्योतिस्वरूपजी करें।
रैन की रक्षा चंद्रमाजी करें, दिन की रक्षा सूर्यनारायणजी करें,
धरती माता सदा रक्षा करवों करें।
अनहद नाद बाजे घनतृण प्राल जंजालभय व्यापेन पीरा अंडे,
सो ब्रह्मांड परस डौले खंडे-खंडे।
झल होय तो झल को मारूं, घात होय तो घात को मारूं,
छलछिद्र होय तो छलछिद्र को मारूं।

जल में थल में फूल में दृढ़ कर बांधों,
पालबीज जमावन दे गया, श्री ब्रह्मा विष्णु मुरार तलझड़ै पिंडवा पड़े।
जहां बैठे बाबा हनुमान हुंकार करें,
हाट होत काया जामे ब्रह्मांड समाया राख-राख,
हो निरंजन सरनाई तेरी आल जंजाल।
भय व्यापै न पीड़ा चौकी फिर गए बावना,
पीरा इतके रामरक्षा सत्य करें।
भाषी सतनाम सत्यवीर सत्यनाम आदेश गुरु का,
शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा,
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।'

यह मंत्र सिद्ध करने के पश्चात साधक इस मंत्र का उच्चारण करते हुए किसी भी प्रकार की व्याधि और पीड़ा से व्याकुल व्यक्ति को झाड़ देगा तो पीड़ित व्यक्ति को आशातीत आराम मिलेगा।

यह मंत्र विशेष रूप से बालकों की हर प्रकार के पीड़ा के निवारण के लिए है; किंतु इसका प्रयोग बड़ों के लिए करने पर उन्हें भी आश्चर्यजनक ढंग से आराम मिलता है। किसी अंग विशेष में अत्यधिक पीड़ा होने पर विभूत को इस मंत्र से अभिमंत्रित करके उस अंग पर मंलने से पीड़ा से मुक्ति मिल जाती है।
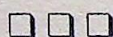
❑❑❑

महाशक्तिशाली सिद्ध

शाबर मंत्र

अपुत्रे लभते पुत्रं, धनार्थी लभते धनम ॥
सुखार्थी सुख माप्नोति शाबर मन्त्रस्य प्रसादतः ॥

अर्थात शाबर मन्त्रों के प्रयोग से पुत्रहीन को पुत्र; धन चाहने वालों को धन तथा सुख चाहने वालों को सुख प्राप्त होता है।

भारतवर्ष की अनेक चमत्कारिक विद्याओं में से एक विद्या है-सिद्ध शाबर मंत्र। शाबर मंत्र कभी निष्फल नहीं जाते, शाबर मंत्र अपने आप में एक शक्ति है जिसके प्रभाव अत्यन्त चमत्कारिक होते हैं। जहां शास्त्रीय मंत्रों का उच्चारण एवं कार्यान्वित अत्यन्त कठिन होता है; वहीं शाबर मंत्रों की भाषा अत्यन्त सरल एवं प्रभाव चमत्कारिक होते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक सैकड़ों सिद्ध एवं चमत्कारिक प्रभावों से युक्त शाबर मंत्रों का संग्रह है, जिनकी अचूक क्षमता का प्रयोग कर आप भी सभी सुखों से परिपूर्ण हो सकते हैं।

50/-

पवन पॉकेट बुक्स